

निश्चिल जयंती विशेषांक

अप्रैल 2009

मूल्य : 24/-

सुख-तंत्र-रस्यम्

विज्ञान

भाग्य एवं कर्म का संयोग
सुवर्ण गौरी साधना

षोडश घोणिनी
विंध्यवासिनी जयत्

नववर्ष २०६६ मंगलमय हो

छः सिद्धिदायक अंत्र - आपके जीवन उत्तम होते

A Monthly Journal





COLLECTION OF VARIOUS

- > HINDUISM SCRIPTURES
- > HINDU COMICS
- > AYURVEDA
- > MAGZINES

FIND ALL AT [HTTPS://DSC.GG/DHARMA](https://dsc.gg/dharma)

Made with



By

Avinash/Shashi

[creator of
hinduism
server]

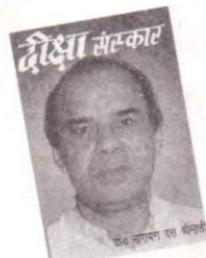
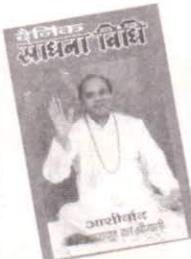
ज्ञान और चेतना की अनमोल कृतियां

पूज्य गुरुदेव 'डॉ. नारायण दत श्रीमाली जी'

द्वारा रचित ज्ञान की गरिमा से युक्त
सम्पूर्ण जीवन के जगमगाने वाली
अनमोल कृतियां



मूलाधार भे भहभार तथा	150/-
फिल द्वूक ऊर्ही पायल ब्बनाई	150/-
गुरु गीता	150/-
ज्योतिष औक आल निर्णय	150/-
हक्तकेब्बा विज्ञान औक पंचागुली ज्ञाना	120/-
निक्खिलेश्वरवानन्द ऋतवन	120/-
विश्व थी श्रेष्ठ ढीक्षाएं	96/-
ध्यान धावणा औक भमाधि	96/-
निक्खिलेश्वरवानन्द भहभनाम	96/-
विश्व थी औकिण ज्ञानाएं	96/-
श्री निक्खिलेश्वर शतठम्	75/-
लक्ष्मी प्राप्ति	60/-
अमृत षुंद	60/-
निक्खिलेश्वरवानन्द चिन्तन	40/-
निक्खिलेश्वरवानन्द वहक्ष्य	40/-
विज्ञान था योगी	40/-
प्रत्यक्ष हनुमान विज्ञि	40/-
मातंगी ज्ञाना	40/-
भैवव ज्ञाना	40/-
स्वर्णिम ज्ञाना भूत्र	40/-



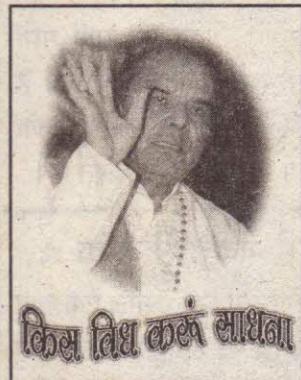
→ → → → → → → → → → सम्पर्क :- ← ← ← ← ← ← ← ← ← ← ← ←
मंत्र-यंत्र-तंत्र विज्ञान, डॉ. श्रीमाली मार्ग, हाईकोर्ट कालोनी, जोधपुर (राज.)

फोन : 0291-2432209, 2433623, फैक्स : 0291-2432010

आनो भ्रदा: क्रतवो यन्तु विश्वतः
मानव जीवन की सर्वतोन्मुखी उन्नति, प्रगति और भारतीय गूढ़ विद्याओं से समन्वित मासिक पत्रिका

श्री त्यक्त्वा यज्ञकाश

॥ॐ पद्मस्तकवाय बास्यत्यथाय युरुभ्यो वदमः ॥



लिखा दिखा कला साथी

सद्गुरुदेव

सद्गुरु प्रवचन

स्तम्भ

शिष्य धर्म

गुरुवाणी

नक्षत्रों की वाणी

मैं समय हूँ

वराहमिहिर

इस मास जोधपुर में

एक दृष्टि में

वर्ष 29 अंक 04
अप्रैल 2009 पृष्ठ 88



साधना

आपदा उद्धारक	
बटुक भैरव साधना	38
उन्मत भैरव साधना	39
काल भैरव साधना	40
साधना	50
गुप्त नवरात्रि की विशेष	
पांच तांत्रोक्त	
महाविद्या साधनाएं	41
सुवर्ण गौरी साधना	46
सिद्धिदायक छः यंत्र -	
ऋण मोचन यंत्र	56
व्यवसाय लाभ यंत्र	57
शत्रु विद्वेषण यंत्र	57
अनंग यंत्र	57
लक्ष्मी विनायक यंत्र	58
महामृत्युंजय कवच यंत्र	59
घोडश योगिनी साधना	67
भगवती विंध्वासिनी	
साधना	75
Parad Ganpati	
Sadhana	82
Amazing	
Kamla Yantra	83

दीक्षा

अक्षय कर्मसिद्धि	
भाग्योदय दीक्षा	49



विशेष

वेदों में मानव शरीर	
- शरीर ही देवभूमि	
- शरीर ही यज्ञशाला	
- शरीर ही रथ	23

राम नवमीं पर विशेष -

भगवान श्री राम

का जीवन चरित्र

गौतम बुद्ध द्वारा - शाश्वत

सौन्दर्य विवेचन

क्रिया योग

प्रकाशक एवं स्वामित्व.

प्रेरक संस्थापक

डॉ. नारायणदत्त श्रीमाली

(परमहंस श्वामी निष्ठिलोऽवरानं जी)

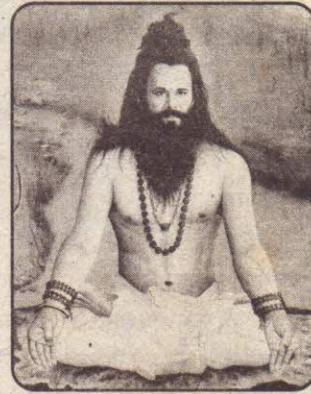
प्रधान सम्पादक

श्री नन्द किशोर श्रीमाली

कार्यवाहक सम्पादक

श्री कैलाशचन्द्र श्रीमाली

श्री अरविन्द श्रीमाली



:: सम्पर्क ::

सिद्धाश्रम, 306 कोहाट एन्कलेव, पीतमपुरा, दिल्ली-110034, फोन: 011-27352248, टेली फैक्स: 011-27356700
मंत्र-तंत्र-यंत्र विज्ञान, डॉ. श्रीमाली मार्ग, हाईकोट कॉलेजी, जोधपुर - 342031 (राज.) फोन: 0291-2432209, टेली फैक्स: 0291-2432010
WWW address - <http://www.siddhashram.org> E-mail add. - mtyv@siddhashram.org

मूल्य (भारत में)

एक प्रति: 24/-

वार्षिक: 258/-

नियम

पत्रिका में प्रकाशित सभी रचनाओं का अधिकार पत्रिका का है। इस 'मंत्र-तंत्र-यंत्र विज्ञान' पत्रिका में प्रकाशित लेखों से सम्पादक का सहमत होना अनिवार्य नहीं है। तर्क—कुतर्क करने वाले पाठक पत्रिका में प्रकाशित पूरी सामग्री को गत्य समझें। किसी नाम, स्थान या घटना का किसी से कोई सम्बन्ध नहीं है, यदि कोई घटना, नाम या तथ्य मिल जाय, तो उसे मात्र संयोग समझें। पत्रिका के लेखक धूमकेड़ साधु—संत होते हैं, अतः उनके पते आदि के बारे में कुछ भी अन्य जानकारी देना सम्भव नहीं होगा। पत्रिका में प्रकाशित किसी भी लेख या सामग्री के बारे में वाद—विवाद या तर्क मान्य नहीं होगा और न ही इसके लिए लेखक, प्रकाशक, मुद्रक या सम्पादक जिम्मेवार होंगे। किसी भी सम्पादक को किसी भी प्रकार का पारिश्रमिक नहीं दिया जाता। किसी भी प्रकार के वाद—विवाद में जोधपुर—न्यायालय ही मान्य होगा। पत्रिका में प्रकाशित किसी भी सामग्री को साधक या पाठक कहीं से भी प्राप्त कर सकते हैं। पत्रिका कार्यालय से मंगवाने पर हम अपनी तरफ से प्रामाणिक और सही सामग्री अथवा यंत्र भेजते हैं, पर किर भी उसके बाद में, असली या नकली के बारे में अथवा प्रभाव होने या न होने के बारे में हमारी जिम्मेवारी नहीं होगी। पाठक अपने विश्वास पर ही ऐसी सामग्री पत्रिका कार्यालय से मंगवायें। सामग्री के मूल्य पर तर्क या वाद—विवाद मान्य नहीं होगा। पत्रिका का वार्षिक शुल्क वर्तमान में 258/- है, पर यदि किसी विशेष एवं अपरिहार्य कारणों से पत्रिका को त्रैमासिक या बंद करना पड़े, तो जितने भी अंक आपको प्राप्त हो चुके हैं, उसी में वार्षिक सदस्यता अथवा दो वर्ष, तीन वर्ष या पंचवर्षीय सदस्यता को पूर्ण समझें, इसमें किसी भी प्रकार की आपत्ति या आलोचना किसी भी रूप में स्वीकार नहीं होगी। पत्रिका में प्रकाशित किसी भी साधना में सफलता—असफलता, हानि—लाभ की जिम्मेवारी साधक की स्वयं की होगी तथा साधक कोई भी ऐसी उपासना, जप या मंत्र प्रयोग न करें जो नैतिक, सामाजिक एवं कानूनी नियमों के विपरीत हों। पत्रिका में प्रकाशित लेखों के लेखक योगी या संन्यासी लेखकों के विचार मात्र होते हैं, उन पर भाषा का आवरण पत्रिका के कर्मचारियों की तरफ से होता है। पाठकों की मांग पर इस अंक में पत्रिका के पिछले लेखों का भी ज्यों का त्यों समावेश किया गया है, जिससे कि नवीन पाठक लाभ उठा सकें। साधक या लेखक अपने प्रामाणिक अनुभवों के आधार पर जो मंत्र, तंत्र या यंत्र (भले ही वे शास्त्रीय व्याख्या के इतर हों) बताते हैं, वे ही दे देते हैं, अतः इस सम्बन्ध में आलोचना करना व्यर्थ है। आवरण पृष्ठ पर या अन्दर जो भी फोटो प्रकाशित होते हैं, इस सम्बन्ध में सारी जिम्मेवारी फोटो भेजने वाले फोटोग्राफर अथवा आर्टिस्ट की होगी। दीक्षा प्राप्त करने का तात्पर्य यह नहीं है, कि साधक उससे सम्बन्धित लाभ तुरन्त प्राप्त कर सकें, यह तो धीमी और सतत प्रक्रिया है, अतः पूर्ण श्रद्धा और विश्वास के साथ ही दीक्षा प्राप्त करें। इस सम्बन्ध में किसी प्रकार की कोई भी आपत्ति या आलोचना स्वीकार्य नहीं होगी। गुरुदेव या पत्रिका परिवार इस सम्बन्ध में किसी भी प्रकार की जिम्मेवारी वहन नहीं करेंगे।

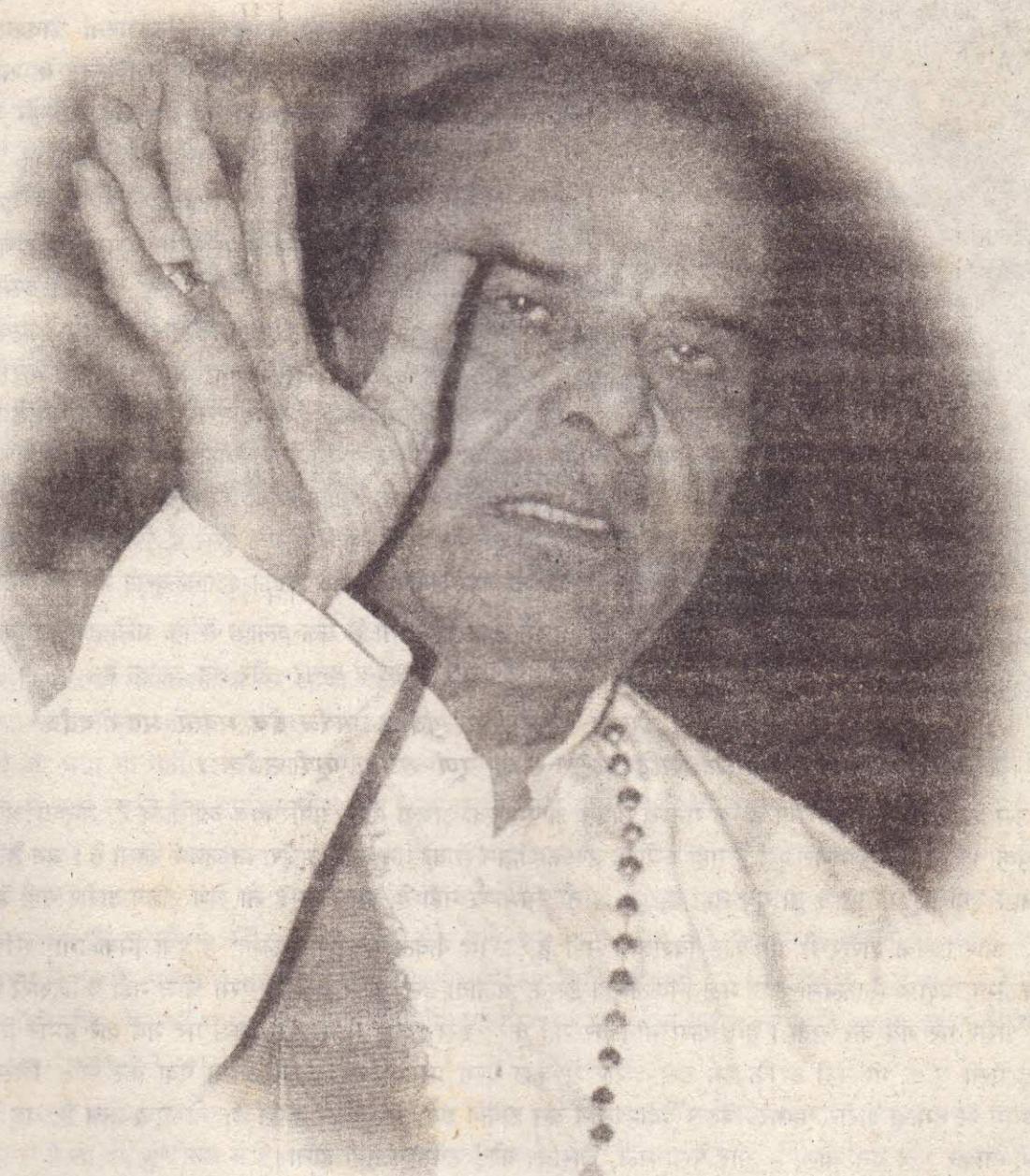
☆ प्रार्थना ☆

भूले थे संसार में, माया के संज आय।
सतगुरु रह बताइया, केरि मिलै तिहि जाय॥
सांच बराबर तप नहीं, झूठ बराबर पाप।
जाके हिरदे सांच है, ताके हिरदे आप॥

इस संसार में आकर माया, मोह के चक्कर में सबकुछ भूल गये और जब गुरु मिले तो तब उन्होंने जीवन का सही मार्ग बताया। शास्त्र कहते हैं कि सत्य के बराबर कोई तप नहीं है और असत्य के समान कोई पाप नहीं है। वास्तव में तो जिनके हृदय में सत्य और श्रद्धा है वहां आप स्वयं निवास करते हैं।

☆ दृढ़ इच्छाशक्ति दिलाती है संकट से मुक्ति ☆

एक आदमी हमेशा मुसीबों से विरा रहता था। उसका एक काम ठीक होता तो दूसरा बिगड़ जाता। उसे सुधारने जाता तो तीसरे काम में पैच आ जाता। कभी परिवार में कोई संकट तो कभी नौकरी में। उनसे पार पाता तो कोई और समस्या मुंह बाए खड़ी रहती। वह यह सोचकर अत्यधिक परेशान हो गया कि मेरे साथ ही ऐसा होता है और ऐसा कब तक चलता रहेगा? क्या जीवन में कभी सुख-संतोष न सीब नहीं होगा? वह इतना निराश हो गया कि उसने आत्महत्या तक करने का प्रयास किया, किन्तु किस्मत ने वहां भी धोखा दिए। वह बच गया और परिवार व इष्ट मित्रों के कोप का शिकार हुआ। उसे जिम्मेदारियों से भागने वाला कहकर सभी ने धिक्कारा। उसने सोचा कि स्थान बदलने से शायद उसका भाग्य भी बदल जाए। उसने कई स्थान देखे और उसमें से एक छोटे-से-कस्बे को पसंद किया। वहां जाने के लिए उसने व उसके परिवार ने तैयारी कर ली। सामान लेकर जैसे ही उसने घर से बाहर कदम रखा तो देख एक महिला सामने रास्ता रोके खड़ी है। उसने पूछा - क्या चाहती हो? महिला ने कहा - तुम्हारा साथ। आदमी ने जवाब दिया - किन्तु मैं तो शहर छोड़ रहा हूं। महिला ने मुस्कुराकर कहा - तो क्या हुआ? तुम जहां जाओगे, मैं वहीं तुम्हारे साथ जाऊंगी। आदमी ने इल्लाकर उसका परिचय पूछा तो वह बोली - मैं तुम्हारी किस्मत हूं। यह सुनकर उस आदमी का दिल बैठ गया। उसने कहा - जब तुम कहीं भी मेरा साथ छोड़ने के लिए तैयार नहीं हो तो दूसरे स्थान पर जाकर भी क्या करूँगा? उस आदमी ने फैसला कर लिया कि यहीं रहकर अपनी किस्मत बदलूँगा। निश्चय ही दृढ़ता रंग लाई और उसकी जी तोड़ मेहनत से सफलता उसके कदम चूमने लगी। अब वह भी प्रसन्न था और परिवार भी। उल्लास के इस माहौल में कष्ट आता भी तो उसका त्वरित समाधान कर लिया जाता। दृढ़ इच्छा शक्ति से ही जीवन में सुख आता है।



ਵਿਨ੍ਦੁ ਵਿਦੁ ਕਹਾਂ ਲਾਈਆ



मनुष्य अपनी जीवन सत्ता में कितना विस्तार कर सकता है और अपने रूप को कैसे विराट बना सकता है, उसके लिए उसे सूर्य विज्ञान के मूल स्वरूप को अपने भीतर उतारना आवश्यक है। सूर्य विज्ञान के सिद्धान्तों को नवीन चिन्तन के साथ स्पष्ट करता हुआ सद्गुरुदेव का यह संदेश उन्हीं की दिव्यवाणी में -

ब्रह्म द्वारा वेदों की रचना से पहले एक महान ग्रन्थ की रचना हुई और उसे ब्रह्मसार कहा गया, और वेदों से भी पहले ब्रह्मोपनिषद की रचना हुई है। इसका एक-एक अक्षर अपने आपमें एक-एक मंत्र है एक-एक ग्रन्थ है, और उसके चार हजार श्लोक करोड़ों श्लोकों के बराबर हैं। मंगर उसकी विशेषता यह है कि उसके चालीस अध्यायों में, चालीस परिच्छेदों में प्रत्येक कें प्रारंभ में एक श्लोक है जो कॉमन है, पहले अध्याय में भी वही श्लोक है, बाकी श्लोक दूसरे हैं, फिर दूसरे अध्याय में भी वही श्लोक है और बाकी श्लोक दूसरे हैं।

ऐसी क्या विशेषता है उस श्लोक में कि प्रत्येक अध्याय में उस श्लोक को ब्रह्म को देना पड़ा? और वह श्लोक है-

गुरुतं वदेतं भवतं वदैवः, सर्वत्र देव भवतां भवतं वदैवः:

ज्ञानरोत्थानां सिद्धि सदैव रूप, पूर्ण सदैवः पूर्ण सदैवः ।

उस श्लोक में बताया गया है कि मनुष्य अपने आपमें एक अधूरा और अपरिपक्व व्यक्तित्व है, मनुष्य अपने आपको पूर्ण कहता है मगर पूर्ण है नहीं क्योंकि उसके जीवन में कोई अधूरापन जरूर रहता है। धन है तो प्रतिष्ठा नहीं है, प्रतिष्ठा है तो पुत्र नहीं है, पुत्र है तो सौभाग्य नहीं है, सौभाग्य है तो रोग रहित शरीर नहीं है।

...और उसके शरीर में भी कोई विशेषता नहीं है, उसमें केवल मांस निकलेगा, हड्डियां निकलेंगी, रुधिर निकलेगा, पेशाब निकलेगा और मल निकलेगा। इसके अलावा इस शरीर में कोई ऐसी चीज नहीं है जिससे कि हम शरीर पर गर्व कर सकें। हम किस बात पर गर्व करें? इस शरीर में क्या है जिस पर गर्व करें हमारे लिए कोई ऐसी युक्ति भी नहीं है कि हम इस शरीर में कुछ ऐसा प्रभाव, कुछ ऐसी आभा पैदा कर सकें जिसके माध्यम से हमारा शरीर, हमारा चेहरा दैदीप्यमान बन सके। हम जो भोजन करते हैं, जो शुद्ध अन्न है, वह भी आगे जाकर मल बन जाता है और ऐसा मल, जिसका कोई उपयोग नहीं होता।

हलवा खाएं तो भी उसका अंत मल ही है, धीं खाएं तो भी उसका अंत मल ही है, और चाहे रोटी खाएं तो भी उसका अंत मल ही है। शरीर में ऐसी क्रिया ही नहीं है जो शरीर को दिव्यता और चेतना युक्त बना सके क्योंकि शरीर अपने आपमें व्यर्थ है, खोखला है। एक चलती फिरती देह है और उस देह में उच्च कोटि का ज्ञान, उच्च कोटि की चेतना, उच्च कोटि का चिन्तन समाहित नहीं हो सकता क्योंकि इस शरीर में कुछ है ही नहीं।

...और इस शरीर के भीतर झांक कर भी देखा, इस शरीर को चीर फाइकर भी देखा, इन आंखों को देखा, हाथ को देखा, टांग को देखा और ऑपरेशन करके भी देखा, उसमें कोई विशेषता मिली ही नहीं, और हम यदि कुछ भी लें या खाएं-पीएं, तो उसके बाद भी शरीर में किसी प्रकार की कोई विशेषता उत्पन्न नहीं होती, चेहरे पर तेजस्विता प्राप्त नहीं हो सकती, दैदीप्यमानता नहीं आ सकती, एक उच्च व्यक्तित्व नहीं बन सकता, एक अपूर्वता नहीं बन सकती चाहे हम कुछ भी खा लें या कर लें।

क्यों नहीं बन सकती?

फिर मनुष्य शरीर हमने धारण क्यों किया?

इसलिए ब्रह्मा पहले श्लोक की आधी पंक्ति में कहते हैं
मनुष्य शरीर अपने आप में एक ऐसा व्यर्थ शरीर है कि उसको हम किसी को चढ़ा भी नहीं सकते, अर्पण भी नहीं कर सकते। न गुरु के चरणों में चढ़ा सकते हैं, न देवताओं के चरणों में चढ़ा सकते हैं। अपवित्र चीज नहीं चढ़ा सकते, मल युक्त चीज नहीं चढ़ा सकते।

कोई पुष्प मल में पड़ा हुआ हो तो उसको उठाकर भगवान के चरणों में नहीं चढ़ा सकते किसी देवता को अर्पित नहीं कर सकते, गुरु को समर्पित नहीं कर सकते। यदि एक हिसाब से सड़ा हुआ पुष्प है, या फूल है, उसे भगवान के चरणों में नहीं चढ़ा सकते। और यदि हम अपने शरीर को भगवान के चरणों में चढ़ाएं कि भगवान! मैं आपके चरणों में समर्पित हूं तो शरीर तो खुद अपवित्र है, जिसमें मल और मूत्र के अलावा कुछ ही नहीं। ऐसे गंदे शरीर को भगवान के शरीर में कैसे चढ़ा सकते हैं और ऐसे शरीर को अपने गुरु के चरणों में भी कैसे चढ़ा सकते हैं?

और उस श्लोक की दूसरी पंक्ति में कहा है कि जीवन का सारभूत और देवताओं का सारभूत तथ्य अगर किसी में है तो वह गुरु रूप में है क्योंकि गुरु प्राणमय कोष में होता है आत्ममय कोष में होता है और सस कोटि में होता है। उसको गुरु कहते हैं। वह केवल देह रूप में नहीं होता उसमें ज्ञान होता है, चेतना होती है, उसकी कुण्डलिनी जाग्रत होती है, सहस्रार जाग्रत होता है, एक उच्च जीवन का चिंतन होता है और वह बिना खाए पिए, बिना मल मूत्र विसर्जित किए भी वह सैकड़ों वर्ष व्यतीत कर सकता है।

न उसे भूख लगती है न प्यास लगती है न उसे मूत्र त्याग करने की जरूरत होती है और न मल विसर्जित



करने की ज़रूरत होती है। जब भूख प्यास नहीं लगेगी, जब वह कुछ खाएगा पीएगा ही नहीं तो उसे मल मूत्र विसर्जिन की भी ज़रूरत नहीं होती। इसलिए उच्च कोटि के साधक न भोजन करते हैं, न पानी पीते हैं, और न मल मूत्र विसर्जन करते हैं, और जमीन से चार फुट पांच फुट ऊपर आसन लगाकर बैठते हैं और साधना करते हैं। तो ब्रह्मा ने कहा वे भी मनुष्य ही हैं जो इस प्रकार की क्रिया करते हैं, और बाकी लोग भी मनुष्य ही हैं जो इस प्रकार की क्रिया नहीं कर सकते, जो मल युक्त हैं, जो गंदगी युक्त हैं।

तो इस जगह से उस जगह छलांग लगाने की कौन सी क्रिया है?

कैसे हम उच्च कोटि का जीवन प्राप्त कर सकते हैं?

अगर हम इस जीवन में साधारण मनुष्य ही बने रहे तो फिर हमारे जीवन में वह स्थिति कब आएगी जब जमीन से पांच फीट ऊपर बैठकर हम साधना कर सकें।

जमीन से ऊपर उठकर साधना करने की क्या आवश्यकता है?

आवश्यकता इसलिए है कि जमीन का कोई ऐसा भाग नहीं है जहां पर रुधिर नहीं बहा हो। सैकड़ों लोग कटे होंगे, मरे होंगे, सैकड़ों शव बिखरे होंगे, सैकड़ों सभ्यताएं नष्ट हो गई होंगी। हड्डियां बना, मोहनजोदहों बना, नष्ट हुए, सैकड़ों बार प्रलय आया और एक-एक इंच धरती, धरती का एक-एक कण रुधिर से सना हुआ है। अपवित्र जमीन है, अपवित्र भूमि है और उस भूमि पर बैठ कर साधना कैसे हो सकती है?

और वहां बैठ कर साधनाओं में सिद्धि कैसे प्राप्त हो सकती है?

दो कमियां हमारे जीवन में आईं। एक कमी तो यह कि पृथ्वी खून से रंगी हुई है..... अगर दिल्ली को ही देण्ये तो सैकड़ों उस पर अत्याचार हुए। सिंकंदर आया तो उसने कल्ले आम किया अहमद शाह आया तो उसने कल्ले आम किया, अंग्रेज आए तो उन्होंने गोलियों से भून ढाला और उस दिल्ली की एक-एक गली, एक-एक इंट खूनसे सनी हुई है। पृथ्वी की कोई जगह नहीं जहां पर खून नहीं बहा हो या जो पूर्णतः पवित्र हो। कहीं पर मल विसर्जन हुआ होगा, कहीं पर मूत्र विसर्जन हुआ होगा। पवित्र कहीं पर भी धरती है ही नहीं। और बिना पवित्रता के इनी उच्च कोटि की साधनाएं संपन्न हो ही नहीं सकती। और अगर साधनाएं संपन्न नहीं हो सकती तो फिर जीवन अपने आप में व्यर्थ है। फिर तो सिर्फ एक मल मूत्र युक्त जीवन है।

-ऐसा जीवन क्या काम का?

-इस जीवन के माध्यम से हम सिद्धाश्रम कैसे पहुंच सकते हैं?

-उसके माध्यम से हजारों वर्षों की आयु प्राप्त योगियों के दर्शन कैसे कर सकते हैं?

-और अगर ऐसा नहीं कर पाएंगे तो इस जीवन का अर्थ क्या?

-फिर जीवन का मतलब क्या है?

-क्या इसी प्रकार घिसट करके जीवन को समाप्त कर देना ही जीवन है?

-ऐसे ही जीवन बरबाद हो जाना है?

ऐसे तो कई पीढ़ियों के जीवन बरबाद हो चुके हैं, और आज उनके जीवन का नाम निशान भी नहीं है। आपको अपने दादा

परदादा तक का तो नाम शायद याद हो मगर उससे पहले तो आपको नाम ही मालूम नहीं कि कौन मेरे परदादा के पिता थे उन्होंने क्या कार्य किए? केवल जीवन घसीटते हुए उन्होंने बिता दिया।

अगर आप भी ऐसा ही जीवन व्यतीत करना चाहते हैं तो फिर आपको जीवन में गुरु की जरूरत है ही नहीं, फिर जीवन का मतलब ही नहीं है। शरीर पर साबुन लगाने से जीवन स्वच्छ नहीं बन सकता, लक्स लगाने से शरीर पवित्र नहीं बन सकता, यदि आप चार दिन स्नान नहीं करें तो शरीर से बदबू आने लग जाएगी। कोई पास खड़ा होगा तो कहेगा क्या बात है, तुम्हारे शरीर से इतनी बदबू आ रही है, स्नान नहीं किया क्या?

यह शरीर कितना आवित्र है कि चार दिन भी बाहर के वातावरण को झेल नहीं सकता और हम कल्पना करते हैं कि भगवान कृष्ण के शरीर से अष्टगंध प्रवाहित होती थी। सुगंध तब प्रवाहित होती थी जब गंध या दुर्गंध मिटती है। राम के शरीर से सुगंध प्रवाहित होती थी, उच्च कोटि के योगियों के शरीर से अष्ट गंध प्रवाहित होती है तो हममें क्या कमी है कि हमारे शरीर से अष्टगंध प्रवाहित नहीं होती?

पास में से निकले और दूसरे एहसास करें कि यह पास में से कौन निकला, यह सुगंध कहां से आई? ऐसी सुगंध जो कस्तूरी की नहीं है, केसर की नहीं है, और किसी चीज की नहीं है, हिना की नहीं है, इत्र की नहीं है, गुलाब की नहीं है। यह गंध क्या है? यह चीज क्या है? इस व्यक्तित्व में क्यों है? अगर ऐसा जीवन नहीं बना तो जीवन का मूल्य, मतलब, अर्थ और चिंतन क्या है?

ब्रह्मा कह रहे हैं कि यह आने वाली पीढ़ियां नहीं समझ सकेंगी। और अगर ऐसा जीवन नहीं हुआ तो हम ऐसे ही घिसटते हुए हैं, जैसे पशु या एक बैल उठता है और एक धाणी के बैल की तरह गोल गोल धूमता रहता है। ऐसे ही मनुष्य नौकरी या व्यापार में धूमता रहेगा और एक दिन मर जाएगा।

जो यह मनुष्य शरीर भगवान ने दिया है इस मनुष्य शरीर को प्राप्त करने के लिए देवता भी तरसते हैं। वे येन केन प्रकारेण मनुष्य रूप में जन्म लेने का प्रयत्न करते हैं। राम के रूप में जन्म लेते हैं, कृष्ण के रूप में जन्म लेते हैं, बुद्ध के रूप में जन्म लेते हैं, महावीर के रूप में जन्म लेते हैं, ईसा मसीह के रूप में जन्म लेते हैं, पैगम्बर के रूप में जन्म लेते हैं और मनुष्य का रूप इसलिए धारण करते हैं कि इस शरीर से कुछ ऐसा हो जो अपने आपमें अद्वितीय हो।

हमें मनुष्य शरीर मिला है और हम उसका उपयोग नहीं कर सकते, हम इस शरीर को जमीन से ऊपर नहीं उठा सकते, शून्य में आसन नहीं लगा सकते इस शरीर को ब्रह्म में लीन नहीं कर सकते इस शरीर को अष्टगंध से युक्त नहीं बना सकते।

ऐसी कृष्ण में क्या विशेषता थी?

राम में क्या विशेषता थी?

और हममें क्या न्यूनता है?

ब्रह्मा के दूसरे श्लोक का अर्थ यह है और इस शरीर को पवित्र बनाने के लिए यह आवश्यक है कि हम देह तत्व से प्राण तत्व



प्राप्त नहीं कर सकते, रोज गंगा में स्नान करके भी नहीं प्राप्त कर सकते।
अगर गंगा में स्नान करने से कुछ उच्चता बनती है तो मछलियां तो हर
समय स्नान करती हैं, वे तो अपने आपमें कभी की उच्च बन जातीं।

उच्च बनने की तो दूसरी ही क्रिया है। ...और ब्रह्मा कह रहे हैं कि आने
वाली पीढ़ियां इस चीज को भूल जाएंगी। इसलिए ब्रह्मा ने एक गुरु की
भी स्थापना की और स्वयं अपने आपको गुरुदेव के रूप में स्थापित
किया। उसने कहा- मुझे ब्रह्मा नहीं कहा जाए, मुझे गुरु कहा जाए ताकि
मैं अपने अट्ठारह पुत्रों को ज्ञान दे सकूँ।

...और उन्होंने अपने अट्ठारह पुत्रों को वह ज्ञान दिया जिसके माध्यम
से व्यक्ति जमीन से ऊपर उठ करके शून्य साधना कर सकें, उनको यह
ज्ञान दिया जिससे वे मल मूत्र विसर्जन मुक्त बन सकें, उनको भूख, प्यास
की चिंता नहीं रहे।



बातचीत करेंगे और हम फिर बिछुड़ जाएंगे। फिर वह क्षण कब
आएगा, जब मैं आपको दैदीप्यमान बना सकूंगा और आपमें
भावना आएगी कि मुझे दैदीप्यमान बनना है, अद्वितीय बनना
है, श्रेष्ठतम बनना है, फिर वह भावना आपमें आएगी कब?
मैं आपको चैलेंज के साथ कहता हूं कि ऐसा हो, तब
आपका जीवन है, नहीं तो जीवन आपत्ता नहीं है

गुरु प्रसन्न होता है आपकी सेवा से, प्रसन्न होता है आपके साहचर्य से, प्रसन्न होता है आपके हृदय की सामीप्यता से। जब आपके प्राण मेरे प्राणों से जुड़ जाएं, जब आप हर क्षण यह चिंतन करें कि इस व्यक्ति को जिंदा रखना है, जब आप हर क्षण यह चिन्तन करें कि मेरा जीवन चाहे बरबाद हो जाए मगर इस व्यक्ति को स्वस्थ रखना है, जब आप हर क्षण यह चिंतन करें कि यह व्यक्ति तेजस्विता युक्त है, प्राणस्विता युक्त है, मेरा शरीर तो छोटा सा शरीर है, हजार-हजार शरीर भी इनके आगे समर्पित हो सकते हैं।

और वह नहीं स्थापित हो पाएगा तो मल मूत्र भरी देह आप मेरे चरणों में चढ़ाएंगे क्या? जब आप शरीर में गुलाब का इत्र लगाते हैं तो मैं समझता हूं कि आप क्या भेट चढ़ा रहे हैं। मलमूत्र से भरा हुआ शरीर चढ़ा रहे हैं। गुरु के चरणों में क्या चढ़ाया जा सकता है? क्या है कुछ ऐसा जो चढ़ाया जा सकता है?

चढ़ाया जा सकता है सुगंधित कमल, चढ़ाया जा सकता है सुगंधित जीवन, चढ़ाया जा सकता है प्राणस्विता युक्त जीवन, और ऐसा जीवन जो जमीन से

आपकी तेजस्विता, एकदम पैनी आंखें दिखाई दें। लोग आप को देखें तो मुड़-मुड़ कर देखें। तो फिर गर्व से मेरा सीना फैलेगा कि यह मेरा शिष्य है, जो अपने आपमें शेर की तरह, व्याघ्र की तरह है, और मेरे लिए मर मिटने के लिए तैयार है।

मैं जो कुछ हूं वह तो मेरे गुरु की देन है। मुझे भी क्रिया करनी पड़ती है आपके बीच में, माया करनी पड़ती है और प्राण तत्व में भी रहना पड़ता है। मुझे दोनों प्रकार का चीज़ चीज़ पढ़ना है और तो जीवन-

वाला बना सकते हैं, एक सूर्य नहीं, हजार सूर्यों के समान बना सकते हैं। सारे शरीर से एक सुगंध प्रवाहित हो। हम चलें और एक मील दूर तक सुगंध प्रवाहित हो, ऐसास हो सके परिवार को, समाज को और हमको खुद को। और उसके लिए क्रिया है अपने आपमें, शरीर में पूर्णता के साथ गुरु को स्थापित कर देना अंदर उतार देना और अंदर गुरु तभी उतर सकेगा जब मल मूत्र युक्त नहीं होगा जीवन। पवित्र होने पर ही अंदर उतर सकेगा वह। गंधगी में वह नहीं बैठ सकेगा।



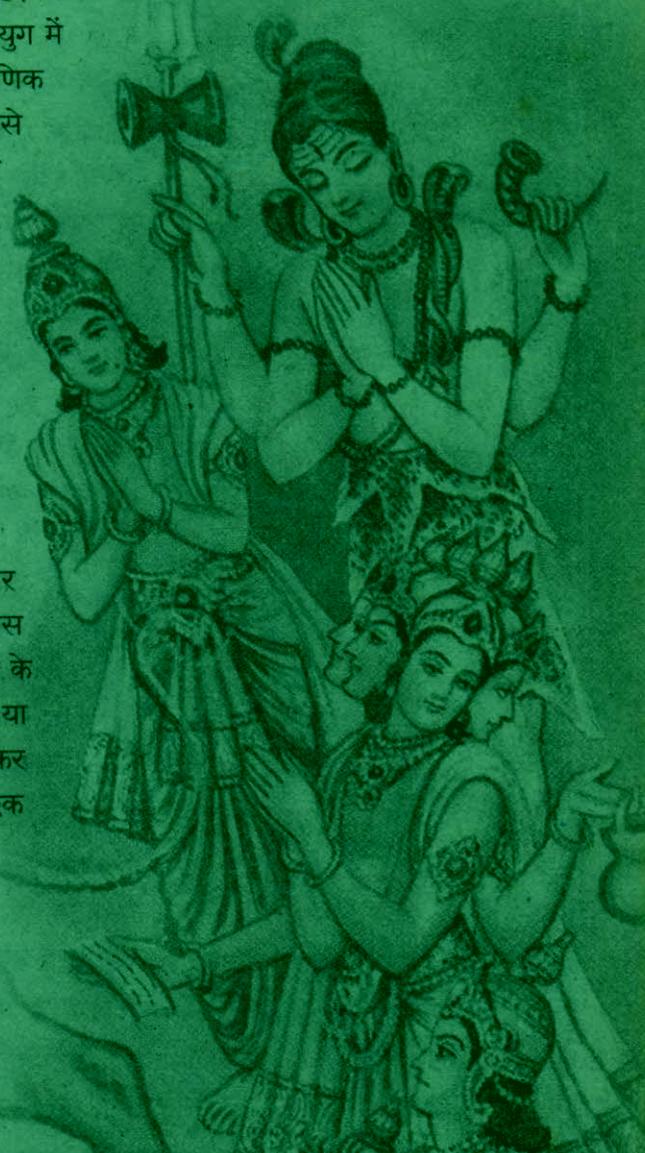
स्थापन क्रिया हो कि रक्त के एक-एक कण में गुरु समाहित हो और सारा शरीर अपने आपमें गुरुमय बन जाए, दैदीत्यमान बन जाए, तेजस्विता युक्त बन जाए। एक ही बार में एक ही झटके में सब कुछ प्राप्त हो जाए, यह जीवन की श्रेष्ठता है, जीवन की पूर्णता है, जीवन की उच्चता है।

और जो मंत्र इस गुरु रक्त स्थापन क्रिया में गुरु बोलता है या उच्चारण करता है वह फुल स्कैप के चौदह पंद्रह पृष्ठों में एक मंत्र आता है और वह कहीं पुस्तकों में वर्णित नहीं है क्योंकि वह मंत्र ही नहीं है, पूर्ण स्वामी सच्चिदानन्द और समस्त योगी, आदि संन्यासियों के साथ हृदय में गुरुत्व स्थापन की एक उच्च क्रिया है। और यदि आप देखना चाहें कि कोई शिष्य है जिन्होंने पूर्णता के

सदस्य को कहें कि मेरे नीचे से स्केल निकालो
गोन के बीच से स्केल निकल जाती है। और
आप जमीन से ऊपर उठे। आज के युग में
ता है आपको, परंतु यह एक प्रामाणिक
माध्यम से संपत्ति कर सकते हैं, जिसे
ने जीवन को उच्चता और श्रेष्ठता की
और गुरु वह है जो आपको हर
क्षेत्र का चिंतन दे सके, हर प्रकार
वह लक्ष्मी की साधना हो, गुरु प्राण
साधना हो या शमशान जागरण साधना
में सक्षम है, आवश्यकता इस बात
के योग्य बन सकें। यह गुरु का धर्म
ए नहीं, परंतु यह भी आवश्यक है कि
आत्मसात कर सकें।

मैं हरिद्वार गया था, एक महीने भर
वहाँ कि कल्पवास करते हैं। कल्प वास
एक गंगाजी के तट पर रहना, गंगाजी के
के हाथ से रोटी बनाना और खाना या
ना और खाना और वहाँ कुटिया बनाकर
नए कल्पवास कर लेते हैं। वहाँ पर एक
धू वहाँ बहुत भटकते रहते हैं।

मझदार था, हड्डा-कड्डा और मजबूत
ता। परिचय हो गया पांच सात
ना कि कभी सब्जी लेकर आ
आ जाता, मेरे पैर दबवाने
दबा देता, कभी गरम
थ भाव से ऐसा करता



आप अपने किसी परिवार
कि क्या मेरे पांवों और ज
निकल जाए तो समझें कि
यह सब असंभव लग सब
क्रिया है जिसे आप गुरु वे
आप गुरु से प्राप्त कर अ
ओर अग्रसर कर सकते
प्रकार का ज्ञान दे सके, ह
की साधना दे सके। चाहे
स्थापन साधना हो, भैरव स
हो। गुरु तो हर चीज देने
की है कि आप प्राप्त करने
है कि वह दे, कुछ भी छिप
शिष्य उन्हें प्राप्त कर सकें।

करीब पंद्रह साल पहले
हरिद्वार रहा था। पल्ली ने
का अर्थ है कि महीने भर
पानी से आटा गूँधना, खु
पल्ली के हाथ से रोटी बना
के रहना तो हमने कहा चा
संन्यासी था। संन्यासी स

मगर एक लड़का बहुत
था और वह रोज सेवा क
दिन में और सेवा यह क
जाता, कभी आलू लेकर
की आदत है तो कभी पै
पानी कर देता और निःस्व
र्वा। उस पर्वी के बाद वहाँ



तो मैं समझ गया कि ऐसी बात कोई कह ही नहीं सकता। मैंने कहा-
चलो कोई बात नहीं, होशियार हो तुम। तुमने सेवा की। क्या सिखाऊँ
तुम्हें। तुम जो भी कहो, मगर एक ही विद्या सिखाऊँगा तुम्हें।

उसने कहा- मैंने तीस दिन सेवा की आप एक ही विद्या
सिखाओगे?

मैंने कहा- एक ही सिखाऊँगा।

उसने कहा- मैं महीने भर बाद आपके घर आकर सीख
लूं तो?

मैंने कहा- महीने भर बाद आ जाना।

उसके बाद तीन चार महीने तक वह आया ही नहीं। मैं
भी भूल गया, मैं भी दूसरे कामों में लग गया। एक दिन वो
जोधपुर पहुंच गया। मैंने सोचा इसे कहीं देखा है, मैं उसे
कुछ भूल सा गया था।

मैंने कहा- मैंने तुम्हें कहीं देखा है, साधु हो तुम?

उसने कहा- गुरु जी! महीने भर तक मैंने आपकी सेवा की
है। आपने कल्पवास किया था।

मैंने कहा- हां, हां ठीक बिलकुल सही बात है, बोलो क्या
चाहते हो तुम?

उसने कहा- गुरुजी कुछ नहीं चाहता हूं बहुत, मर्द हूं, ताकतवान हूं, मगर
मैं शमशान जागरण करना चाहता हूं कि भूत कैसे नाचते हैं, प्रेत कैसे नाचते हैं पिशाच कैसे
नाचते हैं? बस एक बार पिशाच किसी के पीछे लगा दिया तो रोएगा। जिंदगी भर। किसी को भूत लगा दिया
तो मरेगा। पहले भूत लगा दूंगा, फिर पांच हजार रुपये लेकर उतार दूंगा।

मैंने कहा- तू तो मुझसे भी बहुत ऊँचा है, मगर यह विद्या तो मुझे भी नहीं आती।

उसने कहा- नहीं गुरु जी, आपको आती है, आती है और मुझे सिखानी पड़ेगी। बस भूत लगाऊँगा और पैसे
कमाऊँगा और वापस भूत उतार दूंगा, ठीक कर दूंगा। चमत्कार भी हो जाएगा और कमा भी लूंगा।

अब मैं वचनबद्ध अलग। हां भरूं तो खोटा, न कहूं तो खोटा।

मैंने कहा कल बताऊँगा। उसने कहा- गुरु जी कल आप मना कर देंगे। आप बस बता दीजिए कि कल
सिखाऊँगा या महीने भर बाद सिखाऊँगा। आप बता दीजिए, मैं यहां बैठा हूं।

बैठा रहा, रात भर बैठा रहा, दूसरे दिन सुबह भी बैठा रहा, शाम को भी बैठा रहा। अगले दिन पत्नी ने
कहा- यह ब्राह्मण है, संन्यासी है भूखा मर रहा है, कितना पाप लगेगा हमको, सेवा की है, आपने अपने मुंह से
बोला है कि सिखाऊँगा तो सिखा दीजिए इसे।

मैंने कहा- सिखाना तो ठीक है, मगर इसने दूसरा पॉइंट एक अलग बताया है कि पहले भूत लगा दूंगा, फिर
वह नाचेगा, कूदेगा और पैसे लेकर मैं उतार दूंगा, मंत्र से उतार दूंगा और दो हजार रुपया खर्चा बता दूंगा। यह
गडबड है। मैंने उसे बताया कि तू यह नहीं करेगा। पर वह कहता है कि फिर तो सीखना ही बेकार है।

फिर वह पीछे पड़ा रहा तो मैंने उससे कहा- मैं तुझे यह भूत लगाना भगाना नहीं सिखाऊँगा। बस तुझे जो
भूतों का नुत्य देखना है, शमशान जागरण देखना है वह दिखा दूंगा।

वह बोला- गुरुजी बस महीने में दो तीन केस मुझे करने दीजिए
उससे मेरा काम चल जाएगा, दो तीन केस में मैं पार हो
जाऊँगा।

मैंने कहा- मैं ऐसा कुछ नहीं सिखाता
मगर तू आया है तो तुझे श्मशान जागरण
दिखा अवश्य दूंगा।

जोधपुर में श्मशान है, घर से
करीब सात आठ किलो मीटर दूर।
पहले मैंने सोचा भी कि इसे श्मशान ले
जाऊँया नहीं ले जाऊँ मगर उसका शरीर
बहुत मजबूत था, बहुत ताकतवान था।
एम्बेस्डर गाड़ी थी मेरे पास तो गाड़ी में ले गया
उसे श्मशान। वहां जो डोम था वह परिचित था कि
गुरुजी कभी-कभी श्मशान साधना करने आते हैं। पहले
करता था, अब तो छोड़ दिया, पंद्रह साल हो गए। गाड़ी मैंने
पार्क की श्मशान के बाहर और उसे कहा, चलो अंदर
चलो।

चले अंदर। वहां मैंने एक घेरा बनाया, बीच में
उसे बिठा दिया और कहा, देख। यहां श्मशान
जागरण में बहुत भयंकर दृश्य दिखाई देंगे पहले
बता देता हूं। पर डरने की बात नहीं है। भूत होंगे,
प्रेत होंगे, कोई अद्वाहास करेंगे, किसी के सींग होंगे
और तुम डर जाओगे तो बहुत मुश्किल हो जाएगी, मैं
मंत्र दे रहा हूं उसका जप करना मगर यह याद
रखना कि जो यह घेरा है इसके अंदर कोई
नहीं आ पाएगा, बाहर चाहे कुछ भी झपट्टा
मारे, तुम घबराना नहीं, न मेरा कुछ
बिगड़ेगा, न तेरा कुछ बिगड़ेगा।

मैंने कहा- बस तू अपना ध्यान रखना।
उसने कहा- गुरु जी! आप चिंता मत करिए,
आप चिंता बहुत करते हैं, थोड़ा टेंशन फ्री
रहिए गुरु जी।

मैंने सोचा, चलो ठीक है। उसके चारों तरफ
घेरा बना दिया। घेरे में मैं भी बैठ गया और उसे
भी बैठा दिया दक्षिण दिशा की ओर मुंह कर के।
उसके बाद मैंने श्मशान जागरण आरंभ किया, उसके
बाद मैंने श्मशान जागरण किया ही नहीं, बस वही था
लास्ट।

तो ज्योंही श्मशान जागरण प्रारंभ किया तो श्मशान में जितने भी भूत, पिशाच, राक्षस थे वे उठ-उठ कर आने लगे और कोई नाच रहा है। कोई कूद रहा है, कोई खून पी रहा है, कोई हल्ला कर रहा है, कोई मल्ल युद्ध कर रहा है, किसी के सींग निकले हैं, किसी के दांत निकले हुए हैं। मेरा तो रोज का अभ्यास था, संन्यास जीवन में मैं था ही, तो मेरे लिए कोई बड़ी बात नहीं थी।

पर उसने तो दो चार मिनट देखा, फिर आंखें बंद कर लीं। मैंने उधर ध्यान ही नहीं दिया कि मजबूत आदमी है, हृष्टा कहा है, मुझे कोई चिंता की बात ही नहीं है। लेकिन तीन मिनट हुए नहीं कि खट्ट-खट्ट, खट्ट-खट्ट आवाज होने लगी।

मैंने सोचा यह आवाज कहां से आ रही है?

उधर देखा तो थर-थर कांप रहा है, दांत बज रहे हैं और हा हा हा कर रहा है। मैंने सोचा- मर जाएगा यह, एक संन्यासी की हत्या हो जाएगी और बहुत गडबड हो जाएगी।

मैंने फटाफट श्मशान को बंद किया, उसे जगाया। मैंने कहा क्या हुआ? अब तो उठ जा।

वह चिल्लाया- अरे भूत, अरे भूत, अरे भूत.... मैंने कहा- अरे भई! यहां भूत कुछ नहीं है, हो गया सब।

वह बस कांपता रहा और बोलता रहा, हर्र, हर्र, हर्र, हर्र....

मैंने उसे उठाया, कंधे पर डाला और पीछे कार में डाला। डाल कर के घर पर लाया, रास्ते भर चिल्लाता रहा-भूत आया, आया, आया हुर्र हुर्र....।

मैंने सोचा, यह तो हृष्टा-कहा था, यह क्या गडबड हो गई? माता जी ने कहा यह क्या लाए? मैंने बिठाया। दो मिनट ही हुए थे, श्मशान जागरण आरंभ ही हुआ था उससे पहले उसके पहले इसके दांत ही टूट गए होंगे, कांपते हुए।

अब उसको हिलाऊं, डुलाऊं, पानी उसके ऊपर डाला, जूता सुंधाया, मिर्ची की धूनी दी। वह उठा और बोला- भूत, भूत, हुर्र, हुर्र....।

मैंने कहा- यह मर जाएगा, मुश्किल हो जाएगी।

मैंने कहा- भूत वूत कुछ नहीं है, यह श्मशान नहीं है मेरा घर है, अब चिंता मत कर। तेरे लिए दूध लाया हूं, केसर डाल कर लाया हूं, अब गुरु जी तुझे अपने हाथों से पिलाएंगे, अपना सौभाग्य देख। कितना तू महान् शिष्य मुझे मिला, बहुत कृपा की तूने।

करीब आधे घंटे, पौने घंटे के बाद उसने आंख खोली- मैं कहां हूं?

कहां हूं? मैंने कहा तू मेरे घर मैं हूं। तू मेरे पास बैठा है।

वह बोला-भूत आया, भूत आया।

मैंने कहा- भूत वूत कुछ नहीं आया, तू देख ले,, यह मेरी पत्नी बैठी है, तू देख

ले। पंद्रह बीस मिनट आंखें
फाड़-फाड़ कर देखता
रहा, बड़ी देर के बाद
वह संभला, उसे दूध
पिलाया, कंबल
ओढ़ाया। वह बोला-
यह क्या हुआ?

मैंने कहा- कुछ नहीं
हुआ। यह तो शुरुआत
हुई थी, अब जब शुरुआत



वार्षिक सदस्यता

मंत्र-तंत्र-यंत्र विज्ञान पत्रिका आपके परिवार का अभिन्न अंग है। इसके साधनात्मक सत्य को समाज के सभी स्तरों में समान रूप से स्वीकार किया गया है, क्योंकि इसमें प्रत्येक वर्ग की समरस्याओं का हल सरल और सहज रूप में समाहित है।

इस पत्रिका की वार्षिक सदस्यता को प्राप्त कर,
आप पार्यंगे अद्वितीय और विद्युष्ट उपहार

सुदर्शन चक्र

समरत प्रकार की आपदाओं, विपत्तियों, बाधाओं,
कष्टों, अकाल मृत्यु निवारण तथा परिवार के
समरत शदस्यों की पूर्ण शुरक्षा हेतु।

भगवान् कृष्ण ने सुदर्शन चक्र धारण किया
और आपे शदस्यों का पार्वा भूमि पर तिल

स्थापना विधि
किसी भी कृष्ण पक्ष की अष्टमी के दिन
प्रातः 7.36 से 8.24 के बीच

हमारा मानव शरीर तो महान् है
 ईश्वर की सर्वश्रेष्ठ रचना है
 यह देवताओं का निकास रथब है
 यह श्रेष्ठतम् यज्ञ मण्डम् है
 यह ऋषि वैदियों की भूमि है
 यह दिव्यतम् रथ है

इसे स्मरण से गुरु निर्देश से चलाना कर्तव्य है
 वेदों में वर्णित शरीर की अद्वितीय व्याख्या



वेदमन्त्र मनुष्य को कहता है कि हे कुमार, जिस रथ को
 लोग जन्म-जन्मान्तरों की तपस्या के बाद कभी पाते हैं,
 ऐसा उत्तम-मानव शरीर-रूपी रथ तुझे मिला है, तो भी
 आश्चर्य की बात है कि उस पर बिना देखेभाले, बिना
 सोचे-समझे तू बैठा हुआ है।

तुझे चाहिए कि तू जीवन में अपना कोई उच्च लक्ष्य
 निर्धारित करे और उस तक पहुंचने के लिए शरीर रूपी
 इस उत्तम रथ का उपयोग करें।

जितने भी सजीव शरीर हैं, उनमें मानव-शरीर की महत्ता वाली अंगुलियां बनाई हैं, किसने इन्द्रियों के छिद्र बनाए हैं, सबसे अधिक है। ऐतरेय उपनिषद् का एक छोटा - सा कथानक किसने तलवे और किसने मध्य का आधार बनाया है? किस है - 'सृष्टि के आरम्भ में परमात्मा ने अग्नि, वायु, आदित्य उपादान-कारण से लेकर इस शरीर में नीचे टखने और उसके आदि देवों की रचना की। वे देव जब जगत् में अवतीर्ण हुए तब ऊपर घुटने बनाए गए हैं, जांघें जोड़ी गई हैं, दोनों घुटनों के कहने लगे कि हमें रहने के लिए घर दीजिए, जहां रहकर हम जोड़ रचे गए हैं? घुटनों के ऊपर का यह धड़, जिसके चारों अपने-अपने भोगों को भोग सकें। परमात्मा उनके आगे गाय सिरों पर दो भुजाएं और दो जांघों की हड्डियां जुड़ी हैं? का शरीर लाया। उन्होंने कहा यह हमें पसन्द नहीं है परमात्मा अहो, कितने और कौन-से कारीगर थे जिन्होंने मनुष्य की उनके आगे घोड़े का शरीर लाया। उन्होंने कहा यह भी हमें छाती और गर्दन बनाई, स्तन बनाए, कपोल बनाए, कन्धे पसन्द नहीं है। फिर परमात्मा उनके आगे पुरुष का शरीर बनाए, पसलियां बनाई? किस कारीगर ने वीरता के कार्य लाया। उसे देखते वे उछल पड़े और बोले यह बहुत अच्छा बना है, यह हमें पसन्द है। तुरन्त सब देव उसमें प्रविष्ट हो करने के लिए इसकी दोनों भुजाएं बनाई हैं? किसने दोनों बना है, यह हमें पसन्द है। इस कथानक कन्धों को शरीर के साथ जोड़ा है? किसने इसके दो कान रचे हैं, दो नाक के छेद रचे हैं, दो आंखें रची हैं, मुख रचा है? सिर द्वारा उपनिषद्-कार ने बहुत सुन्दर रूप में मानव-शरीर की के ये सातों छिद्र किसने घड़े हैं? कहो, किसने दोनों जबड़ों के श्रेष्ठता प्रतिपादित की है।

सचमुच मानव-शरीर की रचना और क्रियाशक्ति बड़ी अद्भुत है। इसीलिए अथवेद का कवि इसके एक-एक अंग पर मुग्ध होता हुआ 'कैन सूक्त' में कहता है - 'अहो, किस विलक्षण कारीगर ने इस मानव-शरीर में एडियां बनाई हैं, किसने मांस भरा है, किसने टखने बनाए हैं, किसने पोरुओं का रक्त भरा है जो लाल-नीला रूप धारण कर हृदय सिन्धु से आता-जाता है और ऊपर-नीचे इधर-उधर सब ओर प्रवाहित

होता है? किसने शरीर में रूप भरा है? किसने इसमें नाम और
यह यज्ञस्थली हैं
महिमा निहित की है? किसने प्रगति, ज्ञान, वैज्ञानिक तक्षण दे दिये?

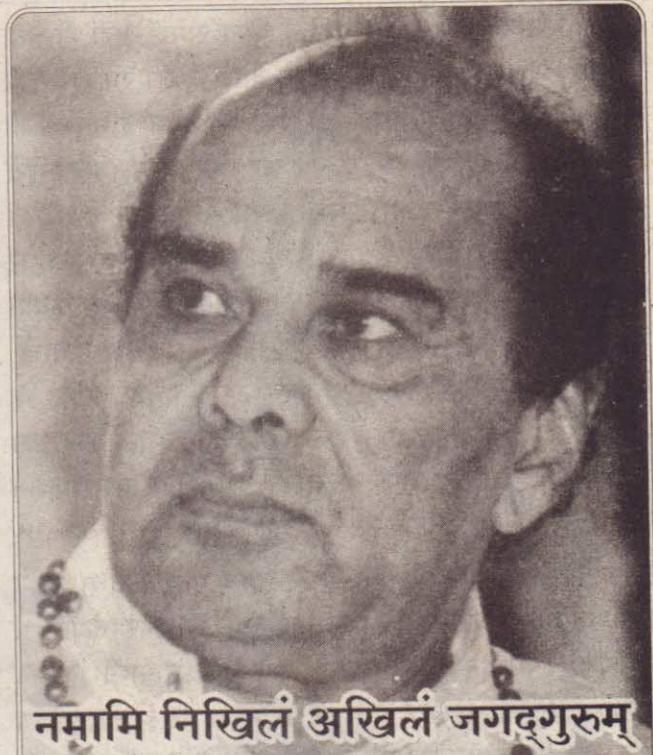
से स्पर्श का ज्ञान न कर सके, मन से चिन्तन और बुद्धि से विवचन न कर से, तो कोई भी आकर उसकी हिंसा कर सकता है। आंख आदि के अभाव में उसे ज्ञान तक न होगा कि कोई उसकी हिंसा करने आया है। जब यह शरीर सोता है तब आंख आदि क्रषि स्थूल रूप से अपना कार्य बंद कर देते हैं; उस समय वे आत्मलोक में चले जाते हैं। किन्तु उस समय भी आत्मा और प्राण ये दो देव शरीर में जागते रहते हैं, क्योंकि ये भी कहीं चले जाएं तो शरीर मृत ही हो जाए।

अथवा वेद १०.८.६ में शरीर के विषय में यह वर्णन मिलता है कि 'यह एक चमस (चम्मच या पात्र) है जिसका बिल नीचे की ओर और पृष्ठ ऊपर की ओर है, तो भी इसमें सब प्रकार का यज्ञ निहित है। इस चमस में सात क्रषि भी बैठे हुए हैं, जो इसकी रक्षा कर रहे हैं। यह चमस शरीर का मूर्धा (गर्दन के ऊपर का हिस्सा) ही है। साधारण चमसों का पृष्ठ नीचे और छिद्र ऊपर रहता है, नहीं तो उसमें खींची वस्तु गिर जाए। पर यह ऐसा अद्भुत चमस है कि इसका छिद्र मुख नीचे की ओर है और पृष्ठ (खोपड़ी) ऊपर है, तो भी इसमें विश्वरूप यश (सर्वविद्य ज्ञान) भरा हुआ है, गिरता नहीं। सात क्रषि पूर्वोक्त सात इन्द्रिय-रूपी क्रषि हैं जो इसमें बैठे हुए इसकी रक्षा कर रहे हैं। ये सात क्रषि दो कान, दो नासाछिद्र, दो आंख और एक मुख भी हो सकते हैं जैसा अथववेद १०.२.६ में परिणित किए गए हैं। शतपथ ब्राह्मण (१४.४.२) में भी इस चमस में रहने-वाले ये ही क्रषि बताए गए हैं और यह कहा गया है कि दो कान गौतम और भारद्वाज हैं, दो नासिकाएं वशिष्ठ और कश्यप हैं, दो आंखें विश्वामित्र और जमदग्नि हैं, मुख अत्रि है।

एक वैदिक विचार के अनुसार हमें शरीर के प्रति यह भाव रखना चाहिए कि यह क्रषियों की पवित्र तपोभूमि है और इसे किसी प्रकार दूषित नहीं होने देना चाहिए।

यह रथ है

वैदिक साहित्य में इस शरीर को रथ भी कहा गया है। कठ उपनिषद् में यह रूपक इस प्रकार है:- 'शरीर एक रथ है, आत्मा रथस्वामी है, बुद्धि उसका सारथी है, मन लगाम है, इन्द्रियां घोड़े हैं, विषय चरागाह है। जो बुद्धि रूपी सारथी का उपयोग नहीं करता और मन-रूपी लगाम को ताने नहीं रखता, उसकी इन्द्रियां वश से बाहर हो जाती हैं, जैसे दुष्ट घोड़े सारथी के वश से बाहर हो जाते हैं। पर जो बुद्धि रूपी सारथी का उपयोग करता है और मन-रूपी लगाम को ताने रखता है, उसकी इन्द्रियां वश में रहती हैं, जैसे सधे घोड़े सारथी के वश में रहते हैं।'



नमामि निखिलं अखिलं जगद्गुरुम्

२१ अप्रैल

शरीर की रथ से उपमा वेदों में भी की गई है। क्रग्वेद २.१८.१ में कहा है - 'मनुष्य-शरीर इन्द्र का रथ है, जिसमें चार युग हैं तीन कशाएं (चाबुक) हैं, प्रातः काल साफ सुथरा और नया करके जोता जाता है, सदिच्छाओं और बुद्धियों से चलाया जाता है। क्रग्वेद १०.५६.१० में इसी शरीर-रथ के लिए कहा गया है कि 'हे इन्द्र, तू शरीर-रथ को खींचने वाले बैल को ठीक प्रकार से चला जो कि उशीनराणी के रथ को खींचता है। सूर्य और पृथ्वी तेरे इस रथ के दोषों को दूर करते रहें, जिससे कोई भी रोग तुझे न सताए।' इस मंत्र में यह कल्पना की गई। प्रतीत होती है कि यह शरीर एक रथ है जिसमें देवराज इन्द्र (आत्मा), अपनी रानी उशीनराणी (बुद्धि) सहित बैठे हुए हैं, प्राण रूपी बैल (अनहवान्) इस रथ को खींच रहा है। इन्द्र (आत्मा) को कहा गया है कि तू इस प्राण-रूपी बैल को ठीक प्रकार से चला, नहीं तो यह शरीर-रथ को रोगादि के गढ़ों में गिरा देगा। सूर्य की किरणों से और पृथ्वी की औषधि-वनस्पतियों से इस रथ के मलों को दूर करते रहना चाहिए, अन्यथा यह रथ रोगग्रस्त होकर चलना बन्द कर देगा।

क्रग्वेद १०.१३५.३ में मनुष्य को सम्बोधन कर कहा है - 'हे कुमार, बिना पहियों के ही चलने वाले एक ईषादण्ड वाले, चारों ओर वेग से चलने-फिरने वाले जिस नवीन रथ को तूने

मन से पसन्द किया है उस पर तू बिना समझ-बूझ ही बैठा हुआ है। यह बिना पहियों के चलने वाला नवीन रथ शरीर ही है, जिसमें मेरुदण्ड रूपी एक ईषादण्ड है। वेदमन्त्र मनुष्य को कहता है कि हे कुमार, जिस रथ को लोग जन्म-जन्मान्तरों की तपस्या के बाद कभी पाते हैं, ऐसा उत्तम-मानव शरीर-रूपी रथ तुझे मिला है, तो भी आश्चर्य की बात है कि उस पर बिना देखेभाले, बिना सोचे-समझे तू बैठा हुआ है। तेरी स्थिति वैसी ही है जैसी उस मनुष्य की जो कि रथ पर बैठा हुआ है, परन्तु जिसे यह नहीं मालूम कि जाना कहां है। तुझे चाहिए कि तू जीवन में अपना कोई उच्च लक्ष्य निर्धारित करे और उस तक पहुंचने के लिए शरीर रूपी इस उत्तम रथ का उपयोग करें।

इससे अगले मन्त्र में कहा है कि 'हे कुमार, यदि तू अपने इस शरीर-रथ को प्रियजनों के निर्देश के अनुसार चलाएगा, तभी यह समगति के साथ चल सकेगा और तभी विघ्न-बाधाओं की नदियां बीच में पड़ने पर नौका पर चढ़ाए हुए रथ की तरह यह कुशलता के साथ उन नदियों को पार कर सकेगा।

ऋग्वेद के इसी सूक्त में इस शरीर-रथ की उत्पत्ति के विषय में प्रश्न उठाया गया है - 'किसने कुमार को पैदा किया है, किसने उसका रथ (शरीर) रचा है, कौन हमें आज यह बताएगा कि कैसे यह अनुदेयी (एक की गोद से दूसरे की गोद में दिए जाने योग्य) होता है? अगले दो मंत्रों में इसका उत्तर दिया है - पहले यह माता के गर्भ से पैदा होता है, उसके बाद अनुदेयी होता है। पैदा होते समय पहले इसका सिर निकलता है, फिर यह सारा बाहर आ जाता है। यह यम के (जीवात्मा के) बैठने का रथ है, जो देवनिर्मित है। देखो, यह इसकी नाड़ी चल रही है, वह वाणियों से परिष्कृत है।

इस प्रकार हम देखते हैं कि हमारे प्राचीन साहित्य में शरीर को एक रथ कल्पित किया गया है और मनुष्य को यह संदेश दिया गया है कि जैसे किसी रथ पर चढ़कर वह सुदूर स्थान पर पहुंच सकता है, वैसे ही इस शरीर-रूपी रथ को पाकर उसे अपने दूरवर्ती लक्ष्य तक पहुंचना चाहिए, तभी उसका इस उत्तम रथ को पाना सार्थक होगा।

आओ, इस सर्वश्रेष्ठ शरीर को पाकर हम सचमुच सर्वश्रेष्ठ बनें। इस देवपुरी में निवास कर हम सचमुच देव बनें। इस यज्ञस्थली में वास करते हुए हम सचमुच यज्ञ करें। इस ऋषिभूमि में वास करते हुए हम सचमुच ऋषि बनें। इस अनुपम रथ पर चढ़कर दिव्य पथ के पाथिक बनें।

अमृत संदेश

धर्म जीवन जीने की कला है। एक ऐसी कला, जिसमें व्यक्ति स्वयं भी सुख से जीता है और और औरों को भी सुखपूर्वक जीवन जीने का मार्ग दिखाता है। मनुष्य और धर्म एक-दूसरे के प्रक हैं। एक के बिना दूसरे की कल्पना करना भी निरर्थक है। मनुष्य का जब से अस्तित्व है, तब से धर्म का भी अस्तित्व है। मनुष्य प्रैम, संतोष, सरलता और संयमपूर्वक जीवन जिये, धर्म की यही मूल सिनावन है प्रकृति का नियम है - जैसा बी-ओर्नै वैसा ही काटीनै। अपने जीवन में सुख पाने के लिए जरूरी है कि हमारे द्वारा मानवता के सुख बांटे जाएं। जी औरों को दुःख देता है, वह अपने जीवन में सुख कैसे पा सकता है?

जीवन का वास्तविक सुख हमारी अपनी ही आन्तरिक शांति में है। आन्तरिक शांति वित की विकार-विहीनता में है, वित की निर्भलता में है। निर्भल वित का आवरण ही धर्म है। कार्य करने से पूर्व यह अली-आंति परस्त लिया जाना चाहिए कि इस कार्य को करने से मेरा या औरों का कोई अमंगल तो नहीं ही रहा है। जिस कार्य से औरों का अला ही रहा ही, वह मंगल है। जिसमें औरों का बुरा ही रहा ही, वह अमंगल है। धर्म मंगल है और अधर्म अमंगल।

धर्म का कार्य विकार और कषाय की मिटाना है। अमर वर्षों तक धर्म के द्वार पर जाकर भी हमारे विकार नहीं मिट पाए हैं, तो मनुष्य के द्वारा यह आत्म-मन दिया जाना चाहिए कि वास्तविक तौर पर क्या वह धर्म के मार्ग पर चल रहा है? धर्म के सिद्धांतों के आवरण तो कम किन्तु आवह उद्यादा ही नहीं। चर्या कम, चर्चा उद्यादा होने लगी। जीवन का धर्म नीं ही नया और नाम का धर्म मुख्य ही नया।

जी धर्म कभी हमारे मानवीय मूल्यों से जुड़ा हुआ था, हमारे निर्भल जीवन से जुड़ा हुआ था, वह धर्म आज के दल नाम के आवह का रह नया। हमें धर्म के मूल स्वरूप को समझकर जीवन में प्रैम, करुणा और दया को महत्वपूर्ण स्थान देना होता, तभी धर्म जीवंत रह पाएगा।

३ अप्रैल 2009
राम नवमी विशेष

राम तुम्हारी महिमा निशाली
राम को उतारे जीवन में
तभी जीवन हो सकता है धन्य

जय-जय श्रीराम



भगवान राम करुणा की सूरत, दया के सागर और उनका नाम मानव मात्र का कल्याण करने वाला है। राम मर्यादा पुरुषोत्तम हैं। उन्होंने 'रघुकुल रीत सदा चलि आई, प्राण जाए पर वचन न जाए' के तहत 14 वर्ष राज-पाट का त्याग कर वन-वन तपस्या की, वहाँ शिलारूप धरे अहिल्या को अपने चरणकमल की धूल से अभिशाप मुक्त कर कल्याण किया। राम ने लंका पर चढ़ाई करने के लिए समुद्र को सुखाने के लिए जहाँ अपना धनुष बाण चढ़ा अपने पराक्रमी रूप का परिचय दिया, वही रावण वध कर असत्य पर सत्य की विजय पताका फहरा एक कुशल योद्धा और राजनीतिज्ञ होने का संदेश दुनिया को दिया। मर्यादा पुरुषोत्तम श्रीराम का जन्मोत्सव राम नवमी पर्व सम्पूर्ण हिन्दू समाज के लिए गर्व का विषय है। श्रीराम का नाम अडिग आस्था और चमत्कारिक है। भगवान श्री राम का जीवन करुणा, दया और बिना किसी भेद भाव के प्राणी मात्र के महत्व और कल्याण का मार्ग है। उनका प्रकटोत्सव दिवस राम नवमी धर्म और कर्तव्य का निर्धारण दिवस कहें तो शायद गलत नहीं होगा। उन्होंने शबरी के जूठे बेर खाने में जहाँ संकोच नहीं किया, वही निषाद को गले लगाकर दलित उद्धार का संदेश दिया। राम की छवि और उनके कार्य आज के युग में भी प्रासंगिक हैं तथा युवा पीढ़ी को प्रेरणा देने वाले हैं।





विकास के उपादान के रूप में ही मिलेगा। मर्यादा पुरुषोत्तम राम दशरथ पुत्र के रूप में जहां हमारे सामने बाल लीला का मनोहारी रूप प्रस्तुत करते हैं, वहीं परम ब्रह्म के रूप में अनादि शाश्वत एवं अविनाशी बन जाते हैं। राम आदर्श और मर्यादित जीवन के प्रतीक हैं। राम लोकमानस की पूँजी हैं। श्रीराम का चरित्र और आदर्श की महिमा का रामचरितमानस की पूँजी है। श्रीराम का चरित्र और आदर्श की महिमा का रामचरितमानस में विस्तृत उल्लेख किया गया है।

मर्यादा पुरुषोत्तम राम हमारी संस्कृति में जितने अभिजात्य कुलीनता के हैं, उतने ही सामान्य जन के घर-आंगन में, उतने ही गरीब एवं अमीर थे, उतने ही विद्वान और सामान्य जन दोनों ही जगह समान श्रद्धा और स्नेह के पात्र हैं। भगवान राम का चरित्र साधारण जीवन जीने वालों को यह विश्वास दिलाता है कि लक्ष्य की सिद्धि साधनों की विपुलता से नहीं, बल्कि निर्वासित तथा असहाय होने पर भी संकल्प एवं विश्वास से हो सकती है।

मर्यादा पुरुषोत्तम राम ने सुग्रीव और रावण के भाई विभीषण को शरण दे शरणागत की रक्षा कर क्षत्रिय धर्म का पालन किया तथा रावण से युद्ध के बाद जब लंका पर विजय पताका फहराई तो जीता हुआ राजपाट विभीषण को सौंप, पराई सम्पत्ति और नारी पर नजर न रखने का संदेश भी दुनिया को दिया। अत्याचार और बुराई के प्रतीक रावण के उद्धार और धरती को रावण और उनके वंशज रूपी राक्षसों से मुक्ति दिलाने के लिए अवतार के रूप में भगवान राम की उत्पत्ति हुई। भगवान राम का जीवन मर्यादाओं की कसौटी और युवाओं की प्रेरणा का स्रोत रहा है, और आगे भी जन्म-जन्मान्तर तक रहेगा। भगवान राम करूणा की मूर्ति अर्थात् करूणा का सागर रूप है, वहीं करूणा मानव जाति की चिरसंचित सम्पत्ति है, जो समय के साथ उपादान पाकर विकसित हो जाती है। भगवान राम का जीवन शुरु से अंत तक केवल करूणा के

श्रीराम हमारे जीवन की संस्कृति में एक तरह से संजीवनी के समान हैं। राम के बिना शायद पाप और पुण्य, बुराई और अच्छाई की कहानी अपूर्ण रह जाती। मर्यादा पुरुषोत्तम राम का सम्पूर्ण जीवन आज भी हमारे लिए प्रेरणा का स्रोत है। पिता का पुत्र के प्रति कर्तव्य, भाई का भाई के प्रति कर्तव्य, पति का पत्नी के प्रति कर्तव्य, पिता की वचनबद्धता निभाने के कारण राज पाट छोड़ 14 वर्ष का वनवास काटना, विषम परिस्थितियों में धैर्यवान, ओजस्वी, तेजस्वी स्वरूप, माता-पिता की आज्ञा का पालन जैसे कई घटनाक्रम राम का मर्यादा पुरुषोत्तम होना दर्शाता है। श्रीराम के अनेक गुण, जिनका उल्लेख रामचरित मानस और इतिहास से किया गया है वे आज के युग में भी उतने ही प्रासंगिक हैं। आज की युवापीढ़ी को राम का आदर्श चरित्र प्रेरित करता है। जरूरत है आज की युवापीढ़ी को पाश्चात्य संस्कृति की अंधी ढौँड़ और भागम-

भाग वाली जिन्दगी में से कुछ क्षण निकाल, अपनी संस्कृति, राम की मर्यादा और राम कथा पर नए सिरे से विचार करने की।

उस युग में राम को किसने जाना - वशिष्ठ, विश्वामित्र, जनक, पशुराम, सीता और वाल्मीकी ने।

राम को पहचानने वाले अनेक हों, परन्तु राम ने अपना रूप दिखाया केवल कौशल्या को। जन्म के समय स्वयं राम ने अपना चतुर्भुज स्वरूप कौशल्या को दिखा दिया, यह आवश्यक था।

राम का क्या स्वरूप था और राम जन्म का क्या हेतु था, यह पूर्व निश्चित था। इस बात को समझने वाले सबसे पहले व्यक्ति महर्षि वशिष्ठ थे जिन्होंने जान लिया था कि राम परब्रह्म हैं और राम का प्रकट होने का हेतु राज्य करना नहीं अपितु वन में जाकर राक्षसों का अंत करना है। दूसरे व्यक्ति, जो राम को समझते थे और राम जन्म का हेतु जानते थे, वे राजर्षि विश्वामित्र थे। वे राम को अपने साथ वन में ले गए और उनके बारे में कहा - मैं जान गया था कि राम स्वयं ही ब्रह्मदेव भगवान हैं। विश्वामित्र समझ गए थे कि राम जन्म का हेतु राक्षकों का अंत करना है। वे वास्तव में वैज्ञानिक थे और उनका प्रयोजन राक्षसों को समाप्त करना था। विश्वामित्र का यज्ञ वास्तव में शस्त्र ढालने की भट्टी था, जिससे राक्षस भयभीत थे। विश्वामित्र ताइका से रक्षा के लिए जंगलों में गुप्त स्थानों पर यज्ञशालाओं की भट्टियों में अकाट्य शस्त्र बनाया करते थे। उन्होंने राम को अत्यन्त प्रभावशाली शस्त्र दिए थे और उनका अभ्यास तथा परीक्षण उन्हीं से कराया। उन शस्त्रों को लेकर राम वन गए और उनसे मारीच को 100 योजन दूर उछाल दिया, वहीं सुबाहु को मार गिराया।

महाराजा जनक के निमंत्रण पर धनुष के बहाने स्वयंवर के लिए जनकपुरी जाते समय मार्ग में गौतम के आश्रम में पहुंचने पर राम से, जब वहां एक दिव्यशिला देखकर विश्वामित्र कहते हैं - 'गौतम शाप बस, उपल देह धरि धीर। चरनकमल रज चाहती, कृपा करहुं रघुवीर।' राम को शिव भक्त जानकर शिव के पुराने धनुष को तोड़ने के लिए राम का आह्वान किया। उस अवसर पर विश्वामित्र राम को कहते हैं - हे राम! उठो और यह संसाररूपी धनुष तोड़ दो। राम भगवान हैं और भगवान ही संसाररूपी धनुष को तोड़ सकते हैं। भगवान बंधनमुक्त करने के लिए इस संसार में आते हैं, विश्वामित्र यह बात जानते थे। उन्होंने समझ लिया था कि राम मोक्षदाता हैं और राम संसार रूपी धनुष को तोड़ सकते हैं। वह सांसारिक राजाओं से नहीं टूटेगा। राम को पहचानने वाली सीताजी भी मैं निवास करते हैं।

थीं। जिनका चित्त कभी चंचल नहीं हुआ था और किसी परपुरुष को देखकर उसे बरने के लिए तैयार नहीं हुई थीं। वहां सीताजी ने राम को देखकर जान और समझ लिया था कि इनका जन्म मेरे लिए ही हुआ है। उन्होंने यह समझकर राम के गले में माला तो डाली परन्तु उनके चरण नहीं छुए, वे डरीं। उन्होंने अहिल्या के बारे में सुना था और उन्हें अपना रूप बदलने का डर था। सखियों ने उनके बार-बार कहा, हे सीता! स्वामी के चरण छुओ, परन्तु सीताजी ऐसा करने वाली नहीं थीं। परशुराम को अत्यन्त ज्ञान प्राप्त था। राम को देखते ही पहचान गए और राम का रूप देखकर निहाल हो गए थे। अंत में उन्होंने राम की ओर अपना धनुष बढ़ाकर उन्हें रमापति कहा, परन्तु रमा का पति कहने का अर्थ यह है कि परशुराम समझ गए थे कि ये राम विष्णु के अवतार हैं और धनुष स्वयं राम के हाथ में चला गया। धनुष का उठना और स्वयं जाना इस बात का संकेत है कि धनुष अपने स्वामी को पहचानता था। वह यह भी जानता था कि राम शिव के इष्ट हैं और उनका धनुष शिव का धनुष है। उसके द्वारा परशुराम ने वहां उपस्थित समस्त राजाओं को बता दिया कि राम स्वयं भगवान हैं।

राम के दर्शनों से बुद्धि शुद्ध हो जाती थी, परन्तु रावण के साथ वैसा नहीं हुआ। उसका राम के साथ युद्ध हुआ, किन्तु रावण ने किसी मर्यादा का उल्लंघन नहीं किया, वे सीता को यह तो कहते रहे कि तुम राम को छोड़कर मेरा बरण कर लो, परन्तु उन्होंने उनके साथ अभंद्र व्यवहार नहीं किया। रावण सीताजी के पतिव्रत से भी प्रभावित थे। राम को जनक भी जान गए थे। वे ही राम को कन्यादान देने गए थे किन्तु जनक स्वयं को रोक नहीं पाए, राम की स्तुति करने लगे और चित्रकूट में राम के सामने ससुर के रूप में गए। वे जानते थे कि राम के जन्म का हेतु क्या है। उन्होंने एक बार भी राम को अयोध्या लौटने और सिंहासन पर बैठने के लिए नहीं कहा। इससे जात होता है कि जनक यह समझ गए थे कि राम का जन्म राज्य भोगने के लिए नहीं वरन् राज्य त्यागने के लिए हुआ है। सीताजी ने जब वाल्मीकि के आश्रम में अपने पुत्रों को जन्म दिया तो वाल्मीकि ही पुरुष थे जिनको मालूम था कि राम का निवास उसके हृदय में होता है जो उनको खोजे और उनके दर्शन का प्यासा है, जिसका मन निर्मल है और जिसे राम के सिवाय किसी पर भरोसा नहीं है। जो अनंत, राम के मंत्र का जाप करता है और राम का अनुसरण करता है; जो काम, क्रोध, लोभ, मोह, क्षोभ, द्वेष, कपट व माया से मुक्त है उसके राम, प्राणों से भी अधिक प्यारे राम उसके मन-मंदिर

मावव और नवग्रहों का निश्चिद सम्बन्ध है
ग्रह गति जीवन को नियंत्रित करती है
प्रद्येक ग्रह मानव के शरीर में स्थित है

कालाष्टमी
8 मई 2009
शनि जयंती
24 मई 2009

अनुकूल जीवन और बाधाओं की शांति हेतु
एक मात्र उपाय

ब्रह्मग्रह जाधारा

आपके हाथ में आपके जीवन का संचालन कैसे आ सकता है? ज्योतिष शास्त्र के अनुसार प्रतिकूल ग्रहों के प्रभाव को शांत कर अनुकूल ग्रहों के प्रभाव को तीव्र करने से ही जीव में सफलता प्राप्त होती है।

ब्रह्माण्ड में जिस तरह से नवग्रह का अस्तित्व है, ठीक उसी प्रकार मानव शरीर में भी नौ ग्रह मौजूद हैं। ये ग्रह शरीर के विभिन्न अंगों में विद्यमान हैं। ग्रहों का सम्बन्ध मानवीय चिंतन से है और चिंतन का सम्बन्ध मस्तिष्क से है। चिंतन का आधार सूर्य का स्थान मानव शरीर में सिर पर माना गया है।

'ब्रह्म-रंग' से एक अंगुली नीचे सूर्य का स्थान है इससे एक अंगुली नीचे की ओर चंद्रमा है। चंद्रमा इंसान को भावुकता और चंचलता से जोड़ता है, साथ ही कल्पना शक्ति से भी, क्योंकि चंद्रमा को सूर्य से रोशनी लेनी पड़ती है।

इसीलिए चंद्रमा सूर्य के साए में, नीचे रहना जरूरी है। सूर्य के तेज का उजाला जब चंद्रमा पर पड़ता है, तब इंसान की शक्ति, ओज, वीरता चमकती है। गरुड़ पुराण के मुताबिक मंगल का स्थान मानव के नेत्रों में माना जाता है। मंगल शक्ति का प्रतीक है। यह प्रतिभा और खून का सम्बन्ध रखता है। मानव की आंख मन का शीशा होती है। जैसे शिव का तीसरा

नेत्र उनके क्रोध का प्रतीक है। इंसान के मन की हालत को भी किसी आदमी से पढ़ा जा सकता है। इसलिए मंगल ग्रह का स्थान नेत्रों को माना गया है। बुध का स्थान मानव के हृदय में है।

बुध बौद्धिकता का प्रतीक है। वाणी का कारक भी है। हमें किसी आदमी का कार्य, व्यवहार, काव्य शक्ति अथवा प्रवचन शक्ति जाननी हो तो हम रमल (अरबी ज्योतिष) शास्त्र के अनुसार बुध ग्रह को विशेष रूप से देखते हैं। गुरु ग्रह का स्थान नाभि में होता है। बृहस्पति वेद पुराणों के ज्ञाता हैं। ये समस्त शास्त्रों के ज्ञाता होने के साथ ही अथाह ज्ञान के प्रतीक होते हैं। आपने गौर से देखा होगा कि विष्णु की नाभि से कमल का फूल खिला है। उससे ब्रह्मा की उत्पत्ति मानी जाती है और इसीलिए बृहस्पति का स्थान नाभि में है। शुक्र ग्रह का स्थान वीर्य में होता है। शुक्र दैत्यों के गुरु हैं।

मानव की सृष्टि इसी कार्य से गतिमय है। काम-वासना, इच्छा शक्ति का प्रतीक शुक्र है। शनि का स्थान नाभि गोलक

में है। नाभि ज्ञान का और चिन्तन के प्रतीक के साथ ही ख्यालों की गहराई का भी है। रमल शास्त्र द्वारा हमें किसी व्यक्ति के चिन्तन की गहराई देखनी हो तो हमें उसके शनि ग्रह की स्थिति जाननी होगी।

चिन्तन की चरम सीमा अथाह ज्ञान है। यदि किसी व्यक्ति द्वारा रमल (अरबी ज्योतिष) शास्त्र में एक ही स्थान पर शनि और गुरु एक निश्चित अनुपात में हों तो ऐसे व्यक्ति खोजी, वेद पुराणों के ज्ञाता, शोधकर्ता साथ ही साथ शास्त्रार्थ करने वाले होते हैं।

राहु ग्रह का स्थान इंसान के मुंह (मुख) में होता है। राहु जिस ग्रह के साथ बैठता है वैसा ही फल देता है।

यदि मंगल ग्रह की शक्ति इसके पीछे हो तो जातक क्रोध और वीरतापूर्ण वाणी बोलेगा। यदि बुध की शक्ति पीछे हो तो व्यक्ति मधुर वाणी बोलेगा। यदि गुरु की शक्ति पीछे हो तो ज्ञानवर्धक और शास्त्रार्थ की वाणी बोलेगा। यदि शुक्र ग्रह की शक्ति पीछे हो तो जातक प्रेम की बातें करेगा।

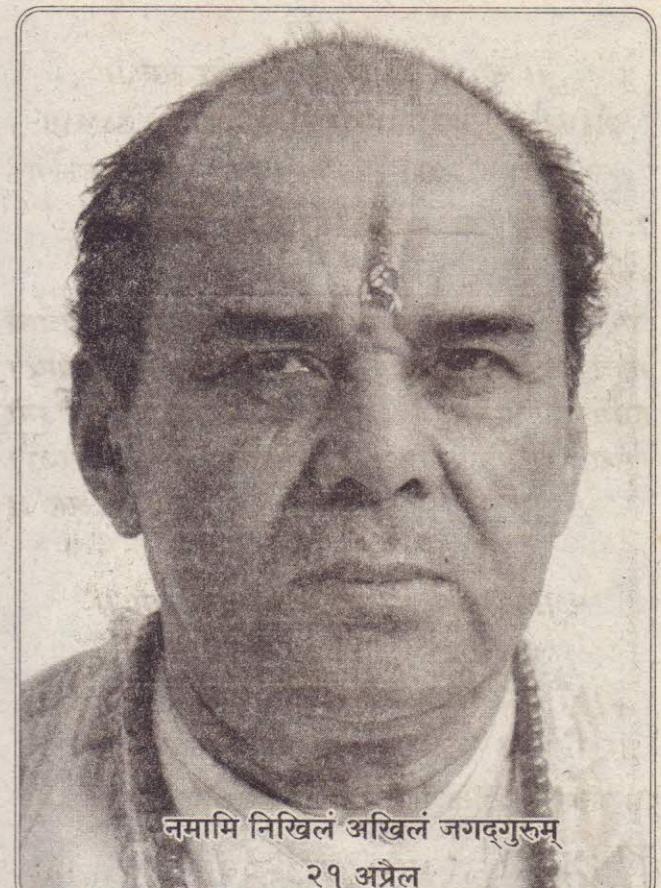
केतु ग्रह का स्थान हृदय से लेकर कंधे तक होता है। साथ ही साथ केतु ग्रह का सम्बन्ध गुप्त चीजों से भी है। किसी भी कार्यों के रहस्यों से भी होता है। इसान के शरीर में ये सब नौ ग्रह अपनी-अपनी जगह पर निवास करते हैं और रक्त प्रवाह के जरिए एक-दूसरे का प्रभाव ग्रहण करते रहते हैं।

प्रत्येक राशि का स्वामी कोई न कोई ग्रह होता है। जब कोई ग्रह खराब स्थान में बैठ कर विपरीत प्रभाव उत्पन्न करता है, तब मानव को कष्ट, पीड़ा और दुःख भोगना पड़ता है। जीवन के सुख-दुःख, लाभ-हानि आदि इन्हीं ग्रहों पर आधारित होते हैं। इन ग्रहों की शांति के लिए उनकी उपासना करनी चाहिए।

भारतीय संस्कृति में नवग्रह उपासना का उतना ही महत्व है, जितना कि भगवान विष्णु, शिव या अन्य देवताओं की उपासना का। जन्म से ले कर मृत्यु पर्यन्त जितने भी संस्कार जैसे उपनयन, विवाह आदि होते हैं, इन सब में नवग्रहों का विशेष महत्व है। किसी भी प्रकार का यज्ञ नवग्रह स्थापना के बिना अपूर्ण रहता है, क्योंकि यज्ञ की रक्षा नवग्रहों के माध्यम से ही होती है। इसलिए गणेश आदि की स्थापना के साथ ही साथ नवग्रह की स्थापना होनी भी आवश्यक है।

ज्योतिष शास्त्र के अनुसार कुल बारह राशियां होती हैं और प्रत्येक राशि का स्वामी कोई न कोई ग्रह है।

मैष और वृश्चिक राशियों का स्वामी मंगल, वृष और तुला



नमामि निखिलं अखिलं जगद्गुरुम्

२१ अप्रैल

का शुक्र, कन्या और मिथुन का बुध, कर्क का चन्द्रमा, सिंह का सूर्य, धनु और मीन का गुरु तथा मकर और कुम्भ राशियों का स्वामी शनि है।

पाराशर ऋषि की ज्योतिषीय गणना में मनुष्य की आयु 120 वर्ष की मानी गई है, इसमें से सूर्य की दशा छः वर्ष, चन्द्रमा की दस वर्ष, मंगल की सात वर्ष, राहु की अठारह वर्ष, गुरु की सोलह वर्ष, शनि की उन्नीस वर्ष, बुध की सत्रह वर्ष, केतु की सात वर्ष और शुक्र की बीस वर्ष मानी गई है। जन्म कुण्डली के अनुसार जब कोई ग्रह खराब स्थान में बैठ कर विपरीत प्रभाव उत्पन्न करता है, तब मानव को पीड़ा, कष्ट और दुःख भोगने के लिए विवश होना पड़ता है।

नीचे प्रत्येक ग्रह से सम्बन्धित मंत्र, बीज मंत्र तथा संख्या का विधान स्पष्ट किया गया है, जिनका जप 'नवग्रह शांति माला' से ही करना चाहिए -

1. सूर्य (मंडल के मध्य में लाल, गोलाकार)
ध्यान

ॐ आ कृष्णेन रजसा वर्तमानो निवेश्यद्वृत्तमत्तर्य च।
हिरण्यवेन सदिता रथेनाऽदेवो याति भुवनानि पश्यन् ॥

सूर्याय नमः ॥

बीज मंत्र

॥ उँ हां हाँ हाँ सः सूर्याय नमः ॥

OM HRAAM HREEM HROOM SAH SURYAY NAMAH

जप संख्या - 7000 जप | जप समय - सूर्योदय काल में।

2. चन्द्रमा (अठिनकोण में श्वेत, अर्द्धचन्द्र)

ध्यान

उँ इमं देवा असपल (गु) सुवधं महते क्षत्राय
महते ज्येष्ठ्याय महते जानराज्यायेन्द्रस्येन्द्रियाय।
इममुष्ट्ये पुत्रमुष्ट्ये पुत्रमस्ये विश्वेष वरोऽमी 6. शुक्र (पूर्व में श्वेत, पंचकोण)

राजा सोमोऽस्माकं ब्राह्मणान्ना (गु) राजा। ध्यान

सोमाय नमः ॥

बीज मंत्र

॥ उँ श्रां श्रीं श्रीं सः चन्द्राय नमः ॥

OM SHRAM SHREEM SHROOM SAH

CHANDRYAY NAMAH

जप संख्या - 11000 | जप समय - संध्या काल।

3. मंगल (दक्षिण में लाल, त्रिकोण)

ध्यान

उँ अग्निमङ्ग्ल दिवः ककुप्पतिः पृथिव्या अवम्।
अपा (गु) रेता (गु) सि जिन्वति ॥ 7. शनि (पश्चिम में काला, मनुष्य)

भौमाय नमः ॥ ध्यान

बीज मंत्र

॥ उँ क्रां क्रीं क्रौं सः भौमाय नमः ॥

OM KRAAM KROOM SAH BHAUMAY NAMAH

जप संख्या - 10000 मंत्र जप | जप समय - घड़ी दो में।

4. ब्रुध (ईशान कोण में हरा, बाण)

ध्यान

उँ उद्बुध्यस्वाञ्ने प्रति जागृहि त्वमिष्टापूर्ते स
(गु) सूजेथामयं च अस्मिन्सद्धस्थे अद्युत्तरस्मिन्
विश्वेदेवा यजमानश्च सीदत ॥

बीज मंत्र

॥ उँ ब्रां ब्रीं ब्रौं सः ब्रुधाय नमः ॥

OM BRAAM BREEM BROOM SAH BHODHAY NAMAH

जप संख्या - 19000, जप समय - घड़ी पांच में।

5. गुरु (उत्तर में पीला, आष्ट दल)

ध्यान

उँ बृहस्पते अति यदया अर्हाद्

ब्रुमद्

य

तदस्मासुद्विणं

विभति

दीदयच्चदवस

श्रेहि

ऋतुमण्जनेषु ।

ऋतप्रजात

बृहस्पतये नमः ॥

बीज मंत्र

॥ उँ ग्रां ग्रीं ग्रौं सः गुरवे नमः ॥

OM GRAAM GREEM GROOM SAH GURAVAI NAMAH

जप संख्या - 10000 मंत्र जप | जप समय संध्या काल।

6. शुक्र (पूर्व में श्वेत, पंचकोण)

र

शुक्रमन्थस

शुक्राय नमः ॥

अञ्जात्परिश्रुतो रसं ब्रह्मणा

व्यपिवत् क्षत्रं पवः सोमं प्रजापतिः ।

ऋतेन सत्यमिन्द्रिय विपान् (गु)

शुक्रमन्थस इन्द्रस्येन्द्रिमिदं पवोऽमृतं मधु ॥

शुक्राय नमः ॥

बीज मंत्र

॥ उँ द्रां द्रीं द्रौं सः शुक्राय नमः ॥

OM DRAAM DREEM DROOM SAH SHUKRY NAMAH

जप संख्या - 6000 मंत्र जप | जप समय - सूर्योदय।

7. शनि (पश्चिम में काला, मनुष्य)

श

शनैश्चराय

नमः ॥

उँ शं नो देवीरभिष्टय आपो भवन्तु पीतये ।

शं वरोभि स्ववन्तु नः ॥

शनैश्चराय नमः ॥

बीज मंत्र

॥ उँ प्रां प्रीं प्रौं सः शनैश्चराय नमः ॥

OM PRAAM PREEM PROOM SAH

SHANESHCHARY NAMH

जप संख्या - 23000, जप समय - संध्या काल।

8. राहु (नैऋत्य कोण में काला मकर)

ध्यान

उँ कथा नश्चित्र आ भुवदूरी सदावृथः सखा ।

कथाशचिष्ठया

वृत्ता ॥

राहवे नमः ॥

बीज मंत्र

॥ उँ भ्रां भ्रीं भ्रौं राहवे नमः ॥

OM BHRAM BHREEM BHROOM RAHAVE NAMAH

जप संख्या - 18000 मंत्र जप | जप समय - रात्रि।

9. केतु (वायव्य कोण में काला इवज)

ध्यान

ॐ कृष्णवन्नके वते पेशो मर्या अपेशसे ।
समुषद्भिरजायथः ॥
केतवे नमः ॥

बीज मंत्र

॥ ॐ स्त्रां स्त्रीं स्त्रौं सः केतवे नमः ॥

OM STRAAM STREEM SAH KETVAI NAMAH

जप संख्या - 17000 मंत्र जप | जप समय - रात्रि में ।

प्रत्येक साधक या पाठक किसी न किस कूर ग्रह से प्रभावित रहता ही है। मंगल, शनि और राहु कूर ग्रह माने गए हैं तथा सूर्य और केतु विपरीत फल देने में विशेष सहायक होते हैं।

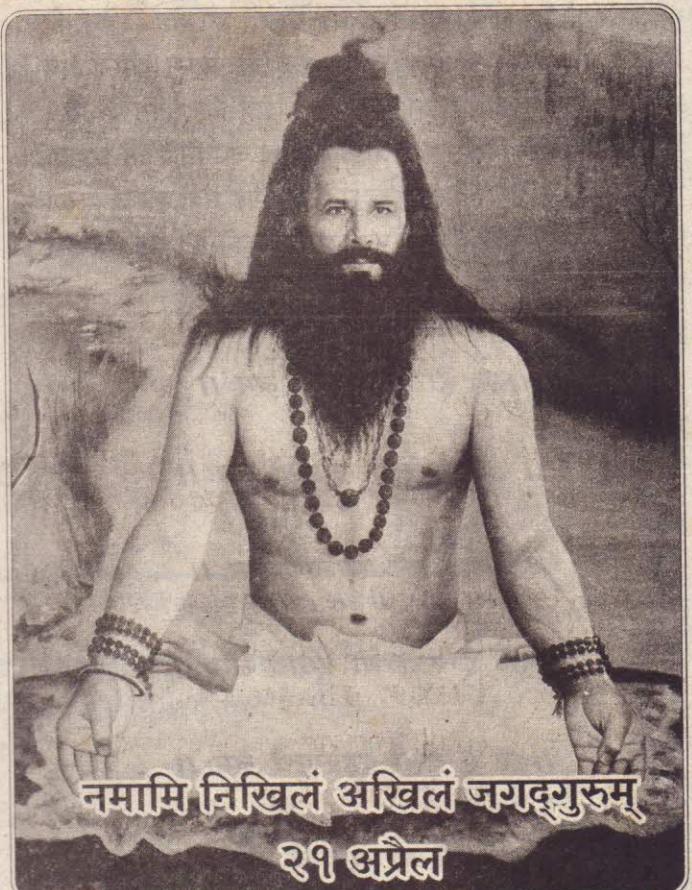
इन ग्रहों के प्रभाव से बाधाएं, मानसिक परेशानियां, कार्य में विलम्ब, असफलता, मानहानि, आर्थिक क्षति, बीमारी और कई प्रकार की समस्याएं नित्य पैदा होती रहती हैं। जब इस प्रकार की स्थिति देखें, तो यह जान लें, कि किसी न किसी कूर या पापी ग्रह का प्रभाव आपको विपरीत फल दे रहा है।

उपरोक्त विवेचन से यह यह स्पष्ट हो जाता है कि प्रत्येक ग्रह का ध्यान मंत्र और बीज मंत्र क्या है। जब ग्रह स्थिति अनुकूल नहीं होती है। तो साधक स्थान-स्थान पर भटकता है और ज्योतिषी अपनी गणना के अनुसार उसे सलाह देते हैं।

ज्योतिष का ज्ञान सागर अत्यंत विशाल है, सद्गुरुदेव ने ज्योतिष की पुस्तकों में लिखा है कि - 'कोई भी फलादेश करने से पहले ग्रह की स्थिति, उसकी दृष्टि, उसका योग साथ ही वह किसी ग्रह के साथ बैठा है इत्यादि हजारों प्रकार की गणनाओं को ध्यान में रखकर ही सही फलादेश जाना जा सकता है। साथ ही यदि कोई कहता है कि आपके लिये सूर्य अनुकूल नहीं है और कोई कहता है कि आपके लिये बुध अनुकूल नहीं है तो कोई और कोई ग्रह को आपके लिये प्रतिकूल बताता है। ऐसी स्थिति में आप क्या करें?

ऐसी स्थिति में अपने मन की शांति के लिये जो ग्रह आपको प्रतिकूल लगता है, उस ग्रह का सामान्य पूजन सम्पन्न कर ध्यान मंत्र तथा बीज मंत्र का जप ऊपर दी गई संख्या के अनुसार सम्पन्न कर लेना चाहिए।

लेकिन यह भी सत्य है कि जीवन में सभी ग्रहों की अनुकूलता होनी चाहिए जिस प्रकार आकाश मङ्डल में सभी ग्रह अपना-अपना कार्य करते हैं। उसी प्रकार मनुष्य के जीवन में सभी



नमामि निखिलं अखिलं जगद्गुरुम्
३१ अप्रैल

ग्रह अपना-अपना कार्य समान रूप से करने चाहिए। इसके लिये एक मात्र सर्वश्रेष्ठ उपाय सारे ग्रहों का अर्थात् नवग्रहों का पूजन और मंत्र तथा स्तोत्र पाठ आवश्यक है, इसी से पूर्ण अनुकूलता प्राप्त हो सकती है। अब ध्यान से नवग्रह पूजन विधि को देखें और उसके अनुसार साधना करें।

नवग्रह साधना विधि

नवग्रह शांति जीवन में भाग्योदय के द्वारा खोलती है इसके प्रभाव से ग्रहों के कुप्रभाव से बचा जा सकता है और परिवारिक जीवन में आने वाली बाधाओं से छुटकारा मिलता है और जीवन में उत्तिति के नये आयाम खुलते हैं और अपने लक्ष्य को पाने में असफल व्यक्ति भी जल्द ही पूर्णता को प्राप्त कर लेता है।

इस प्रयोग को प्रारम्भ करने से लिए सर्वप्रथम अपने पूजा स्थान में पीली धोती पहनकर बैठें एवं सामने बाजोट पर लाल बस्त्र बिछाकर उस पर नौ ढेरियां बनाएं, ये ढेरियां अक्षत की बनाएं, एक-एक ढेरी पर एक-एक 'नवग्रह गुटिका' स्थापित करें उसके सामने एक तांबे के पात्र में स्वास्तिक बनाकर उस पर 'नवग्रह यंत्र' स्थापित करें। यंत्र के ऊपर अक्षत चढ़ाएं और कुंकुम, पुष्प से पूजन करें। उसके बाद एक-एक गुटिका

पर प्रत्येक ग्रह का साधनात्मक मंत्र बोलते हुए ग्रह विशेष की गुटिका पर अक्षत चढ़ाएं। प्रत्येक ग्रह का निम्न सौम्य मंत्र बोलते हुए यह क्रिया करनी है। ग्रह विशेष की शांति के लिए लेख में पहले से दिये गए तांत्रोक्त मंत्र का जप निश्चित संख्या में करना है लेकिन दैनिक पूजा में निम्न ग्रह मंत्रों का उच्चारण करते हुए ग्रह विशेष गुटिका पर अक्षत चढ़ाने हैं। यह मंत्र इस प्रकार है -

सूर्य

॥ॐ हीं हीं सूर्याय नमः ॥

चन्द्र

॥ॐ ऐं कलीं सोमायै नमः ॥

मंगल

॥ॐ हुं श्रीं मंगलाय नमः ॥

बुध

॥ॐ ऐं स्त्रीं श्रीं बुधायै नमः ॥

गुरु

॥ॐ ऐं कलीं बृहस्पत्यै नमः ॥

शुक्र

॥ॐ हीं श्रीं शुक्रायै नमः ॥

शनि

॥ॐ ऐं हीं श्रीं शनैश्चरायै नमः ॥

राहु

॥ॐ ऐं हीं राहवे नमः ॥

केतु

॥ॐ केतवे ऐं सौ स्वहा॥

मन ही मन नवग्रह देवताओं का ध्यान करें। इस प्रकार नौ गुटिकाओं के ऊपर पुष्प चढ़ाएं और नवग्रह देवताओं को स्थापित करें और कहें कि आप स्थापित होकर मेरे सभी कार्य निर्विघ्न सम्पन्न करें और मुझे प्रत्येक कार्य में सफलता प्राप्त करायें। फिर यंत्र के समक्ष धी का दीपक जलाएं, उसके बाद निम्न मंत्र का 11 माला मंत्र जप नवग्रह माला से करें -

॥ॐ सं सर्वारिष्ट निवारणाय नवग्रहेभ्यो नमः ॥

इस प्रकार जप नियमित 11 दिन तक करें। 11 दिन के बाद सभी सामग्री को किसी मंदिर में चढ़ा कर आ जाएं।

नवग्रह स्त्रोत

स्वस्थ शरीर, आयु, यश, धन प्राप्ति तथा दुःख नाश के लिए वेद व्यास जी द्वारा वर्णित नवग्रह स्तोत्र का नित्य पाठ अत्यन्त लाभदायक माना गया है।

जपाकु सुमसंकाशं काश्यपेयं महाद्युतिम् ।
तमो रिं सर्वपापद्धं प्रणतोऽस्मि दिवाकरम् ॥
दद्विशं खतुषाराभं क्षीरोदार्णवस्मभवम् ।
नमामि शशिनं सोमं शम्भोर्मुकुटभूषणम् ॥
धरणीर्गर्भम्भूत विद्युत्कान्तिसमप्रभम् ।
कुमारं शत्क्रिहस्तं तं मंगलं प्रणमाम्यहम् ॥
पूर्णं ज्ञानं सदातं च सर्वं व्यापारं श्रेष्ठतम् ।
सदा सौम्यं सदाद देव बुधं मां प्रणमाम्यहम् ॥
देवानां च ऋषीणां च जुरुं कांचसङ्गिभम् ।
बुद्धिभूतं त्रिलोकस्य तं नमामि बृहस्पतिम् ॥
हिमकुन्दमृणालाभं दैत्यानां परमं जुरुम् ।
सर्वशस्त्रप्रवत्तरां भर्जवं प्रणमाम्यहम् ॥
नीलांजनसमाभासं रविपुत्रं यमाग्रजम् ।
छायामार्तण्डसम्भूतं तं नमामि शनैश्चरम् ॥
अर्धकायं महावीर्यं चन्द्रादित्यविमर्दनम् ।
सिंहिकागर्भम्सम्भूतं तं राहु प्रणमाम्यहम् ॥
पत्नाशपुष्पसंकाशं तारकाग्रहमस्तकम् ।
रौद्रं रौद्रात्मकं धोरं तं केतुं प्रणमाम्यहम् ॥
इति व्यासमुख्योद्गीत यः पठेत् सुसमहितः ।
दिवा वा यदि वा रात्रौ विघ्नशान्ति भविष्यति ॥
नरनारीनृपाणां च भवेद्दुःस्वप्ननाशनम् ।
ऐश्वर्यमत्तुलं तेषामारोग्यं एष्टिमर्थनम् ॥
ग्रहनक्षत्रजाः पीडास्तस्कराजिनिसमुद्र भवाः ।
ताः सर्वाः प्रशमं यान्ति व्यासो ब्रूते न संशयः ॥

इस प्रकार नवग्रह मंत्रों का जप, नवग्रह स्तोत्र का जप करने से ही साधना की पूर्णता सम्पन्न होती है। पुनः एक बार लिख रहा हूं कि यदि संभव हो तो नवग्रह स्तोत्र का पाठ नियमित रूप से अवश्य करें।

यह विशिष्ट साधना सामग्री तो उपहार स्वरूप ही है साथ ही इसके माध्यम से गुरु कार्य के रूप में आप अपने दो मित्रों को पत्रिका सदस्य बनाएं तथा कार्ड के 6 पर अपने दोनों मित्रों का पता लिखकर भेजें। कार्ड मिलने पर 570/- की वी.पी.पी. द्वारा आपको इस साधना की मंत्र सिद्ध प्राण प्रतिष्ठायुक्त सामग्री भेज देंगे तथा दोनों मित्रों को एक वर्ष तक नियमित रूप से पत्रिका भेजी जाएगी।

इस योजना का उद्देश्य आप द्वारा गुरु परिवार में दो नये सदस्यों को जोड़ना है। यदि आपके लिये यह संभव नहीं है तो आप की 570/- न्यौद्धारण राशि भेज कर साधना पैकेट प्राप्त कर सकते हैं।

8 मई 2009 कालाष्टमी

2 जून 2009 बटुक भैरव जयंती

आपका सबसे बड़ा शत्रु भय है

जीवन का पल-पल आशंका में गुजर रहा है

कब तक चलेगा ऐसे

भय का पूर्ण नाश संभव है, करें

तीव्र भैरव साधनाएं

भगार्यों अपने जीवन में भय, पराजय, आशंका, बाधा, आप जैसे शिव भक्त पर भैरव कृपा अवश्य शीघ्र होगी।

अगले दो माह भैरव साधनाओं के लिए विशेष उपयुक्त हैं, इनमें भी कालाष्टमी और बटुक भैरव जयंती किसी भी प्रकार की भैरव साधनाओं के लिए श्रेष्ठतम दिवस हैं। आगे तीन साधनाएं प्रस्तुत की जा रही हैं, जिन्हें वर्ष भर में कभी भी सम्पन्न कर सकते हैं, परन्तु इन दिवसों पर प्रारम्भ करना विशेष अनुकूल है।

कलियुग में भैरव साधनाएं जल्दी से सिद्ध होने वाली हैं। तंत्रलोक में भैरव शब्द की उत्पत्ति ‘भैरीमादिभिः अवतीति भैरव’ अर्थात् भीषण साधनों से भी रक्षा करने वाले भैरव हैं। शिव महापुराण में बताया गया है कि भैरव भगवान् शिव के

इससे यह स्पष्ट है कि सभी पूजा-पाठों की आरम्भिक प्रक्रिया में भैरवनाथ का स्मरण, पूजन, मंत्रजप आदि आवश्यक होते हैं। भैरव भगवान् का नाम सुनते ही बहुत से लोग तो भयभीत हो जाते हैं और कहते हैं कि ‘ये उग्र देवता हैं, अतः इनकी साधना में नहीं पढ़ना। इनकी साधना वाममार्ग से होती है, अतः हमारे लिए उपयोगी नहीं है।’ किन्तु यह उनका भ्रम-मात्र है। प्रत्येक देवता सात्त्विक, राजस और तामस स्वरूप वाले होते हैं; परन्तु ये स्वरूप उनके द्वारा भक्त के सिद्धि के लिए ही धारण और वरण किए जाते हैं।

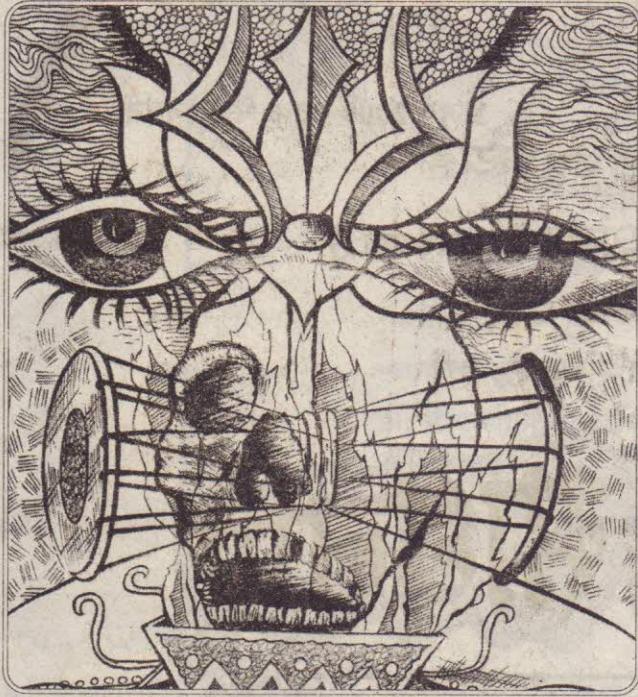
भैरवः पूर्णस्त्वो हि शंकरः परात्मनः ।
मूढास्ते वै न जानन्ति मोहिता शिव मायया ॥

तंत्र शास्त्र के प्रवर्तक आचार्यों ने प्रत्येक उपासना-कर्म की सिद्धि के लिए किये जाने वाले जप-पाठादि कर्मों के आरम्भ में भगवान् भैरवनाथ की आज्ञा प्राप्त करने का निर्देश दिया है। इसीलिए हम प्रार्थना करते हैं -

अतिक्रूर महाकार्य, कल्पान्त-दहनोपम! ।
भैरवाय नमस्तुभ्यमनुज्ञां दातुमहसि ॥

कार्यों की सिद्धि के लिए ही धारण और वरण किए जाते हैं। ‘जैसी स्थिति वैसी गति’ के अनुसार ये प्रभु इतने कृपालु एवं भक्तवत्सल हैं कि सामान्य स्मरण एवं स्तुति से ही प्रसन्न होकर भक्त के संकटों का तत्काल निवारण कर देते हैं।

श्री भैरवनाथ के अवतार का वर्णन पुराणों में विविध रूप से



व्यक्त हुआ है। ये कहीं स्वयं शिव हैं तो कहीं शिव के पुत्र, कहीं भगवान् विष्णु स्वरूप हैं तो अन्यत्र स्वतन्त्र देव। इसी प्रकार भैरव के उपासना विधानों के अनुसार भी इनके 'आकाश भैरव, स्वर्णाकर्षण भैरव' पाताल-भैरव जैसे नामों से भी अनेक विधान प्राप्त होते हैं।

शुक्ल यजुर्वेद संहिता का यह मंत्र इसकी पुष्टि करता है, इसमें शांत एवं रौद्र दोनों प्रकार के स्वरूपधारी रुद्र से प्रार्थना की गई है -

या ते रुद्र! शिवा तनुरघोराऽपापकाशिनी।
तथा नस्तमया शन्तमया गिरिशन्ताभि चाकशीहि॥

इतना ही नहीं, भैरव ही ब्रह्मा और विष्णु रूप भी हैं।

तंत्र और पुराणों के आधार पर ज्ञान होता है कि भैरव के अनेक अवतार हुए हैं। एकादशरुद्रावतार बावन भैरव, क्षेत्रपाल भैरव और बेताल आदि स्वरूपों के अतिरिक्त भगवती के प्रमुख दश महाविद्याओं के भैरव आदि अवतारों की परम्परा विश्वव्यापी है।

आपद उद्भारक बटुक भैरव साधना

'शक्ति संगम तंत्र' के 'काली खण्ड' में भैरव की उत्पत्ति के बारे में बताया गया है कि 'आपद' नामक राक्षस कठोर तपस्या कर अजेय बन गया था, जिसके कारण सभी देवता त्रस्त हो गये और वे सभी एकत्र होकर इस आपत्ति से बचने के बारे में उपाय सोचने लगे। अकस्मात् उन सभी की देह से एक-एक तेजधारा निकली और उसका युग्म रूप पंचवर्षीय बटुक के

रूप में प्रादुर्भाव हुआ। इस बटुक ने 'आपद' नाम के राक्षस को मारकर देवताओं को संकट मुक्त किया, इसी कारण इन्हें आपदुद्धारक बटुक भैरव कहा गया है।

साधना के लाभ

1. जीवन के समस्त प्रकार के उपद्रव, अड़चन और बाधाओं का इस साधना से समाप्त होता है।
2. जीवन के नित्य के कष्टों और परेशानियों को दूर करने के लिए भी यह साधना अनुकूल सिद्ध मानी गई है।
3. मानसिक तनावों और घर के लड़ाई-झगड़े, गृह क्लेश आदि को निर्मल करने के लिए यह साधना उपयुक्त है।
4. आने वाली किसी बाधा या विपत्ति को पहले से ही हटा देने के लिए यह साधना एक श्रेष्ठ उपाय है।
5. राज्य से आने वाली हर प्रकार की बाधाओं या मुकद्मों में विजय प्राप्त करने के लिए यह श्रेष्ठ साधना है।
6. इस साधना से साधक की सम्पत्ति को चोर-लुटेरों से भय नहीं रह जाता, चोर उस ओर नजर भी नहीं करते।

साधना विधान

इस साधना को किसी भी घटी अथवा बुधवार को प्रारम्भ करें। अपने सामने काले तिल की ढेरी पर 'बटुक भैरव यंत्र' को स्थापित करें। धूप, दीप जलाकर यंत्र का सिन्दूर से पूजन करें। दोनों हाथ जोड़कर बटुक भैरव का ध्यान करें -

भक्त्या नमामि बटुकं तरुणं त्रिनेत्रं,
काम प्रदान वर कपाल त्रिशूल दण्डान्।
भक्तार्ति नाश करणे दधतं करेषु,
तं कोस्तुभा भरण भूषित दिव्य देहम्॥

फिर अपने दाहिने हाथ में अक्षत के कुछ दाने लेकर अपनी समस्या, बाधा, कष्ट, अड़चन आदि को स्पष्ट रूप से बोल कर उसके निवारण की प्रार्थना करें। फिर अक्षत को अपने सिर पर से धुमाकर आसन के चारों ओर बिखेर दें। इसके पश्चात् 'बटुक भैरव माला' से निम्न मंत्र का एक संसाह तक नित्य रात्रि 11 माला जप करें -

बटुक भैरव मंत्र

॥ॐ हीं बटुकाय आपद उद्भारणाय कुरु
कुरु बटुकाय हीं उँ स्वाहा॥

साधना समाप्ति के बाद यंत्र व माला को जल में विसर्जित कर दें। शीघ्र ही अनुकूलता प्राप्त होती है।

साधना सामग्री पैकेट - 270/-

★ ★ ★ ★ ★ | ★ ★ ★ ★ ★ ★ ★ ★

उन्मत्त भैरव साधना

कश्मीर में अमरनाथ के दर्शन करने के बाद साधक उन्मत्त भैरव के भी दर्शन करते हैं, यह प्रसिद्ध भैरव पीठ में से एक पीठ है, शंकराचार्य ने स्वयं इस पीठ की स्थापना कर इस मूर्ति का प्राण संजीवन किया था। अमरनाथ मन्दिर के दक्षिण में लगभग आधा किलोमीटर आगे उन्मत्त भैरव की पीठ है। इस पीठ से सम्बन्धित सैकड़ों-हजारों चमत्कारिक कथाएं भारत में विख्यात हैं। कहते हैं कि यदि साधक श्रद्धा के साथ नंगे पांव इस पीठ तक पैदल जाकर उन्मत्त भैरव को भोग लगाता है, तो उसकी मनोकामना पूर्ण होती है। इस भैरव मन्दिर के पीछे के भाग में गर्म पानी का स्रोत है, इस पानी में नहाने से रोग दूर हो जाते हैं। उन्मत्त भैरव का स्वरूप ही रोग हर्ता और कल्याणकारी होता है।

साधना के लाभ

1. इस साधना को करने से दीर्घकाल से ठीक न हो रही बीमारियों पर भी नियंत्रण प्राप्त होता है, तथा शीघ्र ही रोग का निवारण होता है।
2. श्रेष्ठ संतान की प्राप्ति के लिए भी इस साधना को बहुत से व्यक्तियों द्वारा सफलता पूर्वक आजमाया गया है।

साधना विधान

इस साधना को अमावस्या अथवा किसी भी सोमवार की रात्रि से प्रारम्भ करना चाहिये। साधक सफेद धोती पहन कर वरदान दें। ऐसा बोलकर जल को भूमि पर छोड़ दें और तेल का एक दीपक प्रज्ज्वलित कर लें। दीपक के सामने ताबीज व मणि पर काजल एवं सिन्दूर से तिलक करें। फिर किसी ताम्र पात्र में 'उन्मत्त भैरव यंत्र' (ताबीज) को स्थापित 'सफेद हकीक माला' से दो सप्ताह तक निम्न मंत्र का नित्य 5 करें। ताबीज के सामने अक्षत की एक ढेरी बनाकर उसपर माला जप करें - 'शुभ्र स्फटिक मणि' स्थापित करें। दोनों हाथ जोड़कर भैरव ध्यान सम्पन्न करें-

**आद्यो भैरव भीषणो निगदितः श्रीकालराजः क्रमाद्
श्री संहारक भैरवोऽप्यथ रु रुश्चोन्मत्तको भैरवः ।
क्रोधश्चण्ड उन्मत्त भैरव वरः श्री भूत नाथस्तन्त्रो,
हाष्टो भैरव मूर्तयः प्रतिदिनं दद्युः सदा मंगलम् ॥**

फिर दाहिने हाथ में जल लेकर संकल्प करें कि - "मैं अमुक नाम, अमुक गोत्र का साधक अपने लिये उन्मत्त भैरव की साधना में प्रयुक्त हो रहा हूं, शिव के अवतार भगवान शिव



उन्मत्त भैरव मंत्र

॥उ३० उं उन्मत्ताय भ्रं भ्रं भैरवाय नमः ॥

दो सप्ताह बाद माला व मणि को जल में विसर्जित कर दें तथा ताबीज को सफेद धागे में पिरोकर रोगी के गले (यदि रोग मुक्ति के लिये प्रयोग किया गया हो) या स्त्री (यदि संतान प्राप्ति के लिए प्रयोग किया गया हो) के गले में धारण करा दें। एक माह धारण करने के बाद जल में विसर्जित करें।

साधना सामग्री पैकेट - 390/-

काल भैरव साधना

भैरव का नाम भले ही डरावना और तीक्ष्ण लगता हो, परन्तु अपने साधक के लिए तो भैरव अत्यन्त सौम्य और रक्षा करने वाले देव हैं। जिस प्रकार हमारे बॉडी गार्ड लम्बे डील डौल वाले भयानक और बन्दूक या शस्त्र साथ में रखकर चलने वाले होते हैं, पर उससे हमें भय नहीं लगता, ठीक उसी प्रकार उनकी वजह से भैरव भी हमारे जीवन के बॉडी गार्ड की तरह हैं, वे हमें किसी प्रकार से तकलीफ नहीं देते अपितु हमारी रक्षा करते हैं और हमारे लिये अनुकूल स्थितियां पैदा करते हैं। यह साधना सरल और सौम्य साधना है, जिसे पुरुष या स्त्री कोई भी बिना किसी अङ्गचन के सम्पन्न कर सकते हैं। मध्य प्रदेश के उज्जैन शहर में काल भैरव का मन्दिर है, जिसे 'चमत्कारों का मन्दिर' कहा जाता है। तंत्र अनुभूतियों की सैकड़ों सत्य घटनाएं इससे जुड़ी हुई हैं।

साधना के लाभ

1. तांत्रिक ग्रंथों में इसे शत्रु स्तम्भन की श्रेष्ठ साधना के रूप में एकमत से स्वीकार किया गया है।
2. यदि शत्रुओं के कारण अपने प्राणों को संकट हो अथवा परिवार के संदर्भों या बाल-बच्चों को शत्रुओं से भय हो, तो यह साधना एक प्रकार से आत्म रक्षा कवच प्रदान करती है। शत्रु की बुद्धि स्वतः ही भ्रष्ट हो जाती है और वह फेरेशान करने का सोचना ही बन्द कर देता है।
3. यदि आप ऐसी जगह कार्य करते हैं, जहां हर क्षण मृत्यु का खतरा बना रहता हो; एक्सीडेण्ट, दुर्घटना, आगजनी, गोली-बन्दूक, शस्त्र से या किसी भी प्रकार की अकाल मृत्यु का भय हो, तो 'काल भैरव साधना' अत्यन्त उपयुक्त सिद्ध होती है। वस्तुतः यह काल को टालने की साधना है।
4. स्त्रियां इस साधना को अपने बच्चों एवं सुहाग की दीर्घायु एवं प्राणरक्षा के लिये भी सम्पन्न कर सकती हैं।

साधना विधान

कालाष्टमी की रात्रि कालचक्र को अपने अधीन करने की रात्रि है, काली और काल भैरव दोनों की संयुक्त सिद्धि रात्रि है। इस साधना को 'कालाष्टमी' या किसी भी अष्टमी की रात्रि को प्रारम्भ करना चाहिये। साधक लाल धोती धारण कर लें, स्त्रियां लाल सांडी धारण कर सकती हैं। इसके बाद लाल रंग के आसन पर बैठ कर दक्षिण दिशा की ओर मुख कर लें। अपने सामने एक थाली में कुंकुम या सिन्दूर से 'ॐ भं भैरवाय नमः' लिख दें। फिर थाली के मध्य 'काल भैरव प्राप्ति' और 'महामृत्युंजय गुटिका' को स्थापित कर दें। लोहे की कुछ कीलें अपने पास पहले से ही मंगा कर रख लें। यदि आपके परिवार में सात सदस्य हैं, तो उन सबकी रक्षा के लिये सात कीलें पर्याप्त होंगी।

'यं त्रिंश्चित् भैरवाय नमः' का जप करें। फिर उन कीलों को अपने परिवार के जिन सदस्यों की रक्षा की कामना आपको करनी है, उनमें से प्रत्येक का नाम एक-एक कर बोलें और साथ ही एक एक कील यंत्र पर चढ़ाते जाएं। यह अपने लिये आत्म रक्षा बंध या कवच प्राप्त करने का प्रयोग है। फिर भैरव के निम्न स्तोत्र मंत्र का मात्र 108 बार उच्चारण करें -

यं वं यं यक्ष रूपं दश दिशि विदितं भूमि कम्पायमानं।
सं सं सं संहार मूर्ति शिर मुकुट जटा शेखरं चन्द्र विम्बम्।
दं दं दं दीर्घ कार्यं विकृत नख मुखं ऊर्ध्वरोर्यं करलं।
यं पं पं पाप नाशं प्रणमत सत्ततं भैरवं क्षेत्रपालम्॥

दांयें हाथ की मुट्ठी में काली सरसों लेकर निम्न मंत्र का 11 बार उच्चारण करें -

उ॒ँ काल भैरव, श्मशान भैरव, काल रूप काल भैरव! मेरी दैरी तेरो आहार रे। काढि करेजा चखन करो कट कट। उ॒ँ काल भैरव, बटुक भैरव, भूत भैरव, महा भैरव, महा भव विनाशनं देवता। सर्व सिद्धिर्भवत्।

फिर अपने सिर पर से सरसों को तीन बार धुमाकर सरसों के दानों को एक कागज में लपेट कर रख दें। इसके बाद निम्न मंत्र का एक घण्टे तक जप करें -

काल भैरव मंत्र

॥उ॒ँ भैरवाय वं वं वं हां क्षरो नमः॥

यह केवल एक दिन का प्रयोग है। जप के बाद साधक आसन से उठ जाये, और भैरव के सामने जो भोग रखा है उसे तथा सरसों के दानों, यंत्र व गुटिका के साथ लेकर किसी चौराहे पर रख आएं। लोहे की कीलें किसी निर्जन स्थान पर फेंक दें, यह शत्रु बाधा निवारण का विशिष्ट प्रयोग है।

साधना सामग्री पैकेट - 360/-

★ ★ ★ ★ ★ ★ ★ ★ ★ ★ ★ ★

उपरोक्त भैरव की तीनों साधनाओं के लिये चमत्कार शब्द तो बहुत छोटा है, जब शुद्ध मन से ये साधनाएं करते हैं तो रोम-रोम में तीव्रता आ जाती है, फल तो निश्चित रूप से प्राप्ति होता ही है।

◆ आषाढ़ शुक्ल प्रतिपदा से अष्टमी तक ◆

◆ दिनांक 23 जून 2009 से 29 जून 2009 तक ◆

इस बार गुप्त नवरात्रि में
दस महाविद्याओं में पांच तीव्र तांत्रोत्कृ
काली, छिन्नमस्ता, त्रिपुर मैरवी, धूमावती, बगलामुखी

दस महाविद्याओं की साधनाएं

दस महाविद्या भगवती जगदंबा के सबसे प्रचण्ड स्वरूपों में से हैं। वे संसार की आधार भूत शक्ति हैं जो कि ब्रह्मा, विष्णु, महेश द्वारा भी पूजित हैं। उन्हें आद्या शक्ति कहा गया है क्योंकि जब ब्रह्माण्ड की भी रचना नहीं हुई थी तब भी उनका आस्तित्व था और जब ब्रह्माण्ड विलीन हो जाएगा तब भी उनका आस्तित्व रहेगा। उनका न कोई आदि है न अंत, वे अनंत आद्य हैं।

दस महाविद्याएं अद्वितीय एवं श्रेष्ठतम् शक्ति संपन्न हैं तथा तत्काल सहायता करने में सक्षम हैं। जो साधक इन दस महाविद्याओं में से एक भी महाविद्या की साधना सफलता पूर्वक संपन्न कर लेता है वह जीवन में अद्वितीय एवं पूर्णता अवश्य प्राप्त कर पाता है। दिन प्रतिदिन के जीवन की सभी समस्याओं के निवारणार्थ महाविद्या साधना सर्वोत्तम उपाय है।

ये दस दिव्य महाविद्याएं हैं - काली, तारा, घोड़ी त्रिपुर सुंदरी, भुवनेश्वरी, छिन्नमस्ता, त्रिपुर मैरवी, धूमावती, कमला, बगलामुखी एवं मातंगी।

1. काली महाविद्या साधना

काली उग्र एवं तुरंत प्रभाव देने वाली महाविद्या है जिनकी साधना गृहस्थ एवं योगी भली प्रकार से संपन्न कर सकते हैं। महाकाली को प्रसन्न करने, उनके प्रत्यक्ष दर्शन प्राप्त करने, मुकदमें में सफलता, शत्रुओं पर पूर्ण विजय, राज्य बाधा समाप्त करने, सब प्रकार के भय निवारण, घर में कलह एवं बीमारी को जड़मूल से समाप्त करने हेतु काली साधना शीघ्र प्रभावदायक है।

इस साधना को किसी भी रविवार से या अष्टमी, चतुर्दशी, अमावस्या या पुष्य नक्षत्र से आरंभ किया जा सकता है। यह साधना रात्रि में ही करें। स्नान कर काले वस्त्र धारण कर दक्षिण दिशा की ओर मुख कर काला वस्त्र बिछा कर गुरु चित्र एवं एक पात्र में महाकाली यंत्र स्थापित करें। यंत्र को जल से स्नान कराएं, सिंदूर लगाएं एवं संकल्प लें। फिर निम्न ध्यान मंत्र का एक बार जप करें।

श्वरुढाम्महा भीमांधोर दष्ट्रां हसन्मुखीम्, चतुर्भजं खडग मुण्डवश मयकरां शिवाम् ॥१॥ मुण्डमाला धरदेवी ललज्जिवा निवग्म्बराम्, एवं संचिन्तयेत्कालीं श्मशानलय वासिनीम् ॥२॥

फिर काली हकीक माला से निम्न मंत्र का जप करें।

ॐ ह्रीं ह्रीं हूं हूं क्रीं क्रीं क्रीं दक्षिण कालिके
क्रीं क्रीं क्रीं हूं हूं ह्रीं ह्रीं ह्रीं।

साधना सामग्री पैकेट - 300/-

☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆

2. छिन्नमस्ता साधना

'छिन्नमस्ता भवेत्सुखी' अर्थात् जो छिन्नमस्ता साधना संपन्न कर लेता है वह सभी दृष्टियों से सुखी रहता है। यह साधना समस्त दोषों एवं पापों का नाश करने वाली है। इसके द्वारा सभी संकटों का निवारण, बाधाओं की समाप्ति, राज्य बाधा समाप्ति तथा शत्रु स्तम्भन किया जा सकता है। यह तीव्र वशीकरण युक्त साधना है तथा इसके द्वारा राजनैतिक सफलता, लोहे के समान दृढ़ता, वाक् सिद्धि भी प्राप्त कर सकते हैं।

यह साधना कृष्णपक्ष में मंगलवार के दिन अर्द्धरात्रि के समय संपन्न करनी चाहिए। यह जरूरी नहीं कि अर्द्धरात्रि के समय साधना आरंभ करें अपितु मंत्र जप में अर्द्धरात्रि व्यतीत होनी चाहिए। रात को दस बजे आरंभ कर अर्द्धरात्रि के बाद मंत्र जप पूर्ण करें।

स्नान करके पीले वस्त्र पहनें। दक्षिण दिशा की ओर मुख कर पीले आसन पर बैठें। बाजोट पर पीला वस्त्र बिछाएं तथा सिंदूर से रंगे चावल की ढेरी पर छिन्नमस्ता यंत्र स्थापित करें। एक कागज पर कुंकुम से अपनी बाधा या समस्या को लिखकर यंत्र के नीचे रख दें। छिन्नमस्ता देवी का ध्यान निम्न मंत्र के उच्चारण के साथ करें।

भास्वन्मण्डल मध्यगांचित शिरशिष्ठज्ञं
विकीर्णालक्ष्म्, स्फारास्यंप्रपिद् गलत्स्व-रुद्धिरंवामे
करेविभृतीम्। याभासक्त रति स्मरोपरि गतां संदयो
निजे डाकिनी, वर्णनयौपरिदृश्यं मोद्कलितां श्री
छिन्नमस्तां भजे।

फिर रक्ताभ माला से निश्चित संख्या में मंत्र जप करें।

ॐ श्री हीं हीं कलों ऐं वज्र वै रोचनीये हीं
हीं फट् स्वाहा।

साधना सामग्री पैकेट - 360/-

☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆

3. त्रिपुर भैरवी साधना

काल भैरव की ही प्रचण्ड शक्ति है त्रिपुर भैरवी। इनकी साधना द्वारा भय का नाश होता है, भूत प्रेत बाधा एवं शारीरिक दुर्बलता समाप्त होती है। आत्म विश्वास, बल, वीर्य प्राप्ति स्वरूप इस साधना के अनुसार प्रबल, शत्रु द्वारा किया गया कैसा भी प्रयोग हो, इस साधना द्वारा उसका असर समाप्त हो जाता है।

इस साधना को रविवार सूर्योदय से पहले प्रारंभ करें। स्नान कर लाल वस्त्र पहनें तथा लाल आसन पर दक्षिण की ओर मुख करके बैठें। बाजोट पर लाल वस्त्र बिछा कर उस पर त्रिपुर भैरवी यंत्र स्थापित करें। लाल पुष्प एवं कुकुम अर्पित करके निम्न ध्यान मंत्र का उच्चारण करें।

उद्यद्भानु सहस्रं कांतिम रूणक्षीमां शिरोमालिकां
रक्तालिस पर्योधरा जपपटी विद्यमनीर्ति व्वरम्।
हस्ताब्जैर्दधतीन्त्रिनेत्र - विल सद्वक्त्रार विदश्चिर्यं
देवीम्बद्ध हिमांशुरत्नं मुकुटां व्वंदे समंद स्मिताम्॥

फिर विजय माला से निम्न मंत्र का जप करें।

हसैं हसकरीं हसैं।

साधना सामग्री पैकेट - 300/-

☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆

4. धूमावती साधना

धूमावती का स्वरूप अत्यंत तीव्र एवं डरावना है - क्रोध मुद्रा, तीव्र नेत्र, खुले केश। परंतु यह प्रचण्ड स्वरूप है शत्रुओं के हृदय में भय पैदा करने के लिए। धूमावती महाविद्या शत्रुओं के लिए काल स्वरूप है। भूत-प्रेत, चोर, राक्षस, सर्प, जंगली जानवरों से रक्षा हेतु यह साधना संपन्न कर सकते हैं। संपत्ति, संतान, व्यापार एवं जीवन रक्षा हेतु यह साधना अद्वितीय है।

यह साधना कृष्ण पक्ष के गुरुवार से प्रारम्भ करें। स्नान कर काले वस्त्र पहनें। काले आसन पर रात्रि को दक्षिण दिशा की ओर मुख करके बैठें। बाजोट पर काला वस्त्र बिछाकर धूमावती यंत्र स्थापित करें। गुरु पूजन करके निम्न ध्यान मंत्र का उच्चारण करें।

विवर्ण चंचला दुष्टा दीर्घा च मर्लिन्म्बरा

३५ 'अप्रैल' 2009 मंत्र-तंत्र-यंत्र विज्ञान '42'

विमुक्त कुंतला रुक्षा विधवा विरलद्विजा
काङ्क्ष द्वजरत्तास्ठां विलम्बितपर्योधरा
शूर्पहस्ताति रुक्षाक्षा धूपहस्ता वरान्विता
प्रवृद्धधोणा तु मृशंकुटिला कुटिलेक्षणा
क्षुत्पिपासार्दित नित्यम्मयद्वा कलहासपदा।

फिर काली हकीक माला से निम्न मंत्र का जप करें।

धूं धूं धूमावती ठः ठः

साधना सामग्री पैकेट - 330/-

☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆

5. बगलामुखी साधना

बगलामुखी को विशक्ति कहा गया है क्योंकि यह काली, कमला और भुवनेश्वरी का संयुक्त स्वरूप है। इन्हें ब्रह्मास्त्र भी कहा गया है। ये पीतांबरा देवी हैं जो दुःख, कष्ट, अनिष्ट एवं शत्रुओं से साधकों की रक्षा करती हैं। अपने विपरीत व्यक्तियों को अपने अनुरूप बना लेना इस साधना द्वारा सहज संभव है। राज्य बाधा समाप्ति तथा घर में सुख शांति के लिए भी यह साधना उत्तम है।

यह साधना मंगलवार को अर्द्धरात्रि से प्रारंभ करनी चाहिए। स्नान कर पीले वस्त्र धारण करें। पूर्व की ओर मुख करके बैठें। बाजोट पर हल्दी से रंगे चावलों की ढेरी पर बगलामुखी यंत्र स्थापित करें। देवी का निम्न ध्यान मंत्र उच्चरित करते हुए पीले पुष्प अर्पित करें।

सौवर्णसिन

संस्थिता

पित्रनव्यनां

पीतांशुकोल्लातिनीयम्, हेमावांगस्त्रं शशांकमुकुटां
सच्चम्कस्त्रम्युताम्॥ हस्तैर्मुदगरपाशवज्जरसन्ना
सम्बिभृती भूषणै, व्याप्तांगी, बगलामुखी त्रिणगतां
संस्तम्भीन चित्येत्॥

फिर हरिद्रा माला से निम्न मंत्र का जप करें।

ॐ हत्तीं बगलामुखीं सर्व दुष्टानां वाचं मुखं पदुं
स्तंभय जिह्वां कीलय बुद्धि विनाशय हीं ॐ स्वाहा।

साधना सामग्री पैकेट - 390/-

☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆

प्रत्येक साधना की 11 माला मंत्र जप आवश्यक है। साधना काल में दीपक जलता रहना चाहिये। साधना अपने कल्याण के उद्देश्य से सम्पन्न करनी चाहिये। गुप्त नवरात्रि की नवमी के दिन (30 जून 2009) को समस्त सामग्री जल में विसर्जित कर दें। नवरात्रि के अलावा अन्य मुहूर्तों में भी ये साधनाएं सम्पन्न की जा सकती हैं।

शिव्य धर्म

- ❖ एक शिव्य गुरु चरणों में ही सभी लोकों के पावन तीर्थों, पवित्र गंगा सागर तथा सभी देवी देवताओं का प्रत्यक्ष अनुभव करता है। उसके लिए गुरु चरणों की पूजा आराधना से बढ़कर कोई अन्य साधना नहीं।
- ❖ देवी देवताओं से साक्षात्कार गुरु कृपा द्वारा ही संभव है, इसलिए अन्य देवी देवताओं की साधना करने की अपेक्षा एक शिव्य गुरु सेवा तथा गुरु साधना द्वारा ही गुरु को प्रसन्न करने का प्रयत्न करता है।
- ❖ शिव्य को यह प्रदर्शन करने की या गुरु को बताने की आवश्यकता नहीं है कि वह कितनी सेवा कर रहा है। गुरु की पैनी दृष्टि तो हर समय शिव्यों पर बनी रहती है और गुरु कहीं भी हो उसे सब ध्यान रहता है कि कौन शिव्य क्या कर रहा है? अगर शिव्य समर्पण भाव से सेवा करता है तो अवश्य ही गुरु के हृदय पटल पर उसका नाम अंकित होता है।
- ❖ गुरु सेवा, गुरु में आस्था, गुरु के प्रति समर्पण ये तीन ही माध्यम हैं गुरु के हृदय में उतरने के, और जब ऐसा होता है तो गुरु स्वयं अपना सारा ज्ञान शिव्य में उतार देता है। इसलिए शिव्य बिना किसी और बात की विंता किए निरंतर गुरु में अपनी आस्था ढढ़ करता रहता है।
- ❖ शिव्य के लिए गुरु आदेश से बड़ा मंत्र नहीं, गुरु सेवा से बड़ी कोई साधना नहीं तथा गुरु चरणों से बड़ा कोई यंत्र नहीं। वह केवल यह प्रतीक्षा करता रहता है कि कब गुरु उसे आज्ञा दें और कब वह उनकी आज्ञा का पालन करते हुए उनके बताए कार्य को पूरा करे।
- ❖ गुरु के हृदय को व्यर्थ छल, आड़म्बर, धन, दिखावे आदि से नहीं जीता जा सकता। उनको शिव्य से कुछ आकांक्षा ही नहीं केवल प्रेम के अश्रु ही अगर शिव्य उनके चरणों में अपित करता है तो गुरु प्रसन्न हो जाते हैं।
- ❖ शिव्य गुरु को एक मात्र साधारण मनुष्य के रूप में नहीं देखता अपितु एक ऐसे दिव्य व्यक्तित्व के रूप में उनकी पूजा आराधना करता है; जिसमें ब्रह्मा, विष्णु, महेश तथा आद्याशक्ति पूर्ण रूप से समाहित हैं।
- ❖ गुरु चरणों में स्वयं को पूर्णतः तल्लीकृत करते सदा भावधार में रहोकर शिंखा रहा है।



गुरु वाणी

★ यहां शिष्य के लिए जरूरी है कि वह समर्पित और गुरु सेवा में संलग्न रहे वहीं गुरु का भी यह कर्तव्य कि वह शिष्य को पूर्णता के साथ अपनाए, उसको ज्ञान और चेतना दे, यहां उसके जीवन में बाधाएं, कठिनाइयां आए उनको दूर करे और उसके बाद देखे कि वह दीक्षा के योग्य है या नहीं।

★ शिष्य और गुरु एक ही शब्द है, जो अलग - अलग शब्द नहीं हैं न ही इनमें भेद किया जा सकता है।

★ आध्यात्म जीवन की ऐसी पगड़ंडी है, एक ऐसा रास्ता है जिस पर गुरु के प्रति समर्पण एवं श्रद्धा के सहारे ही चला जा सकता है। यहां पर दूसरी कोई युक्ति काम नहीं करती।

★ यह शिष्य धर्म है कि वह जीवन के अंतिम क्षण तक सचेष्ट, चौबीस घंटे, प्रत्येक क्षण गुरु सेवा में व्यतीत करे। ऐसा ही जीवन जीने पर किसी भी प्रकार की साधना में पूर्णता प्राप्त हो सकती है, उच्च से उच्च दीक्षा प्राप्त हो सकती है।

- ★ पूर्णमिदः पूर्ण मिदं, पूर्णात्पूर्ण मुदच्यते,
पूर्णस्य पूर्णमादाय, पूर्णमेवाव शिष्यते ।
- शिष्य तभी पूर्ण होगा जब अपने आप में कुछ सखे
नहीं, सब गुरु चरणों में न्यौछावर कर दे । खाली
दिये में तेल भरा जा सकता है, जो पहले से भरा
हुआ है, अभिमान, क्रोध, घमंड, लोभ, मोह से,
उसमें किसी भी प्रकार ज्ञान सूपी तेल की बूंद
नहीं डाली जा सकती ।
- ★ इस रास्ते पर न अवहेलन चलती है,
न आङ्गा उल्लंघन चलता है, न निर्मल
पात्रता चलती है, न न्यूनता चलती
है और न समर्पण में किसी प्रकार की
कमी चलती है । ऐसा ही जीवन का ढूढ़
निश्चय ही, और ढूढ़ निश्चय ही ज हो
यह कायान्वित हो तभी आप जीवन में वह
चीज प्राप्त कर पाएंगे, जो कि पूर्णता का सूचक है ।
- ★ अगर गुरु में पूर्ण रूप से समर्पण एंव श्रद्धा है तो गुरु बाध्य हो जाते हैं कि शिष्य को सफलता
प्रदान करें । फिर शिष्य किसी भी हालत में असफल नहीं हो सकता क्योंकि गुरु स्वयं उसकी
सफलता का उत्तरदायित्व अपने ऊपर ले लेते हैं ।
- ★ जब शिष्य पूर्ण समर्पण करता है तो वह गुरु से एकाकार हो जाता है तथा गुरु की समस्त
शक्तियां उसे ऊपर उठाने की ओर प्रयत्नशील हो जाती हैं ।

यदि जीवन मैं उत्साह, आनंद बहीं है

तो अब कीजिये

रम्मा अप्सरा दिवस
26 मई 2009

सुवर्ण गौरी साधना

जो अति आनंद, वैभव, अक्षय धनदात्री, सौभाग्य प्रदात्री देवी हैं ।

जीवन मैं उत्साह, आनंद निरन्तर सफलता मिलने से, कार्य सिद्धि होने से तथा पारिवारिक सुख शांति, अनुकूलता से ही प्राप्त होता है, “सुवर्ण गौरी” आनंद की देवी हैं, जौ एक बार सिद्ध हो जाने पर साधक के जीवन मैं हर समय अपना प्रभाव देती रहती हैं।

“सुवर्ण गौरी साधना” जीवन के रेगिस्टर मैं अमृत कुण्ड के समान है।

साधक जब साधना के क्षेत्र में प्रवेश करता है, तो उसका प्रथम लक्ष्य साधना में तत्काल सफलता प्राप्त कर, अपने जीवन की विसंगतियों को हटा कर जीवन में एक नवीनक्रम का निर्माण करना होता है। साधक की यही इच्छा रहती है कि उसे अपने जीवन का आनन्द पूर्ण रूप से प्राप्त हो, अपने कार्यों में तत्काल सफलता मिले। यदि वह पुरुष हो तो सदैव यही चाहता है कि उसका गृहस्थ जीवन विशिष्ट हो, पत्नी विचारों के अनुकूल, उसकी सहयोगी और उसे पूर्ण आनन्द प्रदान करने वाली हो, इसी प्रकार प्रत्येक स्त्री भी यही चाहती है, कि उसका पति, पति होने के साथ-साथ उसका मित्र भी हो, जो उसकी भावनाओं को पूर्ण रूप से समझे, उसके जीवन में कमी न आने दे और श्रेष्ठ संतान हो, जीवन बढ़ने के साथ-साथ सुख बढ़ता रहे।

सुवर्ण गौरी साधना

पूज्य गुरुदेव की लीला को भी हर कोई समझ नहीं पाता है। जब वे अपने मूड में होते हैं, तो फिर बात ही कुछ और बनती है, यदि ‘दुर्गा’ के सम्बन्ध में कुछ बोलने का उनका मूड आता है, तो वे इस सम्बन्ध में हजारों मन्त्रों सहित ऐसी

साधनाएं, ऐसा ज्ञान प्रकट करते हैं, कि आश्चर्य शब्द भी छोटा पड़ जाता है, कृष्ण के सम्बन्ध में उनका व्याख्यान, उनका ज्ञान शब्दों में नहीं बांधा जा सकता है। एक बार उनके एक प्रिय शिष्य ने कहा, कि गुरुदेव मेरे जीवन में उत्साह नहीं है, मैं कोई भी काम करने का विचार करता हूं, तो मुझे पहले असफलता का ही ध्यान आता है, जिन लोगों को मैंने बार-बार सहयोग दिया, उनसे समय पड़ने पर थोड़ा भी सहयोग मांगता हूं, तो वे लोग कन्नी काट जाते हैं, घर-परिवार के लोग भी असंतुष्ट ही रहते हैं... और तो और मेरी पत्नी भी मुझे नाकारा-बेकार समझती है, हम दोनों के विचारों में कोई ताल-मेल नहीं है, मेरे लिए कोई सुबह कोई नया उत्साह लेकर नहीं आती है।

शिष्य ने पूछा, ‘मैंने ऐसे कौन से दोष किये हैं कि मेरे जीवन में ऐसी स्थिति बन गई है? क्या इसका कोई उपाय है अथवा मुझे अपना जीवन इसी प्रकार काटना पड़ेगा?’

इस पर गुरुदेव ने कहा कि तुम जो कह रहे हो, वह केवल तुम्हारे ऊपर ही लागू नहीं होता है। जीवन जीना और काटना दोनों अलग-अलग बातें हैं। सौ में अस्सी लोग तो जीवन का

भार उठाते हुए चल रहे हैं, कभी-कभी कोई प्रसन्नता की किरण आ जाती है, अन्यथा जीवन में निराशा ही बनी रहती है इसमें दोष तो आपका खुद का ही है। साधना में सबसे पहले आवश्यकता इस बात की है, कि जीवन में उत्साह का निर्माण हो, हर सुबह नवीन लगे, मन में आनन्द की लहर बने।

पूज्य गुरुदेव ने सुवर्ण गौरी साधना का जो विधान बताया, और जिन शिष्यों ने इसे सामान्य रूप से भी सम्पन्न करके अपने जीवन को नया आयाम दिया, उसके बारे में बहुत कुछ लिखा जा सकता है।

सुवर्ण गौरी रहस्य

‘सुवर्ण गौरी’ शक्ति का सौभाग्य स्वरूप है, जो कि अप्सरा कही जाती है। सुवर्ण गौरी का विशेष नाम ‘शिवदूती’ भी है, जो कि भगवान शिव की कृपा एवं वर प्राप्त कर अपने सर्वांग स्वरूप में प्रिया है। ‘आनन्द मंदाकिनी’ शिव की शक्तियों के सम्बन्ध में एक प्रामाणिक ग्रन्थ है, जिसमें इस साधना के सम्बन्ध में पूर्ण विधि-विधान सहित लिखा गया है। इस ग्रन्थ में सुवर्ण गौरी के स्वरूपों के सम्बन्ध में लिखा है, कि इसके सोलह स्वरूपों की सिद्धि जो साधक प्राप्त कर लेता है, वह संसार का अधिपति होने का सौभाग्य प्राप्त कर सकता है। सुवर्ण गौरी के ये सोलह स्वरूप हैं -

- | | |
|-----------------------|-------------------------|
| 1. अमृताकर्षणिका, | 2. रूपाकर्षणिका, |
| 3. सर्वार्थसाधिनी, | 4. अनंगकुसुमा, |
| 5. सर्वदुःखविमोचनी, | 6. सर्वसिद्धिप्रदा, |
| 7. सर्वकामप्रदा, | 8. सर्वविघ्ननिवारणी, |
| 9. सर्वस्तम्भनकारिणी, | 10. सर्वसम्पत्तिपूर्णी, |
| 11. चित्ताकर्षणिका, | 12. कामेश्वरी, |
| 13. सर्वमंत्रमयी, | 14. सर्वानन्दमयी, |
| 15. सर्वेशी, | 16. सर्ववासिनी। |

इन सोलह स्वरूपों में से यदि एक स्वरूप की सिद्धि भी हो जाय, तो जीवन का अन्धकार दूर हो जाता है, आगे साधना क्रम में सम्पूर्ण रूप से पूजन का विधान दिया जा रहा है, यदि कोई साधक किसी एक विशेष स्वरूप की ही साधना करना चाहता है, तो उसे भी कर सकता है।

सुवर्ण गौरी-प्रिया स्वरूप

प्रिया का तात्पर्य है, जो आपको प्रिय हो, जिसके कहे अनुसार आप कार्य करें, जिसके पास रहने से आपको आनन्द का अनुभव हो, जो आपके जीवन में उत्साह भरे, आपकी काम शरीर की अभिव्यक्ति, और साधना को काम, वासना भाव से कभी भी सिद्ध करने का प्रयास न करें, इसे प्रेम भाव से प्रिया रूप में सिद्ध करने का प्रयास करें।



कमियों को हटाए, और आपके प्रति समर्पण का भाव हो।

‘आनन्द मंदाकिनी’ ग्रन्थ में लिखा है, कि सुवर्ण गौरी साधना सम्पूर्ण रूप से तो सिद्ध प्रिया रूप में ही हो सकती है, तब यह विशिष्ट शक्ति जीवन में हर स्थिति में आपके कार्यों को उचित परिणाम, अभीष्ट फल प्राप्त करा सकती है। सिद्धि होने पर आपको हर समय यह ध्यान रहता है, कि यह शक्ति आपमें

आपकी सहयोगिनी रूप में विद्यमान है, आप अपने मन के भावों को प्रकट कर सकते हैं, अपनी इच्छाओं को बिना संकोच बता सकते हैं, और अपनी इच्छाओं की पूर्ति का है, यदि कोई साधक किसी एक विशेष स्वरूप की ही साधना सरल, सहज मार्ग प्राप्त कर सकते हैं।

ज्यादातर व्यक्ति प्रेम और काम को एक ही रूप में देखते हैं, जो कि बिलकुल गलत है, प्रेम मन की अभिव्यक्ति है, और

साधना-विधान

26 मई 2009, मंगलवार को रम्भा अप्सरा दिवस आ रहा है। सुवर्ण गौरी साधना सम्पन्न करने का यह श्रेष्ठ दिवस है। इसके अतिरिक्त साधक इस साधना को किसी भी सोमवार को सम्पन्न कर सकता है।

साधना इस विशेष मुहूर्त से पहले प्राण प्रतिष्ठित साधना सामग्री मंगा लें, इस दिवस पर रम्भा साधना, अप्सरा साधना भी सम्पन्न की जा सकती हैं सुवर्ण गौरी साधना के लिये तो यह अति उत्तम मुहूर्त है।

इस साधना के लिए ‘सुवर्ण गौरी पद्म’, ‘सोलह सिद्ध शक्ति काम्य फल’ तथा ‘सुवर्ण गौरी अनंग माला’ आवश्यक है। साधना में पीले रंग का प्रयोग विशेष रूप से होता है, अतः साधक-साधिका पीले रंग की धोती धारण करें, पीले रंग के आसन पर बैठ कर साधना करें।

इसके अतिरिक्त साधना हेतु शुद्ध धी का दीपक, अष्ट गन्ध, सिन्दूर, चन्दन, केवड़ा मिश्रित सुगन्धित जल, चावल, पीले पुष्प, ताम्रपात्र, नैवेद्य हेतु लड्डू इत्यादि की व्यवस्था पहले से कर लें। पूजा-स्थान में, अर्थात् जहां आप साधना कर रहे हैं, वहां धी का दीपक तथा सुगन्धित अगरबत्तियां जला दें, अपने आसन पर बैठ कर पूर्व दिशा की ओर मुंह करें, तथा सामने एक पात्र में ‘सुवर्ण गौरी पद्म’ स्थापित करें, और सुवर्ण गौरी का ध्यान करते हुए आह्वान करें। यह मूल रूप से सुवर्ण गौरी का स्वागत मंत्र है-

स्वागत मंत्र

**गौरी दर्शनमिच्छन्ति देवाः स्वामीष्टसिद्धये ।
तस्य ते परमेशायै स्वागतं स्वागतं च ते ॥
कृतार्थेऽनुग्रहीतोऽस्मि सकलं जीवितं मम ।
आगता देवि देवेशि सुस्वागतमिदं एउः ॥**

इस स्वागतमंत्र का पांच बार जोर-जोर से उच्चारण कर ‘सुवर्ण गौरी पद्म’ पर अष्ट गंध, सिन्दूर चन्दन, इत्र, पीले पुष्प चढ़ायें और सामने एक पात्र में नैवेद्य अर्पित करें। यदि आपके पास सोने की अंगूठी अथवा कोई स्वर्ण आभूषण हो तो ‘सुवर्ण गौरी पद्म’ के सामने उस पात्र में आभूषण को धो कर रखना चाहिए।

अब एक-एक सोलह सिद्ध शक्ति काम्य फल स्थापित करें, ये स्वर्ण गौरी के सोलह शक्ति स्वरूप हैं, इस हेतु चावल की सोलह ढेरियां बना कर प्रत्येक शक्ति का नाम लें, और आह्वान करते हुए एक-एक ‘सिद्ध शक्ति काम्य फल’ स्थापित करें -

ॐ सुवर्ण गौरी अमृताकर्षणिका पूजायामि नमः ।
ॐ सुवर्ण गौरी स्त्रयाकर्षणिका पूजायामि नमः ।
ॐ सुवर्ण गौरी सर्वार्थसाधिनी पूजायामि नमः ।
..... क्रमशः ।

इस प्रकार प्रत्येक शक्ति का आह्वान करते हुए सुवर्ण गौरी सिद्धि शक्ति काम्य फल स्थापित करें और प्रत्येक शक्ति को पुष्प, इत्र, चावल चढ़ाएं।

जब यह स्थापना क्रम पूरा हो जाय तो सात दीपक जलायें, तथा सुवर्ण गौरी मंत्र का जप ‘अनंग माला’ से प्रारम्भ करें।

सुवर्ण गौरी मंत्र

॥ युं क्षुं हीं सुवर्ण गौरी सर्वान्कमान्देहि हीं क्षुं युं नमः ॥

अब इस मंत्र की सात माला जप करना है, और जप प्रारम्भ करने पहले दायें हाथ में जल ले कर संकल्प लें, ‘त्रैलोक्यमाहेने चक्रे इमाः प्रकट सुवर्ण गौरी’ इस प्रकार प्रत्येक माला मंत्र जप के पश्चात् यह संकल्प जल लेकर करना है। जब सात माला मंत्र जप पूरा हो जाय, तो एक थाली में सात दीपक ले कर आरती सम्पन्न करें, तथा प्रसाद ग्रहण करें।

साधना क्रम के विधान में यह आवश्यक है, कि साधक रात्रि को वहीं भूमि पर शयन करें, कई साधकों को तो प्रथम बार की साधना में ही रात्रि में विशेष अनुभूति होती है, स्वप्न में साकार रूप में सिद्ध हो कर सुवर्ण गौरी उपस्थित होती हैं, कमरे में एक पीला प्रकाश फैल जाता है, ऐसे समय साधक तत्काल उठ खड़ा हो, और अपना मन चाहा वर मांग ले।

यह साधना तीन सोमवार तक नियमित रूप से अवश्य करनी चाहिए। रम्भा दिवस के दिन मंगलवार है उसके बाद अगले सोमवार और तीसरी बार उसके अगले सोमवार अर्थात् कुल तीन बार यह साधना सम्पन्न करनी है। प्रत्येक साधना-क्रम में सुन्दर अनुभव प्राप्त होता है। एक बार सुवर्ण गौरी सिद्ध होने पर पूरे जीवन भर सहयोग प्राप्त होता रहता है। साधक के मन में एक प्रिय भाव हमेशा बना रहना चाहिए। जो साधक सिद्धि प्राप्त होने पर गर्व, घमण्ड, अभिमान से भर जाते हैं, और गलत कार्यों की कामना करने लगते हैं, उनकी सिद्धि उतनी ही शीघ्र नष्ट भी हो जाती है।

सुवर्ण गौरी साधना तो साधक के मन-उपवन का ऐसा सुगन्धित पुष्प है, जिसकी आनन्दमय गन्ध एक बार पूर्ण रूप से प्राप्त हो जाय, तो पूरे जीवन, प्राणों में आनन्द का संचार हो जाता है।

कर्म और भाग्य का संयोग
बदल देता है आपके जीवन को
गुरु देव द्वारा प्रदत्त

अक्षय वृद्धि साल का श्रावण दिव्य दीक्षा

**इसका श्रेष्ठतम मुहूर्त है - अक्षय वृत्तीया २७ अप्रैल २००६ प्रातः
 तैयार रहें सद्गुरुदेव का यह वरदान प्राप्त करने हेतु**

भाग्य निर्माण

कर्म नियम तो सदैव ही क्रियाशील रहता है, भले ही हम इस विषय में जानें या न जानें। जीवन में जो कुछ होता है, और विशेषकर दुःखद, उसके लिए लोग प्रायः भाग्य को ही कारण मानते हैं। परन्तु सब कुछ दृश्य या अदृश्य, ज्ञात या अज्ञात नियम का परिणाम मात्र है। दुःखद परिणाम इस बात का संकेत है कि कोई भूल हो गई है, किसी नियम का उल्लंघन हुआ है और नियम के अनुसार कार्य करने के लिए परिवर्तन की आवश्यकता है जो कुछ भी सुखद अथवा दुःखद भाग्य प्रतीक होता है वह हमारे द्वारा जाने अथवा अनजाने किए कार्यों का परिणाम मात्र है, चाहे वे कर्म हमने कुछ समय पूर्व अथवा पिछले जीवन में किए हों। इसमें संदेह नहीं कि हमारे पूर्व कर्म हमारी प्रगति में सहायक या बाधक हो सकते हैं परन्तु वर्तमान में प्राप्त सीमाओं के अन्दर हम कर्म करने में स्वतंत्र हैं परन्तु कर्म करने के पश्चात् हम उसके परिणाम से बंधे हैं कि कोई भी प्रयत्न हमें मुक्त नहीं कर सकता। परन्तु इस कर्म-नियम के अनुसार तो जो कर्म करता है अर्थात् कारण उत्पन्न करता है वही उसको परिवर्तित अथवा समाप्त भी कर सकता है। ऐसी स्थिति में क्या किया जाए, यह प्रश्न हर व्यक्ति के मन में आता है। एक ओर मनुष्य को भाग्य के अधीन बताया गया है, वहीं दूसरी ओर मनुष्य को कर्म के अधीन बताया गया है।

मनुष्य जीवन में कर्म और भाग्य का संयोग

भगवान शिव और मां पार्वती के सम्बन्ध में असंख्य कथाएं आई हुई हैं। उनमें से दो कथाएं जो इस लेख के विषय वस्तु से सम्बन्धित हैं उन्हें लिख रहा हूं।

१. कर्म ही बलवान है -

एक बार पृथ्वी पर भंयकर अकाल पड़ गया। इन्द्र देवता ने अपनी मनमानी कर पृथ्वी पर बरसना ही बंद कर दिया। एक वर्ष बीता, दो वर्ष बीते, ऐसे करते करते १२ वर्ष बीत गये। लोग निर्बल होते गए और प्रकृति का सारा रंग-रूप ही बदल गया। चारों ओर भूखमरी फैल गई तथा प्रजा में त्राहित्राहि मच गई। धरती पर अनाज उगाने का काम किसानों का रहता है, जब उन्होंने देखा कि कई वर्षों से वर्षा नहीं हो रही है तो उन्होंने भी अपने हल इत्यादि अलग रख दिये। कई किसानों के तो कृषि औजारों पर जंग ही लग गया था। जानवर भी काफी संख्या में मृत हो गये थे।

जैसे ही बरसात का मौसम आता, लोग टकटकी लगाकर आसमान की ओर देखते। जगह-जगह प्रार्थनाएं होतीं लेकिन प्रार्थना, पूजा, यज्ञ इत्यादि का कोई फल ही नहीं निकल रहा था।

ऐसा कहा जाता है कि श्रावण मास में भू-लोक पर भगवान शिव और पार्वती पृथ्वी का भ्रमण करते हैं। बाकी समय तो कैलाश पर्वत पर निवास करते हैं लेकिन श्रावण मास में पृथ्वी पर विचरण कर पृथ्वी वासियों को वरदान देते हैं इसीलिये श्रावण मास में शिव पूजन अभिषेक की विशेष महत्ता है।

ऐसे ही श्रावण मास के प्रारम्भ में भगवान शिव और मां पार्वती पृथ्वी पर विचरण कर रहे थे तो उन्होंने देखा कि एक किसान अपने कंधे पर हल लिये हुए खेत को जोत रहा है। वह पसीने से तरबतर था लेकिन बराबर परिश्रम कर रहा था। मां पार्वती ने कहा कि यह किसान भी बड़ा अजीब है। आप पृथ्वी वासियों पर रुष्ट हैं और आपके आदेश से इन्द्र वर्षा नहीं कर रहा है। फिर भी यह किसान भूमि जोत रहा है। भगवान शिव

ने मुस्कुराते हुए कहा, चलो पार्वती, इस किसान से ही पूछ लेते हैं कि यह ऐसी क्रिया क्यों कर रहा है?

भगवान शिव और मां पार्वती ने अपना साधारण गृहस्थ रूप बनाया और उस किसान के सामने जाकर खड़े हुए और बोले - 'आसमान में एक भी बादल दिखाइ नहीं दे रहा है और पिछले कई वर्षों से वर्षा हुई नहीं है इसके उपरान्त भी तुम अपना खेत क्यों जोत रहे हो?

इस पर किसान ने उत्तर दिया - हे अतिथि वर्षा करना या नहीं करना यह भगवान शिव का कार्य है और हम किसान लोग उनकी कृपा से अपनी भूमि जोत कर फसल उगाते हैं। भगवान शिव का यह कर्तव्य है और उनका यह कर्म है कि वे पृथ्वी लोक पर वर्षा करें। मेरा कर्म है कि मैं बरसात के आने से पहले अपने खेत को जोत कर तैयार रखूँ और बरसात होने पर बीज बो दूँ। यदि भगवान शिव अपना कर्म और कर्तव्य भूल गये हैं तो यह उनकी इच्छा है, लेकिन मैं मनुष्य हूँ और मेरा कर्म और कर्तव्य है खेत को जोतना, जमीन को तैयार करना, मैं अपना कर्म और कर्तव्य कैसे भूल सकता हूँ? मुझे तो अपना कर्म पूरी निष्ठा के साथ करना ही है। और मुझे विश्वास है कि जहां कर्म है, जहां कर्तव्य है वहां अंततः फल प्राप्ति अवश्य होती है।

इस पर भगवान शिव ने कहा कि यदि इस वर्षा भी वर्षा नहीं होगी तो तुम क्या करोगे?

किसान ने कहा कि कि सीधी सी बात है, मैं अपने हल, औजार साफ सफाई कर तैयार रखूँगा। खेत में अनावश्यक घास-फूस नहीं होने दूँगा। आखिर तो बरसात आयेगी ही।

यह उत्तर सुन कर भगवान शिव को अपनी भूल पर बड़ा विचार हुआ। उन्होंने सोचा कि एक मनुष्य को अपने कर्म में इतनी आस्था है तो मैं कैसे अपना कर्म भूल सकता हूँ? तत्काल उनके आदेश से जल वर्षा होने लगी और पृथ्वी पर पुनः खुशहाली छा गई।

२. भाग्य के बिना कुछ मिलता नहीं

जैसा कि ऊपर की कथा में लिखा है उसी प्रकार एक बार श्रावण मास के प्रारम्भ में भगवान शिव और पार्वती भूलोक का विचरण कर रहे थे और मां पार्वती ने एक मार्ग पर एक भिखारी को जाते हुए देखा। वह भगवान के नाम का उच्चारण भी कर रहा था लेकिन उसकी दशा बड़ी ही दीन-हीन तथा शरीर अत्यधिक निर्बल तथा कृशकाय था, हाथ में लाठी लिये हुए कमर झुकाए हुए चल रहा था। ऐसा लगता था मानो युवा

अवस्था में ही निर्धनता की मार से वृद्ध हो गया है। यह देख

कर मां पार्वती ने भगवान शिव को कहा कि आपकी माया बड़ी विचित्र है। जहां पृथ्वी पर इतने सारे लोग प्रसन्नचित्त दिखाई दे रहे हैं, वहां यह आदमी इतना गरीब क्यों है? क्या आप भी मनुष्यों में भेदभाव करते हैं? किसी को निर्धन और किसी को धनवान बनाते हैं। क्या आप सबके साथ एक जैसा व्यवहार नहीं करते?

भगवान शिव ने कहा यह पृथ्वी लोक है। मनुष्य अपने-अपने कर्मों के अनुसार फल प्राप्त करता है और जो उसके भाग्य में लिखा होता है वह उसे भोगना ही पड़ता है। इस व्यक्ति के भाग्य में ही ही निर्धनता लिखी हुई है अतः इसका कुछ नहीं हो सकता।

मां पार्वती को आश्चर्य हुआ और उन्होंने कहा कि यह तो बड़ी विचित्र बात है आप जगत के पिता हैं। सारे प्राणियों की समान भाव से देखभाल करना आपकी जिम्मेदारी है। इस पर भगवान शिव ने कहा कि जब इसके भाग्य में ही कुछ नहीं है तो मैं क्या कर सकता हूँ? मां पार्वती जिद करने लगी कि मेरे कहने पर ही आपको इस भिखारी के लिये तो कुछ करना ही पड़ेगा। यदि इसको धन प्रदान कर दिया जाए तो इसका भाग्य बदल जायेगा और यह निर्धनता के अभिशाप से मुक्त हो जायेगा।

भगवान शिव ने पार्वती की जिद के आने विवश होकर स्वर्ण मुद्राओं से भरी थैली उस मार्ग पर डाल दी, जिस मार्ग पर वह भिखारी जा रहा था।

इधर भिखारी के मन में भी विचारों का मंथन चल रहा था और वह सोच रहा था कि मैं गिङ्गिङ्गाकर भीख मांगता हूँ तो कोई मुझे भीख देता नहीं है। यदि मैं अंधेपन का नाटक करूँ तो यह संभव है कि लोग मुझ पर दया कर भोजन वस्त्र इत्यादि भिक्षा में अवश्य दे देंगे। ऐसा विचार करते हुए चलता जा रहा था, फिर सोचा कि अभी सुनसान मार्ग है अंधेपन का अभ्यास अभी कर लेता हूँ तो ज्यादा उचित रहेगा। ऐसा सोच कर उसने आंखें बंद की और लाठी के सहारे आगे चलने लगा। रास्ते में स्वर्ण मुद्राओं से भरी थैली, जो कि मां-पार्वती भगवान शिव ने रखी थी उसके ठोकर भी लगी लेकिन भिखारी ने सोचा कि कोई छोटा पत्थर होगा और आंखें बंद किये-किये आगे बढ़ता रहा और कुछ देर आगे बढ़ने के बाद सोचा कि अंधेपन का अभ्यास अच्छा है। वह मार्ग में पड़ी स्वर्ण मुद्राओं की थैली को वह न तो देख पाया और न ही उसे प्राप्त कर पाया।

भगवान शिव ने कहा - देखो पार्वती! यह है भाग्य का

खेल। मां पार्वती ने कहा कि यह तो बड़ी विचित्र लीला है। दुर्भाग्य के कारण अच्छी भली आंखों वाला भी अंधा हो जाता है और अपने फल को प्राप्त नहीं कर पाता। शिव ने कहा कि यहीं जगत की लीला है।

ऊपर की दोनों कहानियां एक दूसरे से विरोधाभासी अवश्य लग सकती हैं। एक ओर तो कर्म की महत्ता बताई गई है और दूसरी ओर भाग्य की महत्ता बताई गई है। आखिर वास्तविक सत्य क्या है?

इस प्रश्न का उत्तर भी सहज ही है। **वास्तविक सत्य यह है कि जब कर्म और भाग्य दोनों का संयोग होता है तो मनुष्य के जीवन में उन्नति हो सकती है और वह अपना इच्छित फल प्राप्त कर सकता है।** पहली कहानी में जहां किसान निरन्तर अपना कार्य नहीं करता और वर्षा आ जाती तो क्या होता? उसका खेत फसल के लिये तैयार नहीं होता और वह न अपने बीज बो सकता था और न ही कोई फसल प्राप्त कर पाता। वह अपना कर्म करता रहा वर्षा आई और उसने अपने कर्म का तत्काल लाभ प्राप्त कर लिया।

दूसरी कहानी में भिखारी कर्म तो कर रहा था लेकिन उसके कर्म के साथ भाग्य का सहयोग नहीं था और वह अवसर आने पर उस भाग्य से शिव के वरदान को प्राप्त नहीं कर पाया।

इसलिये ईश्वरीय कृपा, देव कृपा और गुरु कृपा तो प्रत्येक मनुष्य को प्राप्त होती है। मनुष्य ही अपने बुद्धि, मन, विचार के द्वारा कर्म और भाग्य का संयोग करा सकता है। जब सद्गुरु की कृपा होती है अर्थात् वे भाग्य का द्वार खोलते हैं तो मनुष्य को अपनी कर्म शक्ति पूर्ण रूप से जाग्रत रखनी चाहिए।

इसी बात को सार रूप में भगवान कृष्ण ने गीता में कहा है -

कर्मण्येवाधिकारस्ते मा फलेषु कदाचन...

अर्थात् मनुष्य हर कार्य को फल की इच्छा से ही नहीं करे, वह निष्ठा पूर्वक अपना कर्तव्य करता रहे। कर्म करता रहता है तो उसे फल की अवश्य प्राप्ति होती है। उसका भाग्य अवश्य जाग्रत होता है। दुर्भाग्य से सौभाग्य तक की यात्रा कर्म और भाग्य के सहयोग की यात्रा है।

अक्षय कर्म सिद्धि भाग्योदय दीक्षा

अक्षय तृतीया का पावन पर्व - कर्म सिद्धि भाग्योदय दिवस है, ऐसे शुभ दिवस पर जब सद्गुरुदेव अपनी ऊर्जा तरंगें प्रवाहित करते हैं तो शिष्य को उन ऊर्जा तरंगों को पूर्ण रूप से ग्रहण करना चाहिये। यह इस दिवस की महानता है और उससे भी बड़ी इस दिवस पर सद्गुरु की महानता और कृपा

है कि ऐसी महादीक्षा अपने शिष्यों और साधकों को प्रदान कर रहे हैं।

कर्म और भाग्य का संयोग हर व्यक्ति के जीवन में पूर्ण रूप से प्राप्त नहीं होता, यह तो केवल गुरु कृपा ही होती है जिसके फलस्वरूप शिष्य, साधक को यह वरदान मिलता है। सद्गुरुदेव अपने शिष्य को शक्तिपात्र दीक्षा के माध्यम से यह विशेष कृपा प्रदान करते हैं। इस बार अक्षय कर्म सिद्धि वर्चस्व दीक्षा हेतु, अक्षय तृतीया का चयन गुरुदेव ने इसीलिये किया क्योंकि यह दिवस शिवरात्रि, नवरात्रि से भी बढ़कर लंक्ष्मी का दिवस है। यह दिवस जीवन में अक्षय तत्व समाहित करने का दिवस है। जब जीवन में क्षय रूप जाता है और कार्य में वृद्धि होने लगती है तो भाग्य भी जाग्रत होता है। व्यक्ति आर्थिक, सामाजिक, आध्यात्मिक उन्नति की ओर अग्रसर होता है। इस दिन प्राप्त की हुई दीक्षा व्यक्ति के जीवन को चैतन्य कर देती है। उसमें सामर्थ्य भर देती है।

आप घर बैठे हैं या यात्रा में हैं, यह मत सोचिये की गुरुदेव आपके साथ नहीं हैं। गुरु तो दिव्य तरंगों के माध्यम से सदैव अपने शिष्य के साथ रहते ही हैं। शिष्य अपनी तरंगें जाग्रत कर वह भाव ग्रहण कर सके यह क्षमता, यह भावना, यह श्रद्धा, यह विश्वास उनमें उत्पन्न होना ही चाहिये।

एच.पी. ब्लेवेट्स्की के अनुसार कर्म-नियम एक ऐसा अदृश्य और अज्ञात नियम है जो प्रत्येक परिणाम को उसके कारण के अनुसार बुद्धिमत्तापूर्वक तथा न्यायोचित ढंग से व्यवस्थित करता है। इसे इस प्रकार भी कह सकते हैं - प्रत्येक परिणाम का कोई कारण अवश्य होता है और प्रत्येक कारण से परिणाम की उत्पत्ति अनिवार्य है। यह नियम सनातन है, अपरिवर्तनीय है। यदि मनुष्य अपने विचारों, इच्छाओं या कार्यों से प्रकृति के सामंजस्य को बिगड़ा है तो उसके पुनः स्थापन का दायित्व भी उस पर आ जाता है। नियम न तो पुरस्कृत करता है और न दंड देता है। नियम के अनुसार हम स्वयं ही अपने आपको पुरस्कृत अथवा दंडित करते हैं। नियम तो मनुष्य द्वारा उत्पन्न कारणों के अनुसार परिणामों को व्यवस्थित कर देता है। इसलिए मनुष्य को स्वयं यह जान लेना आवश्यक है कि वह एक ऐसे विश्व में रह रहा है जहां निश्चित नियम लागू होते हैं और नियमों का उल्लंघन दुःख और कष्टों को आमंत्रित करना है। मनुष्य को यह ज्ञान जीवन के अनेकानेक अनुभवों द्वारा ही प्राप्त होता है और इनमें से अधिकांश अनुभव कष्टदायक होते हैं।

नियम

- ❖ आप इस प्रपत्र को भर कर आज ही लिफाफे में भेज दीजिए, हम आपका प्रपत्र गुरुदेव के समक्ष प्रेषित कर देंगे।
- ❖ गुरुदेव की आज्ञा से आपको “अक्षय कर्म सिद्धि आन्योदय दीक्षा” एवं तीन सौ तीन रूपयों की वी.पी.

४ सुखकर्ता दुःखहर्ता सुख में शिव रहता...

तंत्र अधिपति भगवान् सदाशिव

द्वारा



मानव जीवन की समस्याओं के निवारणार्थ

उल्लिखित दे

सिद्धिपूर्ण छंयंत्र

मानवीय जीवन की सामान्य समस्याओं का असाधारण हल, भगवान् सदाशिव के मुख से उच्चारित ये प्रयोग, जिनका विधान भगवान् शिव के समान ही सरल है एवं इन प्रयोगों का तेज स्वयं शिव की कृपा ही है। जीवन में आने वाली सामान्य बाधाओं एवं समस्याओं का निवारण कीजिये -

कृष्ण बाधा समाप्ति हेतु

गृहस्थ सुख में अभिवृद्धि हेतु

★-कृष्ण-सोचन-यंत्र-★ ★-अनंग-यंत्र-★

उन्नति हेतु

व्यवसाय बढ़ोतरी हेतु

★-लक्ष्मी-विनायक-यंत्र-★ ★-व्यवसाय-लाभ-यंत्र-★

शत्रुओं पर विजय हेतु

दीर्घायु एवं स्वस्थ जीवन हेतु

★-शत्रु-विद्वेषण-यंत्र-★ ★-महामृत्युंजय-यंत्र-★

५ मोती चुनने के लिए सागर में गहरे उतरना पड़ता है, उसी प्रकार ज्ञान के श्रेष्ठ मोती प्राप्त करने हेतु मंत्र, यंत्र तथा तंत्र के विशाल सागर में यदि गुरु कृपा हो जाय, तो श्रेष्ठ स्वरूप प्राप्त कर सकते हैं।

ये शब्द, ये प्रयोग केवल शब्द मात्र नहीं हैं, ये यंत्र तो हर घर में होने चाहिए। हर साधक को ये साधनाएं सम्पन्न करनी आवश्यक हैं। ये सिद्ध प्रयोग हैं, जिन्हें प्रत्यक्ष अनुभव किया जा सकता है।

भगवान् शिव के अमृत वचनों पर आधारित तथा महर्षि शुक्राचार्य द्वारा संहिताबद्ध, षडंग मंत्र विद्या पर आधारित महाग्रन्थ 'यंत्र चूड़ा मणि' श्रेष्ठतम ग्रन्थ कहा जा सकता है।

कथा आती है, कि एक बार भगवान् शिव, पार्वती के साथ विराजमान थे, पार्वती ने शिव से निवेदन किया, कि पृथ्वी पर इतने अधिक कष्ट क्यों हैं? मनुष्यों के चेहरों पर हर समय

चिन्ता की रेखाएं क्यों बनी रहती हैं? वे लोग जो भी कार्य करना चाहते हैं वह सिद्ध नहीं होता, उनकी इच्छाएं हर समय अपूर्ण क्यों रहती हैं?

रुद्र देव ने कहा, कि पृथ्वी पर मनुष्य कार्य तो करता है, कर्मशील भी है, परन्तु उसमें कर्म को सही तरीके से करने का ज्ञान नहीं है, इसके लिए वह बारम्बार भटक जाता है। शास्त्रों के अनुसार चलतां नहीं, उसमें आचार विचार की नियमितता नहीं है, हर समय अविश्वास, सदेह से घिरा रहता है, गुरु पर, साधना पर, मंत्रों पर, अविश्वास करते हुए कार्य करता है, इसलिए उसे जीवन में सिद्धि नहीं मिल पाती। पार्वती ने कहा, कि हे देव! क्या ऐसा कुछ उपाय हो सकता है, जिसे मनुष्य सरल रूप में कर सके, अपनी दिन-प्रतिदिन की चिन्ताओं को मिटा कर अपने जीवन का लक्ष्य प्राप्त कर परमतत्व को प्राप्त हो सके, मनुष्य की चिन्ताएं उसे एक चक्र में उलझाये हुए हैं, इसका कुछ उपाय अवश्य बतायें।

इस पर सिद्धियों के प्रदाता शिव ने जो 108 प्रयोग विशेष रूप से दिये, वे साधना के, सिद्धि के आधार हैं, सरलतम विधि के साथ, सरल मंत्र जप के ये प्रयोग साधक स्वयं सम्पन्न कर सकेंगे। इस में सर्वप्रथम छः यंत्रों का विवेचन एवं विधान स्पष्ट किया जा रहा है।

यंत्र साधना के कुछ विशेष नियम हैं, जिनकी अनुपालना साधक को अवश्य ही करनी चाहिए। बिना जानकारी, बिना नियम, कार्य करने से सिद्धि प्राप्त नहीं हो सकती।

- ☆ प्रत्येक प्रयोग को तीन दिन तक विधि विधान से सम्पन्न करें, पूजन कार्य करें।
- ☆ तीन दिन तक ब्रह्माचर्य धर्म का पूर्ण रूप से पालन करें, ध्यान में भी शुद्धता हो।
- ☆ शुद्ध, शान्त अन्तःकरण से ही प्रयोग सम्पन्न करना चाहिए, साधना समय को कल्प कहा जाता है, पूरे कल्प में पूर्ण विश्वास के साथ कार्य करना चाहिए, अन्यथा सदेह पूर्वक किया गया कार्य विपरीत ही फल देता है।
- ☆ प्रथम दिन स्नान कर, शुद्ध वस्त्र धारण कर गुरु पूजन सम्पन्न करें, और कुल-देवता, इष्टदेवता का भी पूजन सम्पन्न करें।
- ☆ यंत्र साधना का कार्य एकान्त में सम्पन्न करना चाहिए, साधना समय में विध्न नहीं पड़ना चाहिए।
- ☆ सात्विक भोजन ग्रहण करना चाहिए, और केवल दूध, पश्चात् मंत्र सिद्ध प्राण प्रतिष्ठा युक्त 'धातु के ताबीज' को

फलाहार से तुम्हि नहीं हो, तो केवल सायंकाल को ही भोजन करें।

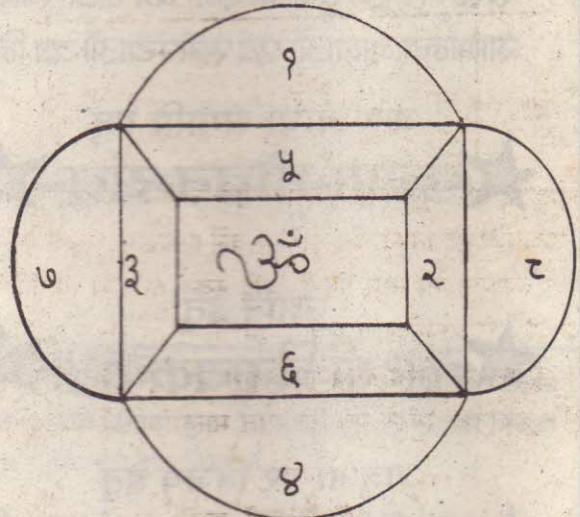
- ☆ तीन दिन भूमि पर ही शयन करें, रात्रि में जो भी स्वप्न आये, प्रातःकाल उठकर उनका विवेचन अवश्य करें, अशुभ स्वप्न आने पर उसी समय उठ कर गुरुमंत्र का जप सम्पन्न करना चाहिए।

इन नियमों को ध्यान में रखते हुए नीचे दिये गये विशेष प्रयोगों को साधक सम्पन्न कर सकते हैं। एक समय में एक ही प्रयोग सम्पन्न करें, सुबह कोई प्रयोग, दोपहर को कोई प्रयोग और शाम को कोई और प्रयोग उचित नहीं है, एक-एक करके साधना सम्पन्न की जाय।

1. ऋषणमीचन यंत्र

जब ऋषण बाधा बहुत अधिक बढ़ जाय तो बुधवार को प्रातः सुबह जल्दी उठ कर मंत्र सिद्ध प्राण प्रतिष्ठा युक्त धारण योग्य ताबीजरूपी यंत्र को अपने सामने एक पात्र में स्थापित करें, फिर निम्न यंत्र को अष्टगन्ध से भोजपत्र अथवा पीले कागज

ऋणमीचन यन्त्र



पर अंकित करें। अंकित यंत्र के चारों ओर 'श्रीं' बीज मंत्र लिखें, मध्य में जहां अ॒ लिखा है उसके नीचे अपना नाम लिखें। सामने सात सुपारी रखें और प्रत्येक सुपारी के नीचे एक सिङ्का स्थापित करें तथा कुंकुम चढाएं, अब इष्ट देवता, कुल देवता तथा गुरु पूजन कर मंत्र जप प्रारम्भ करें।

मंत्र

॥श्रीं॥

इस मंत्र की ग्यारह माला मंत्र जप करें, तीन दिन के

काले धागे में बांध कर अपनी दाहिनी भुजा में धारण कर के पश्चात् साधक अपने सामने एक बाजोट पर निम्न अंकित लें तथा तीन दिन के पश्चात् शेष सामग्री को किसी शिव यंत्र स्थापित कर दें तथा भात का नैवेद्य अर्पित करें। इसके मन्दिर में चढ़ा दें।

साधना सामग्री - 240/- का जप करें।

◆ ◆ ◆ ◆ ◆ ◆ ◆ ◆ ◆

2. व्यवसाय लाभ यंत्र

सोमवार के दिन प्रातः सूर्योदय के पश्चात् चित्र में दिये गये यंत्र का पूजन अष्टग्रन्थ से सम्पन्न करें। सर्वप्रथम गुरु पूजन,

व्यवसाय लाभ यंत्र

१	८	१०
१४	७ रौ २ श्री ०४ रु ३ कर्त्ता ८	६
५	११	४

कुलदेवता, इष्ट पूजन के पश्चात् पीले कागज अथवा भोजपत्र पर अष्टग्रन्थ से निम्न यंत्र अंकित करें। यंत्र में अपनी दुकान अथवा व्यापार का नाम लिखें, यदि स्वयं के नाम से व्यापार कार्य हो, तो अपना स्वयं का नाम लिखें। अंकित यंत्र तथा साथ ही धारण योग्य व्यवसाय लाभ यंत्र स्थापित कर, पुष्ट अर्पित करें तथा निम्न मंत्र की सात माला प्रतिदिन जप करें

मंत्र

॥ ऐं श्रीं अ॒ं हौं कूर्त्ति ॥

तीन दिन मंत्र जप के पश्चात ताबीजरूपी यंत्र को गले में लाल रंग के धागे में पिरोकर धारण कर लें।

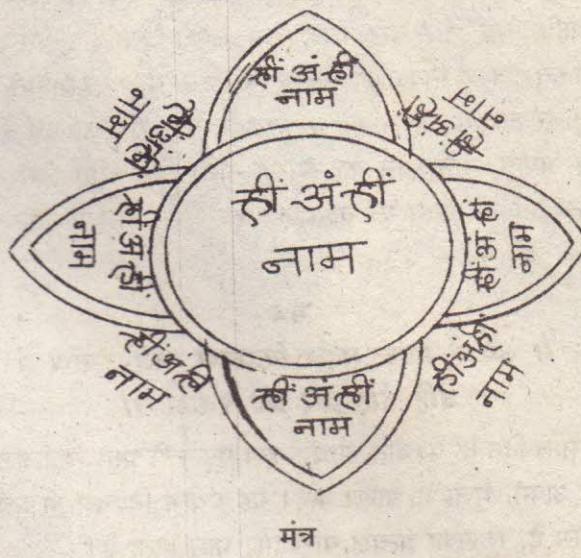
साधना सामग्री - 150/-

◆ ◆ ◆ ◆ ◆ ◆ ◆ ◆

3. शत्रु विद्रेषण यंत्र

शनिवार की रात्रि को इस प्रयोग को सम्पन्न करें। सर्वप्रथम साधक निम्न शत्रु विद्रेषण यंत्र का अंकन अष्टग्रन्थ से भोजपत्र अथवा पीले कागज पर करें। निम्न शत्रु विद्रेषण यंत्र में जिस स्थान पर नाम लिखा है, वहां शत्रु का नाम लिखें। यंत्र अंकन

शत्रु विद्रेषण यंत्र



तीन दिन के प्रयोग के पश्चात इस ताबीजरूपी यंत्र पर काला धागा बांध कर जमीन में गाड़ दें। इस यंत्र का पूजन और प्रयोग घर में नहीं करें, शिव मन्दिर में अथवा शमशान में ही प्रयोग करना चाहिए।

साधना सामग्री - 240/-

◆ ◆ ◆ ◆ ◆ ◆ ◆ ◆ ◆

4. अनंग यंत्र

गृहस्थ सुख जीवन का सौन्दर्य है, इसकी कमी जीवन में एक अधूरापन देती है। जो व्यक्ति पुरुषार्थ कमी की विशेष

अनंग यंत्र



पीड़ाओं से ग्रस्त हों, उन्हें यह प्रयोग अवश्य ही सम्पन्न करना चाहिए। इस यंत्र के प्रभाव स्वरूप स्त्री साधक के पूर्ण अनुकूल, उसके वश में और उसे पूर्ण सुख प्रदान करने में समर्थ रहती है।

शुक्रवार की मध्य रात्रि को इस यंत्र का अंकन कर इसको स्थापित करें, और इसे गन्ध, पुष्प, नैवेद्य इत्यादि अर्पित करें। अंकित यंत्र के निकट ही ताबीज रूपी अनंग यंत्र स्थापित कर दें। साधक श्वेत वस्त्र धारण कर 'हीं' बीज मंत्र का जप करते हुए अपनी शक्तिवर्धन का स्मरण करें। फिर सात दिन तक नित्य अंकित अनंग यंत्र का पूजन कर निम्न बीज मंत्र की एक माला जप करें -

मंत्र

**॥ उौं ऐं मदने मदन विद्वावणे अनंग संग मे
देहि देहि क्रीं क्रीं स्वाहा ॥**

सात दिन के पश्चात साधक इसे पहले से प्राप्त ताबीजरूपी यंत्र अपनी भुजा में धारण करें। यह प्रयोग निश्चय ही प्रबल प्रयोग है, जिसका प्रत्यक्ष परिणाम प्राप्त होता है।

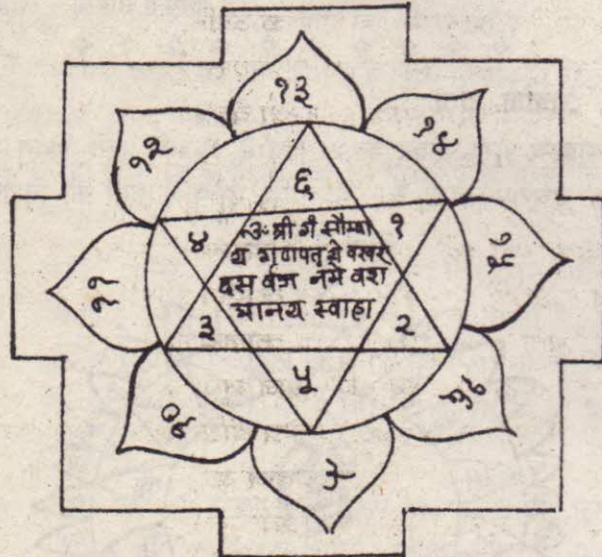
साधना सामग्री - 270/-

◆ ◆ ◆ ◆ ◆ ◆ ◆ ◆ ◆

5. लक्ष्मी विनायक यंत्र

जिस पर लक्ष्मी तथा गणेश दोनों की ही कृपा हो जाय,

लक्ष्मी विनायक यंत्र



उसके तो असंभव कार्य भी पूरे हो जाते हैं, उसे जीवन में आगे बढ़ने से कौन रोक सकता है? बुधवार को प्रातः स्नान कर, शुद्ध वस्त्र धारण कर, अपने पूजा स्थान में एक धी का दीपक जलाएं, सामने पीला वस्त्र बिछाकर उस पर पीले कागज अनुष्ठान सम्पन्न किया जाता है। इसके पूजम में, जप में, वह

अथवा भोजपत्र पर अष्टगांध से अंकित निम्न यंत्र तथा ताबीज रूपी लक्ष्मी विनायक यंत्र को स्थापित करें। अब एक सुपारी पर मौली लपेट कर चावल की ढेरी पर स्थापित करें, तथा कुकुम, केशर, अबीर - गुलाल, अष्टगन्ध, पुष्प, नैवेद्य से पहले गणपति का, फिर लक्ष्मी का पूजन करें। इस पूजन के पश्चात तीन माला निम्न मंत्र का जप करें -

मंत्र

॥ उौं श्रीं ज्लैं नमः ॥

मंत्र जप पूरा होने के पश्चात इस लिखित यंत्र को पूजा में ही रहने दें और ताबीज रूपी यंत्र को अपनी दाहिनी भुजा में धारण कर लें, इसके पश्चात गणेश आरती तथा लक्ष्मी आरती सम्पन्न करें। विशेष ध्यान रखें कि मृतक कार्यों में जाते समय इसे धारण न करें, तथा उतार कर अपने पूजा स्थान में रख दें, नित्य पूजन के क्रम में यंत्र को अपने सामने रखकर एक माला मंत्र जप अवश्य करें।

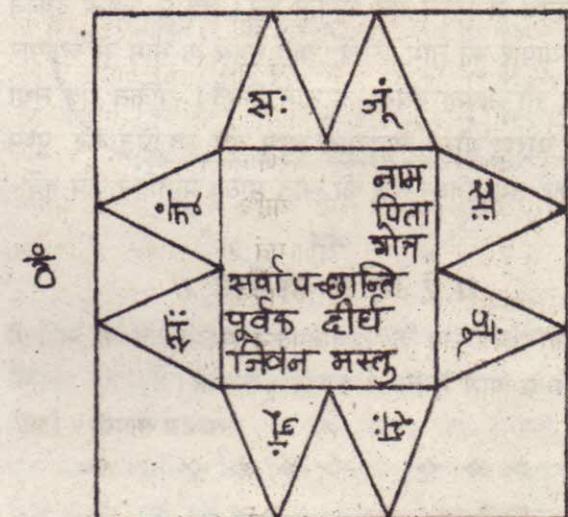
साधना सामग्री - 300/-

◆ ◆ ◆ ◆ ◆ ◆ ◆ ◆ ◆

6. महामृत्युंजय कवच यंत्र

व्याधि, पीड़ा जीवन का अभिशाप है, बीमारी व्यक्ति के जीवन को घुन की तरह खोखला कर देती है, शरीर तो निर्बल होता ही है, मन और इच्छा शक्ति निर्बल हो जाते हैं और एक

सं महामृत्युंजय कवच यंत्र सं



अज्ञात मृत्यु भय हर समय बना रहता है, इसीलिए महामृत्युंजय

शक्ति है, जो पीड़ा से प्रसन्नता की ओर, बीमारी से स्वस्थता की ओर तथा भय से निर्भयता की ओर ले जाती है।

किसी भी सोमवार को किये जाने वाले इस प्रयोग में प्रातः पहले स्नान कर शुद्ध श्वेत वस्त्र धारण कर शिव पूजन सम्पन्न करें, तत्पश्चात पीले कागज अथवा भोजपत्र पर अष्टगंध से अंकित महामृत्युंजय यंत्र को अपने सामने रखें, एक ओर धूप, अगरबत्ती जलाएं, दूसरी ओर घर में रखें किसी भी 'शिवलिंग' को यंत्र पर रखें कर चन्दन से पूजा करें, इसके सामने एक जल से भरा पात्र रखें, पूरे पूजन के दौरान 'ॐ नमः शिवाय' मंत्र जप करते रहें साथ ही ताबीज रूपी धारण योग्य महामृत्युंजय यंत्र रखे दें तथा इस यंत्र के चारों कोनों तथा मध्य में भी चन्दन लगाएं, इसके पहले पूजा के प्रारम्भ में ही अपना नाम, पिता का नाम तथा गोत्र (जाति) लिखें।

इसके पश्चात महामृत्युंजय मंत्र की ज्यारह माला का जप करें, अब सामने रखे जल को दाहिने हाथ से खुद के शरीर पर छिड़कें, और शेष जल पी लें।

मंत्र

ॐ त्वम्बकं यजामहे सुगन्धिं पुष्टिवर्धनम् ।

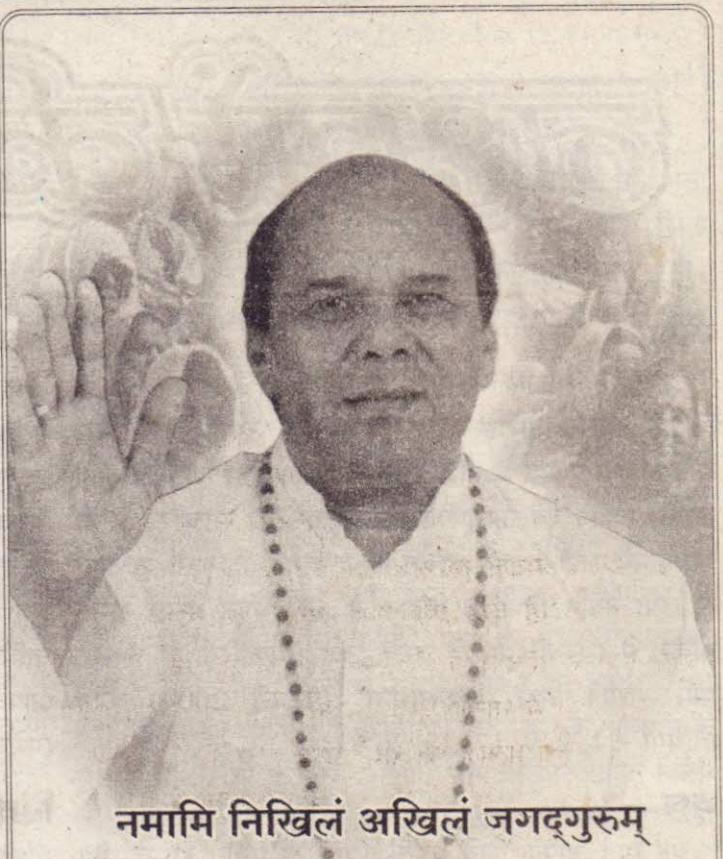
उर्वरुक्त बन्धनान्मुत्योर्मुक्षीय मामृतात् ॥

यदि किसी अन्य व्यक्ति के नाम से प्रयोग सम्पन्न करना है, तो पहले दाहिने हाथ में जल ले कर यह संकल्प करें, कि मैं गुरु तथा शिव को साक्षी रखते हुए यह पूजन कार्य अमुक (व्यक्ति का नाम, उसके पिता का नाम, गोत्र) हेतु सम्पन्न कर रहा हूं, पूजन के पश्चात ताबीज धारण करा दें। शिव कृपा का यह अनूठा प्रयोग बड़ी से बड़ी व्याधि में भी शान्ति प्रदान करता है। ये प्रयोग अत्यन्त सरल एवं शीघ्र प्रभाव देने वाला है, जिससे समस्या के सम्बन्ध में तात्कालिक राहत प्राप्त हो जाय, दिये गये दिनों में निरन्तर पूजन सम्पन्न करने से पूर्ण अनुकूलता प्राप्त होती है।

साधना सामग्री - 300/-

◆ ◆ ◆ ◆ ◆ ◆ ◆ ◆ ◆

विशेष : साधकों को इन छः यंत्रों की साधना एवं मंत्र जप करते समय निर्देशानुसार कागज, भोजपत्र अथवा वस्त्र पर कुंकुम या केसर अथवा अष्टगंध से स्वयं यंत्र का अंकन करना है और उसके साथ ही ये ही यंत्र जो ताबीज रूप में मंत्र सिद्ध प्राण प्रतिष्ठायुक्त हैं, उन्हें धारण करना है।



नमामि निखिलं अखिलं जगद्गुरुम्

२१ अप्रैल

इन यंत्रों का पूजन-स्थापन धारण कब करें -

समस्या आने पर तो प्रत्येक व्यक्ति साधना सम्पन्न करता है, देवताओं से मङ्गत मांगता है लेकिन योग्य दूर छृष्टि वाला साधक समस्या के आने का इन्तजार नहीं करता, वह पहले से ही विचार कर लेता है कि मेरे जीवन में बाधाएं आ सकती हैं और मैं अपने साधना बल को समय रहते इतना तीव्र बना दूं कि उन बाधाओं, समस्याओं के कारण जीवन में सकट नहीं आये अर्थात् अविष्य के कालगर्भ में विचार कर कार्य करना साधक का प्रधान गुण होता है।

ये छः यंत्र जीवन की विभिन्न बाधाओं का समाधान कर आपको श्रेष्ठ जीवन प्रदान करने में समर्थ है।

अतः इन यंत्रों से सम्बन्धित पूजन, मंत्र, जप तथा धारण हेतु विशेष मुहूर्त का इन्तजार मत करिये।

प्रत्येक यंत्र, पूजन साधना के लिये जो दिन दिये गये हैं उनमें ये यंत्र पूजन कर धारण कर लीजिए।

फिर स्वयं अनुभव करें, कैसे परिवर्तित होता है जीवन।

ब्रह्मचारी व्रती बाप्पा

मेष -

इस माह आपको रोजगार, पदोन्नति एवं व्यापार वृद्धि के विशेष अवसर प्राप्त होंगे। समय का पूर्ण उपयोग करें। इस माह आपके ऐश्वर्य में वृद्धि होती नजर आ रही है। यदि आप वाहन, मकान एवं आभूषणों को खरीदने की सोच रहे हैं तो यह समय आपके लिये उचित सिद्ध होगा। मेहमानों के आने से तथा नवीन मित्रों के मिलने से आप बहुत प्रसन्न होंगे। नौकरी पेशा व्यक्तियों को उनके उच्चअधिकारियों से प्रशंसा प्राप्त होगी। आप 'शुक्रसाधना' (फरवरी 2009) करें। तिथियां - 1, 2, 9, 17, 25, 26 हैं।

वृष -

यह माह आपके लिये बहुत शुभ होता प्रतीत हो रहा है। इस माह आप अपने जीवन की उन्नति के लिये दीर्घकालीन योजनाएं बना सकते हों जो कि सफल होंगी। भविष्य के लिये लिये श्रेष्ठ है। यह समय आपके लिये श्रेष्ठ है। मन की शांति प्राप्त करने हेतु आप इस माह किसी शांत स्थान की यात्रा पर भी जा सकते हैं। लम्बे समय से चले आ रहे परिवारिक कलह के समाप्त होने से आप स्वयं को प्रसन्न अनुभव करेंगे। स्त्रियों को परिवार में मान-सम्मान मिलेगा। आप 'कृष्ण तंत्र सम्मोहन साधना' (मार्च 2009) करें, शुभ तिथियां - 1, 8, 14, 22, 27 हैं।

मिथुन -

किसी से लेन-देन करने से पहले अपने शुभचिंतकों एवं मित्रों से अवश्य सलाह कर लें। किसी को उधार दिये गये रूपयों के फंसने का योग बहुत प्रबल बन रहा है। इस माह आपको आकस्मिक लाभ भी प्राप्त हो सकता है। आपको आपके परिश्रम का उचित फल प्राप्त होगा। परिवार में स्वास्थ्य सम्बन्धी चली आ रही समस्या के समाप्त होने का योग है। पति-पत्नी में आपसी सहयोग एवं प्रेम में वृद्धि होगी। संतान पक्ष की ओर से चली आ रही परेशानियां समाप्त होंगी। आप 'उर्वशी साधना' (फरवरी 2009) करें। तिथियां - 2, 6, 7, 24, 25 हैं।

कर्क -

ग्रह-नक्षत्रों के योग अनुसार इस माह भी आपके खर्च में विशेष अवसर प्राप्त होंगे। समय का पूर्ण उपयोग करें। इस माह आपके ऐश्वर्य में वृद्धि होती नजर आ रही है। यदि आप वाहन, मकान एवं आभूषणों को खरीदने की सोच रहे हैं तो यह समय आपके लिये उचित सिद्ध होगा। मेहमानों के आने से तथा नवीन मित्रों के मिलने से आप बहुत प्रसन्न होंगे। नौकरी पेशा व्यक्तियों को उनके उच्चअधिकारियों से प्रशंसा प्राप्त होगी। आप 'शुक्रसाधना' (फरवरी 2009) करें। आपके साथ कोई ठगी वैतहाशा वृद्धि हो सकती है। आपके लिये श्रेष्ठ है। यह समय आप स्वयं के पास नहीं करें, इसे अपनी पत्नी का संचय आप स्वयं के पास नहीं करें, इसे अपनी पत्नी अथवा किसी शुभचिंतक के पास रखें। आपके साथ कोई ठगी भी कर सकता है, अतः आप सावधान रहें। धर्म, अध्यात्म के क्षेत्र में आपकी सूचि बढ़ेगी तथा हो सकता है कि आप किसी धार्मिक यात्रा पर भी जायें। धनिष्ठ मित्र एवं सहयोगी के साथ आपकी अनबन हो सकती है। आप 'बगलामुखी साधना' (फरवरी 2009) करें। तिथियां - 4, 9, 17, 26, 27 हैं।

सिंह -

यह माह आपके लिए बहुत महत्वपूर्ण सिद्ध होगा, आप सिंह की ही भाँति अपनी समस्याओं पर टूट पड़ेंगे तथा एक-एक कर अपने जीवन की समस्याओं को हल कर पायेंगे। अगर आप निवेश करने की सोच रहे हैं तो यह समय आपके लिये जरूरी होगा कि आप लक्ष्य पर ही अपना ध्यान केन्द्रित रखें। व्यापार में आने वाली परेशानियों एवं शत्रुओं को समाप्त करने हेतु आप अपनी रणनीति से सफलता प्राप्त करेंगे। परिवार के किसी सदस्य के स्वास्थ्य को लेकर आप परेशान हो सकते हैं। संतान पक्ष से अच्छे समाचार प्राप्त होंगे। आप 'बीजावली षोडशी साधना' (जनवरी 2009) करें। शुभ तिथियां - 1, 6, 11, 28, 29 हैं।

कन्या -

पिछले माह की विपरीत परिस्थितियां इस माह आपके अनुकूल होंगी। आपको व्यवसाय एवं नौकरी में अनुकूलता प्राप्त होगी। पार्टनरशिप में चले रहे व्यापार में पार्टनर के साथ चले आ रहे विवादों का अंत होगा। इस माह आप अपनी महत्वकांक्षाओं को पूर्ण करने में सफल होंगे। राजनीति के भाग लेने वाले लोगों को इस माह विशेष लाभ प्राप्त होने की समाप्त होगी। विद्यार्थियों एवं बेरोजगारों को परीक्षाओं में सफलता प्राप्त होगी। आप 'भगवती लक्ष्मी साधना' (फरवरी 2009) करें। तिथियां - 8, 9, 12, 14, 30 हैं।

तुला -

अध्ययन, शोध एवं उच्च शिक्षा के कार्यरत व्यक्तियों के लिये समय बहुत महत्वपूर्ण सिद्ध होगा। उन्हें उनके कार्य का प्रतिफल प्राप्त होगा। दूरसंचार एवं सूचना प्रौद्योगिकी के क्षेत्र में आप नया व्यवसाय या कार्य प्रारम्भ करना चाहते हैं तो यह समय आपके लिये श्रेष्ठ है। परिवार में मांगलिक कार्यक्रम सम्पन्न होने में बातावरण प्रसन्नतापूर्ण रहेगा। पति-पत्नी एवं प्रेमिका के मध्य सम्बन्धों में मधुरता बढ़ेगी। कामकाजी एवं गृहस्थ महिलाओं के लिए इस माह धन लाभ के विशेष योग बन रहे हैं। आप 'महाकाली साधना' (जनवरी 2009) करें। शुभ तिथियां - 7, 10, 11, 15, 26 हैं।

वृश्चिक -

इस माह चन्द्रमा की स्थिति आपके जीवन में उथल-पुथल उत्पन्न कर देगी। आप बिना किसी कारण के ही चिन्ता से ग्रस्त रह सकते हैं। आप स्वयं को अलग-थलग महसूस करेंगे तथा उन कारणों से चिन्तित होंगे तो कि वास्तविकता में है ही नहीं। आपके लिये श्रेष्ठ होगा कि आप अपने इष्ट एवं गुरु ध्यान में अधिक से अधिक समय व्यतीत करें ताकि आपको मानसिक शांति प्राप्त हो। अविवाहित युवक-युवतियों को थोड़ी परेशानियों के बावजूद उपयुक्त वर प्राप्त हो सकते हैं। आप 'तारा साधना' (फरवरी 2009) करें। तिथियां - 8, 9, 13, 19, 28 हैं।

धनु -

आप स्वयं की अपेक्षा अन्य सामाजिक गतिविधियों विशेष कर विवादास्पद गतिविधियों के संलग्न होंगे। आप हर कार्य का हल हिंसात्मक एवं आंदोलन से करना चाहेंगे जो कि आपके लिये श्रेष्ठ नहीं है। आपके ग्रह-नक्षत्रों के अनुसार शत्रु आपके सामने टिक नहीं पायेंगे, फिर भी आपको संयम एवं सूझबूझ से काम लेना चाहिए। परिवार में भी आपके अड़ियल रखये के कारण अनबन हो सकती है जो कि परिवार में कलह उत्पन्न कर सकती है। महिलाओं को अपनी महत्वकाक्षाओं पर नियन्त्रण रखना होगा। आप 'स्थिर लक्ष्मी साधना' (मार्च 2009) करें। तिथियां - 10, 11, 16, 20, 21 हैं।

मकर -

नवीन ज्ञान एवं तकनीक परिवर्तन हेतु समय आपके लिये श्रेष्ठ है। आपके मित्र ही नहीं, शत्रु भी आपकी योग्यता की प्रशंसा करेंगे। अपने स्वास्थ्य का विशेष ध्यान रखें, अन्यथा आपको चिकित्सालय जाना पड़ सकता है। आर्थिक रूप से यह माह आपके लिये बहुत अधिक अच्छा तो नहीं है, फिर भी

योग: सिद्ध योग - 7, 9, 10, 18, 22 अप्रैल / 6, 9, 12, 14, 15 मई ☆
सर्वार्थ सिद्ध योग - 11, 13, 24 अप्रैल / 6, 10, 13, 16 मई ☆ अमृत
सिद्ध योग - 24 अप्रैल ☆ त्रिपुष्कर योग - 26 मई ☆

आप नया कार्य एवं अर्थ के नये स्रोत प्राप्त करने में सफलता प्राप्त करेंगे जो कि भविष्य में आपके लिये फायदेमंद सिद्ध होंगे। बेरोजगारों एवं विद्यार्थियों को सफलताएं प्राप्त होंगी। आप 'सौम्य महाकाली साधना' (फरवरी 2009) करें। तिथियां - 12, 13, 19, 22, 30 हैं।

कुंभ -

यह माह आपके लिये मिला-जुला रहेगा। अनजान एवं अपरिचित व्यक्तियों के साथ रूपयों का लेन-देन न ही करें तो अच्छा होगा। राजनैतिक पृष्ठ भूमि के व्यक्तियों को आगे बढ़ने के अच्छे अवसर प्राप्त होंगे। आपकी तर्कशक्ति एवं कार्यकुशलता की प्रशंसा होगी। माह के मध्य में आपको अपनी दीर्घकालीन योजनाओं को पूर्ण करने हेतु अवसर प्राप्त होंगे। विवाहित व्यक्तियों के जीवन में नव वसंत के आगमन के समान ही मधुरता का रस घुलेगा। आप परिवार सहित किसी यात्रा पर भी जा सकते हैं। आप 'वीर साधना' (फरवरी 2009) करें। तिथियां - 3, 15, 16, 20, 25 हैं।

मीन -

इस माह आपको प्रतिस्पर्धा का सामना करना पड़ सकता है। ठेकेदारी एवं व्यवसाय में लगे लोगों को बहुत संभल कर कार्य करने की आवश्यकता है, आप अपनी कार्य सम्बन्धी योजनाएं अनजान एवं अविश्वसनीय व्यक्तियों को नहीं बताएं। आपके लिये श्रेष्ठ होगा कि आप अपने व्यवहार को लचीला रखें। किसी पुराने मुकदमें का हल इस माह हो सकता है। महिलाओं के लिये परिवार में बहुत चुनौतीपूर्ण परिस्थितियां होंगी, उन्हें बहुत सोच समझ कर ही व्यवहार करने की आवश्यकता है। आप 'पूर्ण गृहस्थ सुख कामाक्षी साधना' (मार्च 2009) करें। तिथियां - 4, 13, 19, 22, 27 हैं।

इस मास के व्रत, पर्व एवं त्यौहार

05 मई	वैशाख शु. - 11	मंगलवार	मोहिनी एकादशी
06 मई	वैशाख शु. - 12	बुधवार	प्रदोष व्रत
09 मई	वैशाख शु. - 09	शनिवार	बुद्ध जयंती/पूर्णिमा व्रत
21 मई	ज्येष्ठ कृ. - 11	गुरुवार	अपरा एकादशी
22 मई	ज्येष्ठ कृ. - 13	शुक्रवार	प्रदोष व्रत
24 मई	ज्येष्ठ कृ. - 30	रविवार	अमावस्या/शनि जयंती
26 मई	ज्येष्ठ शु. - 02	मंगलवार	रम्भा व्रत
02 जून	ज्येष्ठ शु. - 10	मंगलवार	गंगा दशमी/बटुक भैरव ज.

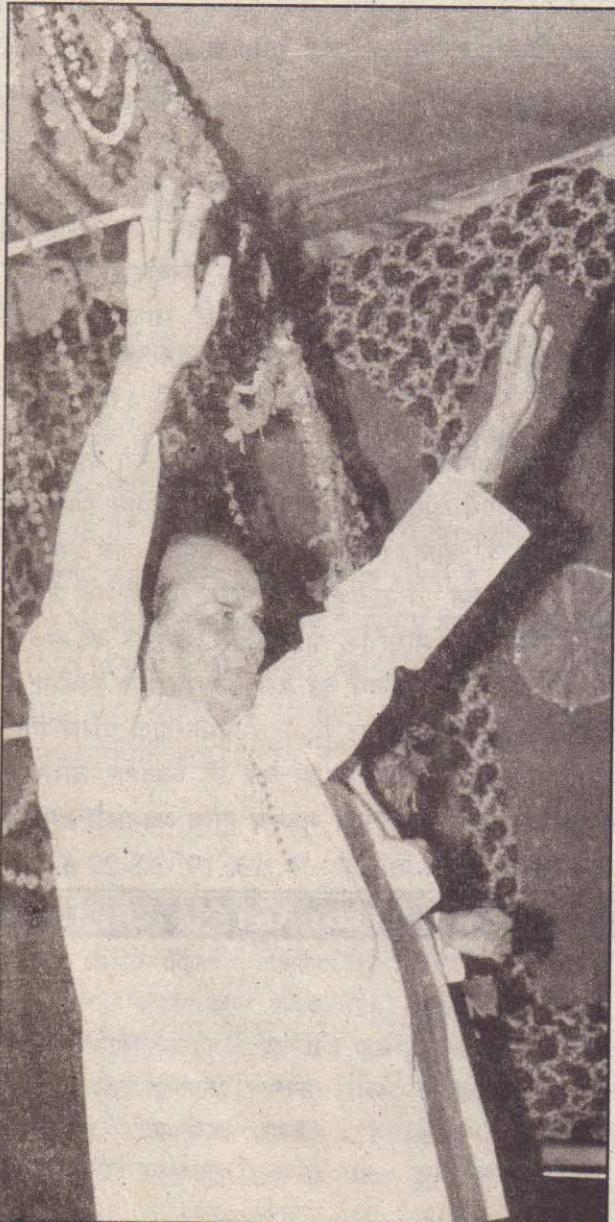
ॐ

साधक, पाठक तथा सर्वजन सामान्य के लिए समय का वह रूप यहां प्रस्तुत है; जो किसी भी व्यक्ति के जीवन में उन्नति का कारण होता है तथा जिसे जान कर आप स्वयं अपने लिए उन्नति का मार्ग प्रशस्त कर सकते हैं।

समय हैं

नीचे दी गई सारिणी में समय को श्रेष्ठ रूप में प्रस्तुत किया गया है - जीवन के लिए आवश्यक किसी भी कार्य के लिये, चाहे वह व्यापार से सम्बन्धित हो, नौकरी से सम्बन्धित हो, घर में शुभ उत्सव से सम्बन्धित हो अथवा अन्य किसी भी कार्य से सम्बन्धित हो, आप इस श्रेष्ठतम् समय का उपयोग कर सकते हैं और सफलता का प्रतिशत 99.9% आपके भाव्य में अंकित हो जायेगा।

ब्रह्म मुहूर्त का समय प्रातः 4.24 से 6.00 बजे तक ही रहता है।



वार/दिनांक	श्रेष्ठ समय
रविवार (अप्रैल 5, 12, 19, 26) (मई 3)	दिन 06:00 से 10:00 तक रात 06:48 से 07:36 तक 08:24 से 10:00 तक 03:36 से 06:00 तक
सोमवार (अप्रैल 6, 13, 20, 27) (मई 4)	दिन 06:00 से 07:30 तक 10:48 से 01:12 तक 03:36 से 05:12 तक रात 07:36 से 10:00 तक 01:12 से 02:48 तक
मंगलवार (अप्रैल 7, 14, 21, 28) (मई 5)	दिन 06:00 से 08:24 तक 10:00 से 12:24 तक 04:30 से 05:12 तक रात 07:36 से 10:00 तक 12:24 से 02:00 तक 03:36 से 06:00 तक
बुधवार (अप्रैल 1, 8, 15, 22, 29) (मई 6)	दिन 07:36 से 09:12 तक 11:36 से 12:00 तक 03:36 से 06:00 तक रात 06:48 से 10:48 तक 02:00 से 06:00 तक
गुरुवार (अप्रैल 2, 9, 16, 23, 30) (मई 7)	दिन 06:00 से 08:24 तक 10:48 से 01:12 तक 04:24 से 06:00 तक रात 07:36 से 10:00 तक 01:12 से 02:48 तक 04:24 से 06:00 तक
शुक्रवार (अप्रैल 3, 10, 17, 24) (मई 1, 8)	दिन 06:48 से 10:30 तक 12:00 से 01:12 तक 04:24 से 05:12 तक रात 08:24 से 10:48 तक 01:12 से 03:36 तक 04:24 से 06:00 तक
शनिवार (अप्रैल 4, 11, 18, 25) (मई 2, 9)	दिन 10:30 से 12:24 तक 03:36 से 05:12 तक रात 08:24 से 10:48 तक 02:00 से 03:36 तक 04:24 से 06:00 तक

गहु हृष्मदेन नहीं बराहमिहि नै कहा है

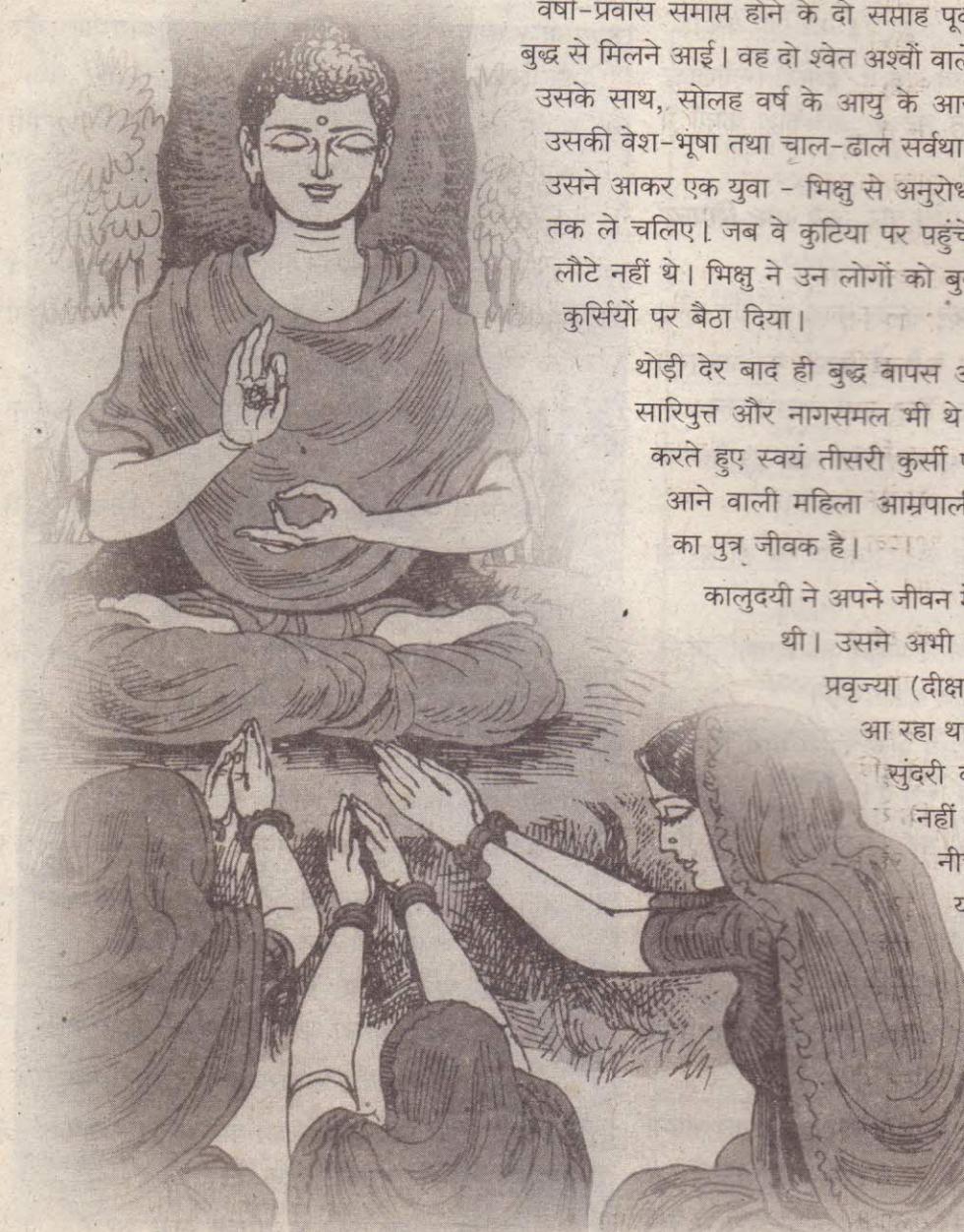
किसी भी कार्य को प्रारम्भ करने से पूर्व प्रत्येक व्यक्ति के मन में संशय-असंशय की भावना रहती है कि यह कार्य सफल होगा या नहीं, सफलता प्राप्त होगी या नहीं, बाधाएं तो उपस्थित नहीं हो जायेगी, पता नहीं दिन का प्रारम्भ किस प्रकार से होगा, दिन की समाप्ति पर वह स्वयं को तनावरहित कर पायेगा या नहीं? प्रत्येक व्यक्ति कुछ ऐसे उपाय अपने जीवन में अपनाना चाहता है, जिनसे उसका प्रत्येक दिन उसके अनुकूल एवं आनन्दद्युक्त बन जाय। कुछ ऐसे ही उपाय आपके समक्ष प्रस्तुत हैं, जो वराहमिहिर के विविध प्रकाशित ग्रंथों से संकलित हैं, जिन्हें यहां प्रत्येक दिवस के अनुसार प्रस्तुत किया गया है तथा जिन्हें सम्पन्न करने पर आपका प्राप्ति दिन पूर्ण सफलतादायक बन सकेगा।

मई

1. बगलामुखी के बीज मंत्र 'हौं' का एक माला जप करें।
2. "ॐ शं शनैश्चराय नमः" का 21 बार जप करें।
3. प्रातः घर से निकलते समय जब में 'इंगुल' (न्यौछावर 60/-) रख दीजिये, दिन भर के अधिकांश कार्यों में सफलता मिलेगी।
4. घर से बाहर जाते समय पांच बार 'उ॒॒॑॑ हौं नमः शिवाय' का उच्चारण करें।
5. प्रातः हनुमान का पूजन कर सुन्दर कांड का पाठ करें।
6. कायराम्भ करने से पूर्व 'श्री हौं कर्त्ता' का उच्चारण मन ही मन पांच बार कर, फिर कार्य आरम्भ करें।
7. स्नान करने के पश्चात् 'सुदर्शन रक्षा चक्र' (न्यौछावर 170/-) का पूरे शरीर पर स्पर्श करायें।
8. 'उ॒॑॑ हौं' का पांच बार उच्चारण कर ही घर से बाहर निकलें।
9. अपने दिन का आरम्भ करते समय जब बाहर निकलें, तो पहले आप दाहिना पांव बाहर रखें।
10. घर से बाहर निकलते समय पांच काली मिर्च सिर पर धुमा कर दक्षिण दिशा में फेंक दें।
11. आज शिव मंदिर में मुट्ठी भर काले उड्ड अर्पित करें, मनोकामना पूर्ण होगी।
12. किसी हनुमान मन्दिर में धी तथा गुड़ का भोग लगाकर अपने व्यापार स्थल या नौकरी में जायें।
13. एक मुट्ठी चावल अपने सिर पर तीन बार धुमाकर दान दें, आर्थिक लाभ प्राप्त होगा।
14. 'निखिलेश्वरानन्द स्तवन' के तीन श्लोक पढ़ कर अपना दिन आरम्भ करें।
15. 'प्रखरया' (न्यौछावर 75/-) को अपने पर्स में रखें और अपने कार्यों को सम्पादित करें।
16. आज लोहे की वस्तु अवश्य दान करें।
17. नवार्ण मंत्र 'ऐ हौं कर्त्ता चामुण्डायै विच्चै' का पाठ करें।
18. आज भगवान राम के चित्र की पूजा अवश्य करें और सुगन्धित पुष्प अर्पण करें।
19. प्रातः घर से निकलते समय चुटकी भर हींग को अपनी पीठ की ओर फेंक दें तथा पीछे मुड़कर न देखें।
20. गणपति को लड्डू का भोग लगायें।
21. आज गुरु जन्म दिवस के अवसर पर विशेष गुरु पूजन सम्पन्न करें। दिन भर गुरु स्मरण करें तथा गुरु सेवा का संकल्प लें।
22. काली सरसों के कुछ दाने जमीन पर रखकर अपना दाहिना पैर उस पर रखते हुए निकलें।
23. एक कागज पर कुंकुम से 'उ॒॑॑ हौं नमः' लिखकर उसे अपने पास रखें।
24. प्रातः काल सूर्य को अर्घ्य अवश्य दें।
25. 'मधुसूपेण रुद्राक्ष' (न्यौछावर 60/-) का पूजन कर उसे शिव मंदिर में अर्पित करें।
26. हनुमाल चालीसा का पाठ अवश्य करें।
27. विघ्नहर्ता गणपति का संक्षिप्त पूजन कर उनके सामने 'उ॒॑॑ गं गणपतये नमः' मंत्र का एक माला जप करें।
28. प्रातः काल जब आप उठें, तो जमीन पर पांव रखने से पूर्व निम्न श्लोक का तीन बार उच्चारण करें -
हेतवे जगत्तामेव संसारार्थव स्तेतवे। प्रभवे सर्वविद्यानां शम्भवे गुरुवै नमः।
29. 'उ॒॑॑' का ग्यारह बार उच्चारण कर घर के बाहर जायें।
30. शुभ कार्य के लिए प्रातः काल बाहर जाते समय दरवाजे पर चुटकी भर नमक छिड़क दें।
31. आज एक सफेद वस्त्र में चावल बांध कर दान करें, बाधा समाप्त होगी।

बुद्ध के जीवन का उत्तम अध्याय आम्रपाली का बुद्ध से ज्ञान प्राप्त करना और बुद्ध द्वारा

शाश्वत सौटदर्थ का विवेचन



वर्ष-प्रवास समाप्त होने के दो सप्ताह पूर्व एक असाधारण सुंदर महिला बुद्ध से मिलने आई। वह दो श्वेत अश्वों वाले एक श्वेत रथ में आयी थी और उसके साथ, सोलह वर्ष के आयु के आसपास का, एक युवक भी था। उसकी वेश-भूषा तथा चाल-ढाल सर्वथा सुरुचिंपूर्ण और गरिमापूर्ण थी। उसने आकर एक युवा - भिक्षु से अनुरोध किया कि मुझे बुद्ध की कुटिया तक ले चलिए। जब वे कुटिया पर पहुंचे तो बुद्ध चलित ध्यान कर के लौटे नहीं थे। भिक्षु ने उन लोगों को बुद्ध की कुटिया के आगे रखी दो कुर्सियों पर बैठा दिया।

थोड़ी देर बाद ही बुद्ध वापस आ गए। उनके साथ कालुदयी, सारिपुत्र और नागसमल भी थे। बुद्ध उन्हें बैठने का अनुरोध करते हुए स्वयं तीसरी कुर्सी पर बैठ गए। वे समझ गए कि आने वाली महिला आम्रपाली और युवक राजा बिम्बिसार का पुत्र जीवक है।

कालुदयी ने अपने जीवन में इतनी सुंदर महिला नहीं देखी थी। उसने अभी एक महीने पहले ही भिक्षु की प्रवृत्त्या (दीक्षा) ली है और उसे समझ नहीं आ रहा था कि किसी भिक्षु को ऐसी परम सुंदरी की ओर देखना भी चाहिए या नहीं। आखिर उन्होंने अपनी आंखें नीची कर लीं। नागसमल की भी यही स्थिति हुई। केवल बुद्ध और सारिपुत्र ही उस सुन्दरी से आंखें मिला सके।

सारिपुत्र कभी आम्रपाली को देखते तो कभी बुद्ध को। वे देख रहे थे कि बुद्ध की वृष्टि कितनी सहज और सौम्य है। उनका मुख-मंडल चन्द्रमा की भाँति

शांत और सुन्दर था। उनकी दृष्टि कृपापूर्ण और स्पष्ट थी। सारिपुत्र को प्रतीत हुआ कि बुद्ध की संतुष्टि, सहज और देती, चाहे फिर वह व्यक्ति उसे कितना ही स्वर्ण देने का आनंद-भावना उनके अपने हृदय में सीधी प्रवेश हो गई है।

आम्रपाली भी बुद्ध की आंखों में आंखें डाले देख रही थी। जिस प्रकार बुद्ध उसे निर्विकार भाव से देख रहे थे, उस दृष्टि से उसे आज तक किसी ने नहीं देखा था। जहां तक उसे स्मरण है, लोग उसे देखकर उलझन में पड़ जाते थे या फिर उनकी आंखों में इच्छा झांक रही होती। बुद्ध तो उसे इस प्रकार देख रहे थे जैसे किसी मेघ या सरिता या पुष्प को देखते थे। आम्रपाली को लग रहा था कि वह गहरे झांककर उसके हृदय के विचारों को भी समझ लेंगे। उसने हाथ जोड़कर अपना और अपने पुत्र का परिचय दिया। 'मैं आम्रपाली हूँ और यह मेरा पुत्र जीवक है जो चिकित्सक बनने के लिए अध्ययनरत है। हमने आपके विषय में बहुत कुछ सुना था और आपसे मिलना चाहते थे जो आज संभव हुआ है।'

बुद्ध ने जीवक से पूछा कि उसका अध्ययन और दैनिक जीवन-चर्या कैसी चल रही है? जीवक ने नम्रता के साथ इन प्रश्नों का उत्तर दिए। बुद्ध समझ गए कि यह युवक दयालु प्रकृति का है और प्रतिभाशाली है। यद्यपि उसके पिता वही थे, जो कुमार अजातशत्रु के थे किन्तु स्पष्ट था कि उसका चरित्र बाल कुमार से अधिक विचार-विमर्श पूर्ण था। जीवक के हृदय में बुद्ध के प्रति सम्मान और प्रेम का भाव था। उसने कहा कि जब मैं अपनी चिकित्सा विषयक शिक्षा पूर्ण कर लूंगा तो वेणुवन में बुद्ध के पास ही रहूँगा।

बुद्ध से मिलने से पहले आम्रपाली यह मानकर चल रही थी कि वह बहुत से उन अन्य विख्यात गुरुओं के समान ही होंगे, जिनसे वह मिल चुकी थी। लेकिन वह इससे पूर्व बुद्ध सरीखे किसी गुरु से नहीं मिली थी। उनकी दृष्टि निश्चय ही कोमल और करुणापूर्ण थी। उसने सोचा कि ये ही मेरे उन दुःखों को समझ सकेंगे जो उसके हृदय में पल रहे हैं। उनकी करुणापूर्ण दृष्टि से ही उसके बहुत से दुःख दूर हो गए थे। जब उसने बोलना आरंभ किया तो उसकी आंखें छलछला आई थीं। 'गुरुवर, मेरा जीवन दुःखों का आगार है। यद्यपि मेरे पास धन-सम्पदा की कोई कमी नहीं है और अभी तक किसी वस्तु की आकांक्षा अतृप्त नहीं रही है। फिर भी, आज का दिन मेरे जीवन का सर्वाधिक उल्लास का दिल है।'

आम्रपाली विख्यात गायिका और नर्तकी थी लेकिन किसी भी व्यक्ति के कहने भर से अपनी कला का प्रदर्शन नहीं करती थी। यदि किसी के तौर-तरीके या व्यवहार उसे अच्छा नहीं बैठने को कहा और वह स्वयं खड़ा ही रहा। अन्य अनेक भिक्षु

लगे, तो वह अपनी कला का प्रदर्शन करने से इनकार कर प्रस्ताव क्यों न रखे। जब वह सोलह वर्ष की थी, तो किसी से प्रेम करने लगी थी। किन्तु उस प्रेम-प्रसंग ने उसका हृदय ही तोड़ा। कुछ समय बाद उसकी भैट युवा राजकुमार बिम्बिसार से हुई और उन दोनों में प्रेम हो गया। उसी से बिम्बिसार का पुत्र जीवक का जन्म हुआ। किन्तु राजमहल में कोई भी उसे और उसके पुत्र को स्वीकार करने के लिए तैयार नहीं था। महल के लोगों ने यह अफवाह उड़ा दी कि वह परित्यक्त अनाथ है जिसे राजकुमार सङ्क के कूड़े के ढेर से उठाकर लाए थे। इन आरोपों से आम्रपाली के हृदय को आघात लगा। राजमहल में उसे द्वेष और धृणा से भरे अपमान के कड़े धृंठ पीने पड़े। शीघ्र ही उसने समझ लिया कि उसे स्वतंत्र रहना है और अपनी स्वतंत्रता की पूर्ण शक्ति से रक्षा करनी है। उसने महल में रहना अस्वीकार कर दिया और प्रण किया कि वह अपनी व्यक्तिगत स्वतंत्रता किसी भी कीमत पर नहीं खोपाएगी।

बुद्ध ने सहजता से उससे कहा - 'किसी अन्य वस्तु के समान सुंदरता आती है और चली जाती है। ख्याति और धन-सम्पदा भी इसी प्रकार आनी-जानी हैं। ध्यान-साधना करने से जो शांति, हर्ष और स्वतंत्रता प्राप्त होती है, उसी से सच्चा आनंद प्राप्त होता है। आम्रपाली! इस जीवन के जो क्षण शेष रह गये हैं, उनको जियो और उनका पूरा ख्याल रखो। अपने व्यक्तित्व को भुलावे में अथवा निर्थक आमोद-प्रमोद में नष्ट मत करो। यह बात सबसे महत्वपूर्ण है।'

बुद्ध ने आम्रपाली को बताया कि उसे अपना नित्य नैमित्तिक जीवन नई विधि के अनुसार कैसे व्यवस्थित करना है। प्राणायाम करो, ध्यान में बैठो, सचेतना की भावना से कार्य करो और 'पंचशीलों' के पालन का अभ्यास करो। इन मूल्यवान शिक्षाओं को पाकर वह हर्षोन्मत्त हो उठी। वहां से विदा होने के पूर्व उसने कहा, 'वैशाली नगर के बाहर मेरे अधिकार में एक आम्रवन है जो शीतल भी है और शांतिपूर्ण भी है। मैं आशा करती हूँ कि आप और आपके भिक्षु वहां कभी पधारने की कृपा करेंगे। यदि ऐसा हो सका तो यह मेरे लिए और मेरे पुत्र के लिए बहुत ही सम्मान की बात होगी। बुद्ध देव, कृपया मेरे इस निमंत्रण पर विचार कीजिए।'

बुद्ध ने मुस्कराकर स्वीकृति दे दी।

जब आम्रपाली चली गई तो कालुदयी ने बुद्ध के पास बैठने की अनुमति मांगी। नागसमल ने सारिपुत्र को दूसरी कुर्सी पर बैठने को कहा और वह स्वयं खड़ा ही रहा। अन्य अनेक भिक्षु

जो बुद्ध की कुटीर के पास से गुजर रहे थे, वहां रुक गए। सारिपुत्र ने कालुदयी की ओर देखा और मुस्कराए। उन्होंने नागसमल की ओर भी देखा और मुस्करा दिए। तब उन्होंने बुद्ध से प्रश्न किया, 'बोधिसत्त्व, एक भिक्षु को किसी स्त्री की सुंदरता को किस दृष्टि से देखना चाहिए, विशेषतः उस स्त्री को जो आध्यात्मिक साधना में अवरोध हो?'

बुद्ध मुस्कराए। वे समझ गए कि सारिपुत्र यह प्रश्न अपनी खातिर नहीं, अन्य भिक्षुओं की तरफ से पूछ रहे हैं। उन्होंने कहा - 'भिक्षुओं, सभी धर्म वस्तुतः सुंदरता और कुरुपता का विचार नहीं करते - वे उनसे परे होते हैं। सुन्दरता या कुरुपता का भाव-बोध तो हमारे चित्त को प्रतिबिम्बित करता है। सुन्दरता और कुरुपता दोनों का सृजन पांच तत्वों से होता है। कलाकार की दृष्टि में कुछ भी सुंदर हो सकता है और किसी भी वस्तु को वह कुरुप बना सकता है। सरिता, बादल, पत्ता, फूल, सूर्य की एक किरण या दोपहर बाद की धूप सभी में सौंदर्य होता है। हमारे पास में उगे हुए पीले बांस भी सुंदर हैं। किन्तु कोई भी अन्य सौन्दर्य स्त्री के सौंदर्य से अधिक चित्त में विघ्न नहीं डालता। यदि कोई स्त्री के सौंदर्य से अभिभूत हो जाता है तो वह सद्धर्म के मार्ग से भटक सकता है।'

'भिक्षुओं, जब आपने चित्त की गहराई में बैठकर देख लिया है और सद्धर्म की गति प्राप्त कर ली है तो सुन्दर, सुन्दर लग सकता है और कुरुप, कुरुप। किन्तु आपने भाव-बोध से मुक्ति प्राप्त कर ली है तो आप इनमें से किसी से बंधे हुए नहीं हो। मुक्त पुरुष सभी वस्तुओं की अनित्यता और अस्तित्वहीनता को भी समझ पाता है, जिनमें सुन्दर और कुरुप दोनों प्रकार की वस्तुएं सम्मिलित हैं। इसलिए वह न तो सुंदर वस्तु से सम्मोहित होता है और न कुरुप से विरक्त।'

'एक ही सौंदर्य शाश्वत है - कभी फीका नहीं पड़ता - वह है करुणामय मुक्त हृदय जिससे किसी को दुःख नहीं होता। करुणा का अर्थ है - अहैतुक प्रेम और उसके बदले में किसी प्रकार की अपेक्षा नहीं करना। मुक्त हृदय किसी प्रकार की शर्तों से बंधा नहीं होता। करुणापूरित मुक्त हृदय ही सच्चा सौंदर्य है। उस सौंदर्य की शांति और हर्ष ही सच्ची शांति और सच्चा हर्ष है। भिक्षुओं, परिश्रमपूर्वक, अभ्यास करो तो आपको सच्चे सौंदर्य की अनुभूति हो जाएगी।'

कालुदयी और अन्य भिक्षुओं को बुद्ध के शब्दों से सत्य समझने में बहुत सहायता मिली।

बुद्ध ये अमृत वचन कालजयी है और शाश्वत सत्य और शाश्वत सौन्दर्य को अभिव्यक्त करते हैं।

सार की बात

जीवन में शांत रहो, छोटी-छोटी बातों पर उत्तेजित मत होओ। अपने को तत्त्वस्थ रखो, मुक्त अनुभव करो तो तनाव के वातावरण से ऊपर उठ जाओगे। हमारा चित्त अनुचित अवस्था में भी सजग रहेगा। अंतर्मन में बोद्ध रखो, मैं तो आपने आप में मस्त हूं, मुझे औरों से क्या? ऐसा आदमी संसार को आनंद रो जीता है।

वह दुविद्या में भी सुविद्या पा सकता है। जैसी भी स्थिति हो, उसे प्रेम से स्वीकारें। भगवान् से शिकायत मत करो। उसने जो कुछ भी दिया, वह उत्तम है। औरों के दुर्गुण नहीं, बल्कि उनके गुणों को देखो। अपने गुणों पर ही नजर मत डालो, अपने अवगुण भी देखो। प्रतिक्रिया से अपने को अलग रखो। उपर्योगी बात है तो स्वीकार कर लो।

'सार-सार को गहि रहें, थोथा देहि उड़ाय।' अपने को सूप की तरह बना लो। काम की चीज रखो, शेष उड़ा दो, निस्सार बातों की चर्चा ही न करो। उन बातों पर ध्यान केन्द्रित करो, जो सारपूर्ण है। निस्सार बातों में उलझे रहोगे तो कभी सार का पता न लगा पाओगे और ऊपर-ऊपर ही रह जाओगे। चित को शुद्ध करो। आप नहाकर मंदिर गए, शरीर की मलिनता तो मिट गई किन्तु मन की मलिनता साफ कहां हुई? इसके लिए ध्यान करना जरूरी है। तृष्णा से बचो, आसक्ति से बचो, उत्तेजना से बचो। जुड़ो तो सहिष्णुता से और बनो तो तत्त्वस्थ। इससे हम अपने मन में असीम शांति का अनुभव करेंगे। ध्यान करो ताकि मन की मलिनता मिट सके, शुचिता, शुद्धि अपने आप हो जाएगी। हम अपने अंतःस्रोत को पहचानें, उस स्रोत से अपने मन के कूप को भरने का उपक्रम करें। साधना पथ पर कदम बढ़ाइए, लेकिन पहले अपने को भीतर से बिलकुल खाली बनाइए। आप अंतर्मन के स्वामी बनें। आत्म सजगता को उपलब्ध करें। आनंद और शांति के स्रोत हमारे अपने भीतर ही हैं।

जिसके होठों पर स्थित हास्य है
यौवन भार से बढ़ी मंद-मंद चाल है
आंखों में प्रेम का अवगाहन है
और साधक को सब कुछ प्रदान करती ही है

योगिनी एकादशी - 19 जून 2009

जो सौन्दर्य की साकार प्रतिमूर्ति है

षाठशा योगिनी

योगिनीयां तो अप्सराओं का वह स्वरूप है जो केवल देने में ही विश्वास रखती है, वे समर्थ है साधक के जीवन में भौतिक और आध्यात्मिक उन्नति के द्वारा खोलने में। प्रिया रूप में हर हिस्थिति में साथ देती है, आश्चर्य मत करिये, योगिनी ही आपके जीवन में रस, आनन्द, प्रेम, सौन्दर्य आप्लावित कर सकती है। एक द्वारा योगिनी के नेत्रों में देखिये और स्पष्ट आभास होगा कि आपको आमंत्रण है -

तंत्र के आदि रचयिता भगवान शिव हैं और समस्त तांत्रिक विद्याओं की रचना उन्हीं के द्वारा हुई है। बाद के विद्रानों ने शिव रचित विद्याओं में शोध कर उनमें निहित अनेक नवीन रहस्यों को खोज निकाला और अपने शिष्यों में उस ज्ञान का सञ्चरण कर आने वाली पीढ़ियों के लिए एक अमूल्य धारी के रूप में उन्हें सौंप दिया।

भगवान शिव ने पार्वती को योगिनी साधना के विषय में उपदेश दिया। जब भगवान शिव से पार्वती ने पूछा, कि देवताओं के लिए तो स्वर्ग में सभी प्रकार के सुख उपलब्ध हैं, अप्सराएं नित्य उनकी सेवा करती रहती हैं, उन्हें अक्षुण्ण यौवन प्राप्त है और उनकी समस्त प्रकार की इच्छाएं पूर्ण होती हैं, जबकि पृथ्वी लोक में रहने वाले मनुष्यों की सभी इच्छाएं पूर्ण नहीं हो पातीं और वे अपनी अपूर्ण इच्छाओं के जाल में उलझे जन्म-मरण के चक्र में फंसे रहते हैं। अतः आप ऐसा उपाय बतायें, जिससे मुनष्य भी देवताओं के समान तेजस्वी और पराक्रमी बन सकें और अपनी समस्त प्रकार की इच्छाओं को पूर्णता प्रदान करते हुए दिव्यता के पथ पर अग्रसर हो सकें।

भगवान शिव ने उत्तर दिया - योगिनी साधना ही एकमात्र ऐसा उपाय है, जिसके माध्यम से मनुष्य अपनी समस्त प्रकार की इच्छाओं को पूर्णता देते हुए, भौतिक और आध्यात्मिक उपलब्धियों को प्राप्त कर सकते हैं। योगिनी फलस्वरूप सदैव षोडश वर्षीया नवयौवना का साहचर्य जिसे

साधना सम्पन्न करने से भोग व मोक्ष की प्राप्ति होती है। ये योगिनियां तत्काल फल देने वाली, समस्त प्रकार की अनृप इच्छाओं को पूर्ण करने वाली होती हैं क्योंकि ये मेरी ही शक्ति का स्वरूप हैं।

शिव- पार्वती के इस संवाद से स्पष्ट हो जाता है, कि मानव जीवन में योगिनी साधना का महत्व क्या है? वास्तव में योगिनियां अर्द्ध देवियां हैं, देव वर्ग के इतर यक्ष, किन्नर, गंधर्व आदि योनियों के समान ही योगिनियों का महत्व है।

योगिनियां तो तंत्र साधनाओं की आधारभूता देवियां हैं, अपूर्व सौन्दर्य की स्वामिनी होने के साथ ही साथ इन्हें तंत्र के गोपनीय और दुरुह रहस्यों का भी ज्ञान होता है। ये मात्र नारी आकृति ही नहीं होती, अपितु पूर्ण चैतन्यता से आपूरित एक विशिष्ट सौन्दर्य की स्वामिनी होती है, जिनके रोम-प्रतिरोम में साधनात्मक बल समाया होता है और नेत्रों में समाई होती है तंत्र की प्रखरता, जो कि आधार है तांत्रिक साधनाओं का।

अत्यन्त गौर वर्ण, विद्युत आभा सा देवीप्यमान मुखमण्डल, चराचर विश्व को सम्पोहित सी करती झील सी गहरी काली आंखें और उनमें लहराती मादकता और करुणा का एक अनोखा संगम, मांसल, सुडौल, पुष्ट दूधिया बदन पर पारद भक्षण और पारद कल्प से प्राप्त चिरयौवन की अठखेलियों के

प्राप्त हो जाता है, उसके जीवन में फिर असम्भव जैसा कोई में खेचरी विद्या, रस (पारद) सिद्धि, भूगर्भ सिद्धि, वशीकरण, शब्द रह ही नहीं जाता, क्योंकि दिव्य आभा से आपूरित इन शत्रुं स्तम्भन, अदृश्य होने की शक्ति, यौवन और बल की अत्यन्त तेजस्वी सौन्दर्य की मलिकाओं के अन्दर समाई प्राप्ति, मनोकामना पूर्ति, दिव्य रसों की सिद्धि आदि अनेक होती है तंत्र की विलक्षण तीव्रता।

यों तो सौन्दर्य साधनाओं के रूप में अप्सराओं, यक्षिणियों, किन्नरियों आदि की भी साधनाओं के विधान प्राप्त होते हैं, यह भी सत्य है कि वे समस्त प्रकार के भोग प्रदान कर जीवन में आनन्द की वृष्टि करती हैं, परन्तु वे मात्र भोग प्रदान करने में ही समर्थ होती हैं, जबकि योगिनी साधना के फलस्वरूप प्राप्त होती हैं वे सौन्दर्य प्रतिमाएं, जो सहयोगिनी रूप में तंत्र की विशिष्ट क्रियाओं को सम्पन्न करने में साधक की सहायता करती हैं।

इनमें सौन्दर्य की साधना की प्रखरता भी होती है और मोहन, वशीकरण, स्तम्भन, उच्चाटन आदि के साथ-साथ तंत्र की अनेक दुर्घट हौली होती हैं और गोपनीय क्रियाओं में भी ये सहायता प्रदान करती हैं और साधक को खेचरी विद्या (वायु गमन), रस सिद्धि, भूगर्भ सिद्धि, वशीकरण, शत्रुं स्तम्भन, मनोकामना पूर्ति, दिव्य रसों की सिद्धि, अदृश्य होने की शक्ति, यौवन और बल की प्राप्ति आदि सिद्धियां प्रदान कर उसे पल मात्र में ही सम्पूर्ण विश्व का एक अद्वितीय व्यक्तित्व बना देने में समर्थ होती हैं।

अन्य सौन्दर्य साधनाओं की अपेक्षा योगिनी साधना सहजता और तीव्रता से सिद्ध होने वाली अनुकूल फल प्रदान करने वाली होती है। पूर्ण मनोयोग पूर्वक श्रद्धा और विश्वास के साथ की गई साधना में योगिनियों से साक्षात्कार होता ही है।

इस साधना की प्रखरता व तेजस्विता और इससे प्राप्त होने वाली असीमित तांत्रिक शक्तियों व सिद्धियों के कारण ही इसे अत्यन्त गोपनीय कर गुरु मुख परम्परा तक सीमित कर दिया गया और सामान्य जनमानस में इसके विषय में अनेक भ्रम और किंवदन्तियां फैला दी गई तथा कूरता और वीभत्सता की अनेक कहानियों को इनके साथ जोड़ दिया गया, कि वे अत्यन्त भीषण आकृति वाली होती हैं, उनकी मुख मुद्रा अत्यन्त भयकर और नेत्र भय उत्पन्न करने वाले होते हैं, वे मनुष्यों को मार कर उनका रक्त पीती हैं... आदि-आदि।

जबकि वास्तविकता तो यह है, कि वे अत्यन्त सौम्य स्वरूपा और निर्मल सौन्दर्य की स्वामिनी होती हैं और सिद्ध होने पर साधक की सभी प्रकार से सहायता करती हैं।

दैहिक सौन्दर्य के साथ-साथ आन्तरिक गुणों से भी सम्पन्न ये जिस किसी को भी प्रिया रूप में प्राप्त हो जाती हैं वह स्वयं पर बल दिया है, वे निम्न हैं -

में खेचरी विद्या, रस (पारद) सिद्धि, भूगर्भ सिद्धि, वशीकरण, शत्रुं स्तम्भन, अदृश्य होने की शक्ति, यौवन और बल की प्राप्ति, मनोकामना पूर्ति, दिव्य रसों की सिद्धि आदि अनेक सिद्धियों के साथ-साथ प्रखर और तेजस्वी व्यक्तित्व का स्वामी बन जाता है। यदि कहा जाय, कि योगिनी साधना सम्पन्न किये बिना तंत्र की पूर्णता नहीं प्राप्त की जा सकती, तो यह अतिशयोक्ति पूर्ण नहीं होगा।

जीवन में योगिनी साधना की पूर्ण प्रखरता केवल प्रिया रूप में ही सम्पन्न करने पर सम्भव है। प्रेमिका के रूप में सिद्ध होने पर वे प्रतिपल साधक पर प्रेम और स्नेह की वर्षा करने के साथ-साथ उसका मार्गदर्शन भी करती रहती हैं और साधक की साधनात्मक सहचरी मात्र न हो कर उसके सम्पूर्ण जीवन को गति प्रदान करने में समर्थ होती हैं।

...परन्तु इस प्रेम में वासना को कोई स्थान नहीं होता, तंत्र अपने आपमें वासना से परे है, क्योंकि वासना अपने आपमें एक अधोगमी प्रक्रिया है, जिसके माध्यम से नैतिक और आध्यात्मिक पतन की क्रिया ही सम्पन्न होती है; जबकि तंत्र तो जीवन की ऊर्ध्वगमी प्रक्रिया है, जिसके माध्यम से 'शव' से 'शिव' बनने की क्रिया सम्भव होती है और जीवन का मूल ध्येय, जीवन की पूर्णता प्राप्त होती है।

तंत्र और वासना जीवन के दो विपरीत ध्रुव हैं।

अतः वासना को दूर हटा कर ही योगिनी साधना को जीवन में स्थान दिया जा सकता है और जीवन में तंत्रमयता को उतारा जा सकता है, क्योंकि तंत्र अपने आपमें भोग और मोक्ष दोनों को ही प्रदान करने वाला है, जीवन के दोनों पक्षों को साथ लेकर चलने की धारणा रखता है।

यद्यपि कुछ अनधिकारी स्वार्थी तांत्रिकों के व्यभिचारों के फलस्वरूप मोहन, उच्चाटन आदि तांत्रिक क्रियाओं को हेय वृष्टि से देखा जाने लगा है, लेकिन मूलतः न तो ये क्रियाएं व्यभिचार युक्त हैं और न ही इनका उद्देश्य दूषित है।

तंत्र की पूर्णता को प्राप्त करने के लिए इस प्रकार की साधनाओं में दक्ष होना आवश्यक भी है।

तांत्रिक ग्रंथों में कुल चौंसठ प्रकार की योगिनियों का विवरण प्राप्त होता है। यों तो सभी का अपना अलग महत्व है और उसी के अनुरूप उनके अलग-अलग मंत्र और साधना विधान है, परन्तु जो प्रथम बार इस साधना को सम्पन्न करने का विचार करते हैं, उनके लिए सभी ग्रंथों ने एक मत से सर्वप्रथम जिन षोडश योगिनियों की साधना सम्पन्न करने की आवश्यकता

1. दिव्ययोगा, 2. महायोगा, 3. सिद्धयोगा, 4. माहेश्वरी, माहेश्वरी
 5. कालरात्रि, 6. हुंकारी, 7. भूवनेश्वरी, 8. विश्वरूपा, 9. कामाक्षी,
 10. हस्तिनी, 11. मंत्रयोगिनी, 12. चक्रिणी, 13. शुभा, 14. शंखिनी, 15. पद्मिनी, 16. वैताली।

ये सभी योगिनियाँ अपने आप में दिव्य और अलौकिक क्षमताओं से युक्त होती हैं और सिद्ध होने के साथ ही अपने साधक को भी अलौकिकता, दिव्यता और अद्वितीयता प्रदान कर उसे पल भर में ही श्रेष्ठता पर ले जा कर खड़ी कर देती हैं, जहां पहुंचना साधक के स्व के प्रयास से असम्भव ही है।

नीचे साधक की जानकारी हेतु उपरोक्त घोडश योगिनियों का ध्यान व उनका संक्षिप्त विवरण प्रस्तुत किया जा रहा है -

दिव्य योगा

संयाचे योगविद्यां त्वां दिव्य ज्ञान समन्विते ।

योगप्रभावां योगेशीं योगीन्द्र हृदयस्थिताम् ॥

“दिव्य ज्ञान से सुशोभित, योगियों के हृदय में निवास करने वाली योगेश्वरी दिव्य योगा से पूर्ण योग विद्या की मैं याचना करता हूँ।”

इस योगिनी का साहचर्य प्राप्त करने के उपरान्त ही योग विद्या को पूर्णता से समझ कर खेचरी विद्या में पारंगत हुआ जा सकता है व जीवन में उतारा जा सकता है।

महायोगा

योगविद्या महायोगा महातेजा महेश्वरी ।

मायाधारी मानस्तरा मान्-सम्मानतत्परा ॥

“महायोगेश्वरी, महातेजस्वी, अनेक मायाधारी मान-सम्मान प्रदान करने वाली महायोगा का मैं आह्वान करता हूँ।”

योगिनी महायोगा का स्वरूप अत्यन्त तेजस्वी है और वह अपने साधक को मान-सम्मान से सम्बन्धित अनेक सिद्धियाँ और पूर्ण वैभव देने में समर्थ है। इसे सिद्ध करने पर साधक चतुर्दिक्, सम्पूर्ण विश्व में अपनी कीर्ति फैलाने में समर्थ होता है।

सिद्धयोगा

आगच्छ सिद्धयोगे त्वां नाद बिन्दु स्वरूपिणी ।

सर्वज्ञा सिद्धिदात्री च सिद्धविद्यास्वरूपिणी ॥

“नाद और बिन्दुरूपा, सिद्धि देने वाली, सब कुछ जानने वाली, समस्त विद्याओं की प्रतिमूर्तिरूपा सिद्धयोगा को मैं आहूत करता हूँ।”

इस योगिनी को जीवन में उतारने के उपरान्त किसी भी साधना में असफलता का प्रश्न ही नहीं रह जाता, साथ ही साधक त्रिकालदर्शी बनने में समर्थ होता है।

प्रणवाद्या महाविद्या महाविद्ध विनाशिकी ।

मानदार योगमाता सा माहेश्वरी प्रचोदयात् ॥

“प्राणस्वरूपा, सभी विद्याओं की स्वामिनी, सभी विद्याओं को दूर करने वाली, योगमाता, सभी को सम्मान दिलाने में समर्थ भगवती माहेश्वरी का मैं चिन्तन करता हूँ।”

योगिनी माहेश्वरी की साधना के फलस्वरूप जीवन की सभी समस्याएं, विद्या, बाधाएं आदि दूर हो जाते हैं और साधक अनेक गोपनीय विद्याओं को जानने में समर्थ होता है।

कालरात्रि

कालरूपा कलातीता त्रिकालज्ञा कुलात्मजा ।

कुलकुण्डलिनी सैषा कैलाश नज भूषिता ॥

“काल स्वरूपिणी, समस्त कलाओं से परे, त्रिकालज्ञ, श्रेष्ठतम कुल में उत्पन्न, कुण्डलिनी स्वरूपा, कैलाश पर्वत को अपनी दिव्यता से सुशोभित करने वाली देवी कालरात्रि का मैं आह्वान करता हूँ।”

इस योगिनी का आश्रय लेने पर अकाल मृत्यु, किसी गुप्त शत्रु द्वारा किये गए तांत्रिक प्रयोग आदि का निराकरण होता है और किसी के भी भूत-भविष्य को जाना जा सकता है।

हुंकारी

हुं हुं हुंकाररूपां तां हीं हीं शक्ति स्वरूपिणी ।

हूं हूं हूं हाकिनी चैव योगमाता समन्विता ॥

“हुंकार रूपिणी, सभी शक्तियों से युक्त हाकिनीरूपा, समस्त योगमाता से विभूषित देवी हुंकारी का मैं आह्वान करता हूँ।”

योगिनी हुंकारी की साधना सिद्धि के उपरान्त साधक अकेला ही अपने शत्रु की पूरी सेना का विनाश करने में समर्थ होता है।

भूवनेश्वरी

वारीश्वरी योगरूपा योगिनी सर्वमंगला ।

ध्यानातीता ध्यानज्ञम् ध्यानज्ञा ध्यानथारिणी ॥

“सरस्वती स्वरूपा, योग स्वरूपिणी, सर्वमंगलमयी, ध्यानरूपा, ध्यान के द्वारा प्रतीत होने वाली योगिनी भूवनेश्वरी का मैं ध्यान करता हूँ।”

इस योगिनी के वरदायक प्रभावों से साधक वाक् सिद्धि प्राप्त करने में समर्थ होता है।

विष्वरूपा

विश्वेश्वरि विश्वमाता विश्वभावमयी शुभा ।

विश्वरूपा च विश्वेशी विश्वसंहारकारिणी ॥

“समस्त विश्व का मानुवत् पोषण करने वाली, विश्व की

स्वामिनी, विश्व की उत्पत्ति, पालन और संहार करने वाली विश्वरूपा का आह्वान करता हूँ।”

इस योगिनी की साधना के उपरान्त साधक को भूगर्भ सिद्धि तथा विपुल धन-वैभव की प्राप्ति होती है और वह समस्त भौतिक सुखों को प्राप्त करने में समर्थ होता है।

साथ ही उसके अन्दर की विषय वासनाएं समाप्त हो कर ज्ञान की उत्पत्ति होती है।

कामाक्षी

**कुबेर पूज्य कुलजा काश्मीरा के शवार्चिता ।
कात्यायनी कार्यकरी कलादलनिवासिनी ॥**

“कुबेर के द्वारा संपूजित, श्रेष्ठ कुल में उत्पन्न, केशर से चर्चित, सभी कलाओं से पूर्ण कात्यायनी रूपा कामाक्षी का मैं चिन्तन करता हूँ।”

इस योगिनी का पूजन सिंर्फ केशर से किया जाता है। इसे सिद्ध करने पर साधक को कायाकल्प, कामदेव के समान यौवन व पौरुष तथा असीम बल की प्राप्ति होती है और उसके समस्त प्रकार के रोगों का नाश होता है।

हस्तिनी

**सर्ववश्यंकरी शक्तिः सर्वस्तंभिनी तथा ।
सर्वसंमोहिनी चैव कुञ्जरेश्वर ग्रामिनी ॥**

“समस्त विश्व को वश में करने वाली, सभी को स्तम्भित करने वाली, सभी को सम्मोहित करने वाली, मस्त हथिनी सी चाल चलने वाली योगिनी हस्तिनी का आह्वान करता हूँ।”

हस्तिनी योगिनी की साधना के फलस्वरूप साधक उच्चाटन, स्तम्भन आदि के साथ-साथ मनुष्य, पशु, पक्षी चराचर विश्व को सम्मोहित और वशीभूत करने में सक्षम होता है।

मंत्रयोगिनी

**महामंत्रमयी देवी देवगन्धर्व सेविता ।
योगिभिश्चैव संपूज्या मंगला च मन्त्रोहरा ॥**

“मंत्र स्वरूप, देव-गन्धर्वों द्वारा सेवित, योगियों के द्वारा पूजित, मंगलमयी, सौन्दर्यमयी योगिनी का मैं आह्वान करता हूँ।”

इस योगिनी के सान्निध्य में साधक को मांत्रिक साधनाओं में शीघ्र ही पूर्ण सफलता प्राप्त होती है और वह अदृश्य होने की विद्या का ज्ञाता हो जाता है।

चक्रिणी

**वशः स्वरूपिणी चक्रे योगमार्गप्रदायिनी ।
यज्ञांगी योगस्त्वा च योगानन्दात्म संस्तुता ॥**

“यश प्रदान करने वाली, ज्ञान तथा योगमार्ग में प्रवेश देने

वाली, यज्ञ के अंगभूत, योग के आनन्द से सम्भूत चक्र धारण करने वाली देवी चक्रिणी का मैं आह्वान करता हूँ।”

यह योगिनी योग तथा विव्य रसों की अनेक सिद्धियां प्रदान करने में समर्थ और आनन्द प्रदान करने वाली है।

शुभ्रा

**शम्भवी सिद्धिदा सिद्धा सुषुम्नासुरनन्दिनी ।
शुभ्रस्त्वा तथा शुद्ध शक्ति बिन्दु वासिनी ॥**

“शम्भुरूपा, सिद्धिमयी, अपने भक्तों को सिद्धि देने वाली, सुषुम्ना मार्ग से साधकों को प्रेरित करके आनन्द प्रदान करने वाली, समतामयी, परमशुद्धा, शक्ति बिन्दु पर निवास करने वाली देवी शुभ्रा का ध्यान करता हूँ।”

इस योगिनी की साधना से कुण्डलिनी जाग्रत होती है और साधक परम पद को प्राप्त करने की ओर अग्रसर होता है।

शंखिनी

**शंखचक्र गदा हस्तरा योगीन्द्रस्वान्तहारिणी ।
शारदेन्दु प्रसद्वास्या शांकरी शिवभाषिणी ॥**

“शंख, चक्र तथा गदा धारण करने वाली, योगियों के हृदय को आनन्द देने वाली, शारदीय चन्द्रमा के समान प्रसन्न मुख वाली, शंकरस्त्वा, मंगलभाषिणी देवी शंखिनी का आह्वान करता हूँ।”

इस योगिनी की साधना से समस्त विपत्तियों, बाधाओं, शत्रुओं आदि से पूर्ण सुरक्षा प्राप्त होती है और साधक आनन्द पूर्वक साधनाओं में सफलता की ओर अग्रसर होता है।

पद्मिनी

**प्रियव्रतपरा नित्या परमप्रेम प्रदायिनी ।
प्रफुल्लपद्मवदना पद्मधर्मनिवासिनी ॥**

“प्रियवादिनी, प्रेम प्रदान करने वाली, खिले कमल के समान सब के ज्ञान एवं योग मार्ग को विकसित करने वाली देवी पद्मिनी का आह्वान करता हूँ।”

इस योगिनी की साधना से साधक पूर्ण कायाकल्प, पौरुष व अतीन्द्रीय क्षमताएं प्राप्त करते हुए साधनात्मक पूर्णता की ओर अग्रसर होता है।

वैताली

**योगेश्वरी च वज्रांगी विभूषणभूषिता ।
वेदमार्गरता वेद मन्त्रस्त्वा वषट् क्लिया ॥**

“योगेश्वरी, सुदृढ़ देव वाली, वीरता से परिपूर्ण, वैदिक मार्ग का अनुसरण करने वाली वेदमंत्रमयी देवी वैताली का आह्वान करता हूँ।”

इस योगिनी की साधना के उपरान्त साधक अत्यन्त तेजस्विता प्राप्त करता हुआ अपने समस्त शत्रुओं का नाश करने में सक्षम होता है, साथ ही साथ उसे मंत्र साधनाओं में भी सफलता प्राप्त होती है।

ये हैं घोड़श योगिनीयां और उनका विवेचन, साधक अपनी मनोकूलता के अनुसार किसी भी योगिनी की साधना कर सकता है।

योगिनी साधना

इस साधना को कोई भी व्यक्ति, चाहे वह पुरुष हो या स्त्री, युवा हो या वृद्ध, सम्पन्न कर सकता है।

इसके लिए यह आवश्यक नहीं है, कि किसी वृक्ष की मूल में बैठें या तिराहे पर मंत्र जप करें या रात्रि को शमशान में जायें या नदी के किनारे आसन लगायें।

यह पूर्णतः सौम्य साधना है और इसे अपने पूजा कक्ष में बैठ कर सम्पन्न किया जा सकता है, आवश्यकता है गुरु और मंत्र के प्रति श्रद्धा और पूर्ण विश्वास की।

साधना विधान

इस साधना में 'घोड़श योगिनी यंत्र' व 'योगिनी माला' की आवश्यकता पड़ती है, जो योगिनी तंत्र के अनुसार मंत्र सिद्ध एवं प्राण प्रतिष्ठित हों।

इस साधना को किसी भी माह के शुक्रवार से प्रारम्भ किया जा सकता है।

यह ग्यारह दिवसीय साधना है।

रात्रि में नौ बजे के बाद स्नान कर स्वच्छ पीले वस्त्र धारण कर पीले आसन पर बैठें, गुरु पीताम्बर भी ओढ़ लें।

सामने लकड़ी के बाजोट पर पीला रेशमी वस्त्र बिछा कर उस पर गुलाब के पुष्पों के आसन पर घोड़श योगिनी यंत्र को स्थापित करें।

मानसिक गुरु पूजन कर गुरु मंत्र का चार माला मंत्र जप करने के उपरान्त गुरुदेव से इस साधना को सम्पन्न करने की आज्ञा व इसमें पूर्ण सफलता हेतु आशीर्वाद प्राप्त करें।

फिर हाथ में जल लेकर के प्रथम दिन संकल्प करें, नित्य संकल्प लेने की आवश्यकता नहीं है-

'मैं अमुक गोत्र में उत्पन्न अमुक नाम का व्यक्ति, अमुक पिता का पुत्र अपने आध्यात्मिक एवं भौतिक जीवन में घोड़श योगिनियों का साहचर्य प्राप्त करने हेतु इस घोड़श योगिनी साधना को सम्पन्न कर रहा हूं, मुझे इस साधना

३५ 'अप्रैल' 2009 मंत्र-तंत्र-यंत्र विज्ञान '71' ५०



में पूर्ण सफलता प्राप्त हो, जिससे कि मैं साधनाओं में तीव्रता के साथ आगे बढ़ कर सफलता प्राप्त कर सकूं।'

यंत्र के समक्ष क्रमशः प्रत्येक योगिनी का ध्यान उच्चरित कर उसका पूजन कुंकुम, अक्षत, केशर, पुष्प, धूप-दीप व नैवेद्य से करें। कामाक्षी योगिनी का पूजन मात्र केशर से करें।

अब नीचे दिये गए प्राण प्रतिष्ठित मंत्र के द्वारा यंत्र में निहित चैतन्यता और ऊर्जस्विता को अपने शरीर के अन्दर उतारें, जिससे कि घोड़श योगिनियों की चेतना आपके शरीर में स्थापित हो सके और शीघ्र सफलता प्राप्त हो सके।

पहले दाहिने हाथ में जल ले कर विनियोग करें -

ॐ अस्य प्राण प्रतिष्ठा मंत्रस्य ब्रह्माविष्णु महेश्वर
ऋष्यः, ऋण्यजुः साम छन्दांसि, क्रियामयवपुः

प्राणाच्छ्वा देवता, आं बीजम् हीं शक्तिः, क्रौं कीलकं
प्राणप्रतिष्ठापने विनियोगः ।

जल भूमि पर छोड़ दें और यंत्र पर अपना दाहिना हाथ रख
कर निम्न मंत्र बोलते हुए यह भावना करें, कि यंत्र की समस्त
चैतन्यता धीरे-धीरे आपके अन्दर समाहित होती जा रही है -

प्राण प्रतिष्ठा मंत्र

ॐ आं हीं क्रौं यं रं लं वं शं षं सं हंसः सोऽहं अस्य
प्राणः इह प्राणः, ॐ आं हीं क्रौं यं रं लं वं शं षं सं
हंसः सोऽहं अस्य जीव इह स्थितः, ॐ आं हीं क्रौं यं
रं लं वं शं षं हंसः सोऽहं अस्य सर्वेन्द्रियाणि
वाङ् मनस्त्वकं चक्षुः श्रोत्रं जिह्वा घ्राण
पाणिपादपायूपस्थानि इहागत्य सुखं चिरं तिष्ठन्तु
स्वाहा ॥

फिर योगिनी माला से पहले मूल घोडश योगिनी मंत्र का
एक माला मंत्र जप करें, फिर क्रमानुसार घोडश योगिनियों के
विशिष्ट मंत्रों का एक-एक माला मंत्र जप करें। प्रत्येक योगिनी
मंत्र का एक माला मंत्र जप करने से पूर्व तथा बाद में मूल
घोडश योगिनी मंत्र का एक माला जप होना चाहिए। उदाहरणार्थ
पहले मूल मंत्र का एक माला मंत्र जप करें, फिर दिव्य योगा
योगिनी मंत्र का एक माला मंत्र जप करें, फिर मूल मंत्र का एक
माला मंत्र जप करें। इसी प्रकार प्रत्येक योगिनी से सम्बन्धित
मंत्र का जप करना है। ऐसा ग्यारह दिन तक नित्य करें।

मूल घोडश योगिनी मंत्र

॥ ॐ एं हीं क्लौं श्रीं वं श्रौं घृं षं दृं क्रीं हीं नूं
प्रों यं शं गुं घोडश योगिन्यै नमः ॥

दिव्य योगा

॥ ॐ एं एं दिव्य अरागच्छ अरागच्छ ॐ फट् ॥

महायोगा

॥ ॐ हौं म्लौं ज्लौं महायोगा सिद्धचे ॐ फट् स्वाहा ॥

सिद्धयोगा

॥ ॐ हीं एं फ्रौं सः अरागच्छ ॐ फट् ॥

माहेश्वरी

॥ ॐ हीं हीं माहेश्वरि एहि एहि ॐ फट् स्वाहा ॥

कालरात्रि

॥ ॐ क्लौं क्लौं कालरात्रि सिद्धचे ॐ फट् स्वाहा ॥

हुंकारी

॥ ॐ हुं हुं हीं हीं हूं हूं फट् ॥

भुवनेश्वरी

॥ ॐ हीं हीं अरागच्छ भुवनेश्वरि ॐ फट् ॥
विश्वरूपा

॥ ॐ वं वं विश्वरूपा वं वं ॐ फट् ॥
कामाक्षी

॥ ॐ कं कं कामाक्षी एहि एहि ॐ फट् ॥
हस्तिनी

॥ ॐ एं क्लौं हस्तिनामिन्यै सिद्धचे क्लौं एं ॐ ॥
मंत्रयोगिनी

॥ ॐ मं मंत्ररूपे एहि एहि ॐ ॥
चक्रिणी

॥ ॐ हीं हूं हीं चक्रेश्वर्यै सिद्धचे ॐ फट् ॥
शुभ्रा

॥ ॐ शं शं शुभ्रे आगच्छ आगच्छ शं शं ॐ ॥
शंखिनी

॥ ॐ हीं श्रीं शं शंखिनी आगच्छ ॐ फट् ॥
पद्मिनी

॥ ॐ एं हीं श्रीं यं फं पद्मिनी एहि ॐ फट् ॥
वैताली

॥ ॐ आं हीं वं वैतालि एहि एहि ॐ फट् ॥

मंत्र जप की समाप्ति पर साधक साधना कक्ष में सोयें।
अगले दिन पुनः इसी प्रकार साधना सम्पन्न करें। बारहवें दिन

पीले वस्त्र सहित यंत्र और माला को नदी में प्रवाहित कर दें।
साधना काल में कुछ बातों का ध्यान रखना आवश्यक है -

इस साधना को रात्रि में ही सम्पन्न करें।

इन ग्यारह दिनों में यथासम्भव कम से कम, बोलने का
प्रयास करें, मौन सर्वोत्तम है।

मात्र एक समय ही शुद्ध शाकाहारी भोजन करें, फलाहार
सबसे उत्तम है, मांस-मदिरा या उत्तेजक पदार्थों से बचें।

मात्र गुरु चिन्तन, इष्ट चिन्तन और इस साधना विशेष
से सम्बन्धित चिन्तन में ही समय व्यतीत करें।

ब्रह्मचर्य का पालन अनिवार्य है।

उपरोक्त सभी नियमों का पालन करते हुए निष्ठा और श्रद्धा
पूर्वक किये गए मंत्र जप से सफलता प्राप्त होती ही है। यदि
साधना से पूर्व साधक 'घोडश योगिनी दीक्षा' प्राप्त कर लेता
है, तो फिर उसकी सफलता में कोई सन्देह नहीं रह जाता
और वह अद्वितीयता और श्रेष्ठता के मार्ग पर गतिशील हो,
पूर्णता की ओर अग्रसर हो जाता है।

साधना सामग्री - 360/-

★ ☆ ☆ क्रियायोग ☆ ☆ ☆

तपस्या, स्वाध्याय एवं ईश्वरप्राणिधान; ये क्रियायोग कहलाते हैं। वैसे क्रियायोग का शाब्दिक अर्थ है - 'कर्म के आश्रय से योग का अभ्यास करना।' शरीर प्राण एवं इन्द्रिय आदि का उचित रूप से अभ्यास द्वारा वशीकरण, तप, प्रणव आदि पवित्र भगवन्नाम जप एवं उपनिषद् इत्यादि विवेक ज्ञानोत्पादक सत्-शास्त्रों का नियमित अध्ययन, रूप, स्वाध्याय एवं सब कर्मों के कर्मफल की अनिच्छापूर्वक ईश्वर को अर्पण स्वरूप ईश्वर प्रणिधान इन तीनों का सामूहिक अभिधान क्रियायोग या कर्मयोग है, जिसके लिए गीता में कहा गया है - 'योगः कर्मसु कौशलम्' (2/50)

प्रथम परिच्छेद में योगप्राप्ति के मुख्य उपाय अभ्यास एवं वैराग्य के साधन की विविध विधियों का विधान है, किन्तु उनके आश्रय से समाहित चित्त-युक्त उत्तम अधिकारी, ही योग साधना कर सकता हैं मध्यम वर्ग के अधिकारी जिनका चित्त अभी सांसारिक भोग-वासनाओं एवं राग-द्रेष आदि से चंचल (विक्षिप्त) है, उन्हें इस रीति से योग की प्राप्ति दुर्लभ है। विक्षिप्त चित्त-युक्त जिज्ञासु क्लेश क्षीण करके अभ्यास-वैराग्य पूर्वक समाधि की भावना आत्मसात् कर सके, इस अभिप्राय से क्रियायोग का विधान है।

तपस्या, शारीरिक, स्वाध्याय, वाचिक एवं ईश्वरप्राणिधान 'मानसिक' क्रियायोग है।

तप - 'नातपस्विनो योगसिद्धयति' इस प्रद्विति के अनुसार तपस्वी को योग सिद्ध नहीं होता। अनादिकालीन क्लेश एवं कर्म के संस्कारों से संकुलित चित्त का मल तप के बिना विरज नहीं हो सकता। अतः क्रियायोग की प्राप्ति के लिए तप उसका प्रथम सोपान है, किन्तु यह तपश्चर्या इस प्रकार की होनी चाहिए, जिससे शारीरिक धातु-वैषम्य से योग-साधना में विघ्न न पड़े, अर्थात् शरीर तथा इन्द्रियों में बाधा उत्पन्न न हो और मन प्रसन्न रहे - ऐसा तप योगेच्छु से सेव्य है। इस प्रकार शीत - ऊर्ध्व, क्षुधा - पिपासा, सुख-दुःख, हर्ष-शोक एवं मान-अपमानादि समस्त द्रन्द्रों की दशा में विक्षेपशून्य स्वास्थ्यकारक एवं चित्त की निर्मलता का हेतु तप, सात्विक कहलाता है। सात्विक तप से ही योग-साधना में स्थिर प्रवृत्ति होती है। शारीरिक पीड़ा, व्याधि, इन्द्रिय-विकास एवं चित्तमालिन्य का उत्पादक तामसी तप, योग में निन्दित है, क्योंकि व्याधि, शारीरिक पीड़ा आदि चित्त की प्रसन्नता एवं योगमार्ग के विघ्न हैं।

जिस प्रकार स्वर्ण को अग्नि में तपाने से धातु-मल भस्म होकर स्वर्ण स्वच्छ एवं दीम हो उठता है, उसी प्रकार तपस्या की अग्नि में शरीर एवं इन्द्रियादि तस होकर रज एवं तम का मल नष्ट हो जाने से सत्वगुण के प्रकाश में वृद्धि होती है।

तप शारीरिक, वाचिक एवं मानसिक तीन प्रकार के होते हैं -
शारीरिक तप

देवता, ब्राह्मण, गुरुजन एवं ज्ञानीजनों का पूजन, पवित्र, सरल, ब्रह्मचर्य एवं अहिंसापूर्ण जीवनयापन शारीरिक तप कहलाता है। आसन प्राणायाम तथा शुद्ध-सात्विक आहार-विहारादि शारीरिक तप के अन्तर्गत ही हैं। भगवद्गीता में इन्हें युक्त आहार-विहार कहा गया है। युक्त आहार-विहार रिक्त साधक की योग साधना दुःखनाशक होती है -

**युक्तहारविहारस्य युक्तचेष्टय कर्मसु।
युक्तस्वप्नावशेषस्य योगो भवति दुःखहर॥**

युक्तहार से तात्पर्य शुद्ध, सात्विक योगोपयोगी एवं परिमित भोजन से है। योगाभ्यासी को आहार के विषय में पूर्ण सचेत रहना चाहिए, क्योंकि अन्न का शरीर एवं मन पर प्रत्यक्ष प्रभाव पड़ता है। (तुल, अन्नमयंहि सौम्य मनः - छान्दोम्य.) अन्न सात्विक एवं पवित्र साधनों से अर्जित होना चाहिए। स्वाद के वशीभूत न होकर। शरीर में आसक्ति एवं ममता त्यागपूर्वक शरीर एवं चित्त को केवल भजन-कार्य में उपयोगी बनाने वाले स्निग्ध, मधुर, प्रिय एवं क्षुधा-परिणाम के चतुर्थ भाग से न्यून आहार करना युक्तहार या मिताहार कहलाता है। मिताहार का विशेष विवरण हठयोग के ग्रंथों में दृष्टव्य है, यथा, घेरण दंहिता, हठयोग प्रदीपिका...।

युक्त विहार

अत्यन्त धकान की उत्पत्ति से भजन में विघ्नकारक लम्बी एवं कठिन यात्रा वर्जित है। चलना-फिरना बिल्कुल बंद कर देने से भी मतरूप आलस्य एवं प्रमाद का आविर्भाव होता है, ये भजन में बाधक हैं। अतः धूमने-फिरने का कार्य इतनी ही मात्रा में होना चाहिए, जिससे शरीर स्वस्थ एवं प्रसन्न रहे। इससे साधना सफलतापूर्वक होती है।

युक्त चेष्टा

नित्य नियमित कर्तव्य एवं नियत सत्कर्मों को करते रहना तथा अधिक शारीरिक श्रम न करना एवं कर्तव्य त्याग न करना, युक्त चेष्टा है।

युक्त स्वप्नालबोध

आवश्यकता से अधिक या न्यून मात्रा में न सोना युक्तारव्यन्नावबोध है। तमवृद्धि बचाने के लिए रात्रि में उचित परिमाण से अधिक नहीं सोना चाहिए। निद्रा को क्रमिक अल्प करना चाहिए (स्वास्थ्य आदि पर लक्ष्य रखकर), कृच्छ्र, चन्द्रायण आदि उग्र तप साधारणतया योग में वर्जित हैं। तप का सारावान् विवरण गीता 17/5-6 में दृष्टव्य है।

आवश्यकतानुसार केवल सत्य, प्रिय एवं सबके साथ यथायोग्य सम्मानपूर्व वाणी में व्यवहार करना वाचिक तप है। वाणी को संयत रखने की दृष्टि में प्रयत्नपूर्वक समाह में एक दिन का मौनेव्रत रखना प्रशस्त है। (प्रारम्भिक अवस्था में ही प्रयोज्य)

मानसिक तप

मन का संयम मानसिक तप है। हिंसात्मक क्लिष्ट भावनाओं को तथा अपवित्र विचारों को मन से दूर करने का प्रयत्न करना तथा मैत्री, करुणा, मुदिता आदि शुद्ध, पवित्र भावों को मन में धारण करना मानसिक तप है।

शरीर एवं इन्द्रियों को अपनी इच्छानुसार कार्य न करने देकर अपने वश में रखना ही तपस्या है।

स्वाध्याय

स्वाध्याय से तात्पर्य भगवान के पवित्र प्रणव आदि नामों तथा गायत्री आदि मंत्रों के जप तथा उपनिषद्, गीता आदि मोक्ष शास्त्रों के अध्ययन से है। इससे भी वृत्तिनिरोध होता है तथा योग साधना में श्रद्धा होती है।

ईश्वरप्रणिधान

ईश्वरप्रणिधान भी योग का साधन है। मनसा, वाचा, कर्मणा जो कुछ भी कर्म करें, उन सबको ईश्वर को अर्पित कर देना ईश्वर प्रणिधान है। जैसा कि निम्न श्लोक में कहा गया है -

कामतोऽकामतो वापि यत्करोमि शुभाशुभम् ।

तत्सर्वं त्वयि संन्यस्तं त्वत्प्रयुक्तः करोम्यहं ॥

अर्थात् फल की इच्छा से या निष्काम भाव से जो भी शुभ या अशुभ कर्म मैं करता हूँ, वह सब मैं आपको अर्पित करता हूँ, क्योंकि हे अन्तर्यामी परमेश्वर! मैं आपके द्वारा प्रेरित होकर कर्म करता हूँ, अर्थात् इसमें मेरापन कुछ नहीं है।

...अथवा ईश्वरप्रणिधान का दूसरा अर्थ फल-प्राप्ति की इच्छा के परित्यागपूर्वक कर्मों का अनुष्ठान है। जैसा कि गीता में भगवान ने कहा है -

कर्मण्येवाधिकरस्ते मा फलेषु कदाचन ।

मा कर्मफलहेतुभू मा ते सङ्गोऽस्त्वकर्मणि ॥

वस्तुतः 'साधनपाद' में मध्यम अधिकारियों के हेतु अष्टांग योग के साधनों का विधान है। तप, स्वाध्याय एवं ईश्वर प्राणिधान तो वक्ष्यमाण पांचों नियमों के ही अन्तिम तीन भाग हैं, फिर भी व्यावहारिक जीवन को शुद्ध एवं सात्त्विक बनाने में ये विशेष रूप से सहायक हैं। इनसे चित्त शुद्ध एवं निर्मल होकर अष्टांगयोग शुरू हो जाता है।

तप से शरीर, वाणी एवं अन्तःकरण की शुद्धि होती है। स्वाध्याय से तत्त्वज्ञान की प्राप्ति एवं चित्त की एकाग्रता का सम्पादन होता है। ईश्वरप्राणिधान से कर्मों में कामना एवं कर्मफल में अनासक्ति तथा ईश्वर की कृपा उपलब्ध होती है। इसी से इन्हें क्रियायोग नाम देकर अष्टांग योग के पूर्व अनुष्ठान करने को बताया गया है। वैसे तपः स्वाध्याय - क्रियायोग का व्यापक अर्थ लेने पर योग के आठों अंग इन्हीं में अन्तर्भूत हो सकते हैं।

क्रियायोग के दो प्रयोजन हैं - 'समाधि की भावना करना' एवं 'क्लेशों को क्षीण करना'।

क्रियायोग से अशुद्धि का क्षय होता है। समस्त अन्तर्बाह्य इन्द्रियों की राजस चंचलता एवं तामस-जड़ता ही उसकी अशुद्धि है। यही अशुद्धि क्लेशों की प्रबल अवस्था है। अतः अशुद्धि का आवरण हटने से ही क्लेश क्षीण होते हैं। क्लेश क्षीण होने से साधक समाधि की ओर अभिमुख होता है अर्थात् समाधि की भावना होती है।

शंका हो सकती है, कि यदि क्रियायोग से क्लेश क्षीण हो सकते हैं, तो विवेक ख्याति व्यर्थ है अथवा संख्यानाग्नि क्लेशों को दग्ध करने में समर्थ होता है, तो क्रियायोग से क्लेशों का तन्तुकरण व्यर्थ है।

इसका समाधान यह है, कि क्रियायोग से क्लेशों को क्षीण किये बिना प्रसंख्यानाग्नि रूप विवेकख्याति उत्पन्न नहीं हो सकती, क्योंकि प्रबल एवं विरोधी क्लेशों से सम्बद्ध चित्त विवेकख्याति उत्पन्न करने में असमर्थ है। क्रियायोग के अनुष्ठान से चित्त शांत एवं वैराग्य के संपादन योग्य बनता है। अभ्यास एवं वैराग्य से क्रमप्राप्त सम्प्रज्ञात समाधि का उदय होता है। सम्प्रज्ञात समाधि के अभ्यास की दृढ़ता से उसकी अन्तिम अवस्था में विवेकख्याति का उदय होता है। क्षीणकृत क्लेश प्रसंख्यानाग्नि के द्वारा भ्रष्टबीजवत् उत्पादकशक्ति-शून्य बनते हैं। तब परवैराग्यजन्य संस्कारों की दृढ़ता से चित्त का विवेकख्याति रूप अधिकार भी समाप्त होकर समाधि का उदय होता है।

जहां शक्ति अपने तीनों रूपों में विद्यमान हैं
 जो योग माया प्रकृति है
 जिसे सिद्ध करने से प्राप्त होती हैं
महाकाली, महालक्ष्मी,
महासरस्वती
 ऐसी अद्भुत देवी हैं



भगवती विंध्यवासिनी

जीवन तो अविरल यात्रा है उसमें एक दो नहीं हजारों तूफान आते हैं,
 बाधाएं, परेशानियां आती हैं। सुख की तलाश में व्यक्ति भटकता ही रहता है,
 उसकी कामनाएं अद्यूरी रह जाती हैं, इन समस्याओं के समाधान हेतु
 साधना सर्वोपरि उपाय है। शक्ति साधना में विंध्यवासिनी साधना का
 उच्च स्थान है, गृहस्थ साधकों के लिए एक वरदान है
 जिसे सम्पन्न कर भोग, काम और सिद्धि प्राप्त होती है। शत्रुओं और
 बाधाओं का अन्त हो जाता है। ऐसी दिव्य साधना है - विंध्यवासिनी साधना -

वर्तमान में उत्तर प्रदेश में मिर्जापुर के पास विंध्याचल पर्वत पर मां विंध्यवासिनी का शक्तिपीठ है और वहीं गुफा में स्थित एक ओर काली मंदिर है, दूसरी ओर अष्टभुजा स्वरूप में सरस्वती मंदिर है। तीसरी ओर महालक्ष्मी का स्थान हैं। पूरा मन्दिर श्रीचक्र रूप में स्थित है। विंध्यवासिनी देवी को पर्वत निवासिनी शक्ति रूपा दुर्गा का स्वरूप माना गया है। जो त्रिशूल और मुण्ड धारण किये हुए हैं। जिनका स्वरूप अत्यन्त विशाल है। जो शत्रुओं का संहार करती है तथा अपने भक्त को विशुद्ध बुद्धि प्रदान करती है।

विंध्याचल पर्वत के बारे में द्वापर युग से पहले से भी देवी भागवत में एक विशिष्ट कथा आती है। इस कथा के अनुसार गंगा के किनारे विंध्याचल पर्वत का आकार निरंतर बढ़ता ही

होने लगी क्योंकि विंध्याचल पर्वत की ऊँचाई ने सूर्य की रोशनी को ही मंद कर दिया था। उस क्षेत्र के निवासियों ने सोचा कि यदि विंध्याचल पर्वत इसी प्रकार बढ़ता रहा तो एक दिन सूर्य की रोशनी बिल्कुल ही नहीं दिखाई देगी। तब इस स्थान में वनस्पति, जीव, जन्तु कैसे वृद्धि कर सकेंगे? कोई उपाय न मिलने पर एक महायज्ञ का आयोजन किया और यज्ञ पुरोहित के रूप में कृषि अगत्य को आमंत्रित किया।

कृषि ने यज्ञ को सम्पन्न कराया और कारण पूछा कि क्यों सभी लोग इतने दुःखी दिखाई दे रहे हैं? लोगों ने अपनी व्यथा बताई, इस पर कृषि ने कहा कि मेरे पास इस समस्या का समाधान है। कृषि अगत्य विंध्याचल पर्वत के सामने जाकर

गुप्त नवरात्रि विशेष तंत्र साधना का समय होता है। अनेक प्रकार की सिद्धियों के लिए यह समय उत्तम है।

अयन सांधि के अनुसार आषाढ़ और माघ मास के नवरात्रि गुप्त खप से मनाए जाते हैं। यह समय तांत्रिकों के लिए विशेष साधना का समय माना गया है। जिन चंद्र मासों में नवरात्रि का विद्यान है, उनमें क्रमशः चित्रा में दैत्र, पूर्वाषाढ़ से आषाढ़, अश्वनी से अश्विनी और मध्य से माघ नक्षत्रों पर आधारित है। यह पर्व रात्रि प्रदान इसलिए है कि तंत्र शास्त्र में 'रात्रि स्पृयते देवी दिवा स्पृ महेश्वर' अर्थात् दिन को शिव पुरुष खपा तथा रात्रि को शक्ति खपा माना गया है।

नवरात्रि पर्व को शुक्लपक्ष में प्रतिपदा से मनाने के संदर्भ में चंद्रलोक और भूलोक का समय चक्र प्रमुख कारण है। चंद्रलोक पितृ लोक में भी प्रातःकाल, मध्याह्न, सायं और मध्य रात्रि की चार संधियां होती हैं। प्रातःकाल कृष्ण की अष्टमी, मध्याह्न - अमावस्या, सायंकाल - शुक्लपक्ष की अष्टमी और मध्य रात्रि पूर्णिमा है।

प्रतिपदा से अष्टमी तक चंद्रलोक में पितरों का दिन और उस समय शुक्ल पक्ष का समय होने से चारों महीनों का नवरात्रि में प्रतिपदा से नवमी तक का समय देवी आराधना के लिए उपयुक्त माना गया है।

आद्याशक्ति मां दुर्गा का स्वखप तीव्र और शांत दोनों प्रकार का है। तामसी कार्यों अर्थात् शत्रु बाधा, भूत-प्रेत आदि दोष निवारण के लिए देवी स्वखप चण्डिका काली की तथा आर्थिक - व्यापारिक उज्ज्ञति के लिए मां दुर्गा की साधना की जाती है।

गुप्त नवरात्रि में तंत्र साधना के साथ-साथ भैरव साधना तथा दस महाविद्या साधना विशेष फलदायी होती है।

नवरात्रि में की जाने वाली पांच महाविद्या साधनाओं का विवेचन पृष्ठ संख्या 41 पर दिया गया है। उस विधि अनुसार साधनाएं अवश्य करें।

खड़े हो गये और ऋषि को देखकर विन्ध्याचल पर्वत ने लेट कर प्रणाम किया उसके झुकने पर ऋषि ने कहा कि मैं तुम्हें आशीर्वाद प्रदान करता हूं लेकिन पूरा आशीर्वाद रामेश्वरम् में अपनी तपस्या पूर्ण करके आऊंगा तभी प्रदान करूंगा। जब तक मैं नहीं आऊं तब तक तुम इसी स्थिति में ही रहना। ऋषि अगत्य अपनी तपस्या पूर्ण कर पुनः विन्ध्याचल पर्वत की ओर आये ही नहीं तथा विन्ध्याचल पर्वत झुका का झुका ही रहा। ऐसी स्थिति में ऋषि के आशीर्वाद स्वरूप तथा कृष्ण की कृपा से यह वरदान प्राप्त हुआ कि देवी शक्ति योगमाया अपने तीनों रूपों में महाकाली, महामरस्वर्ती, महालक्ष्मी विराजमान होंगी तथा विन्ध्याचल की परिक्रमा, हिमालय की परिक्रमा के समान ही पूर्णत्व दायिनी होंगी। तब से विन्ध्याचल पर्वत पर देवी का जाज्वल्य शक्ति पीठ स्थित है।

इसके अलावा श्रीमद्भागवत में देवी उत्पत्ति के सम्बन्ध में एक विशेष घटना का उल्लेख मिलता है -

श्रीमद्भागवत में कृष्ण के जन्म की कथा तो सभी साधक भली भांति जानते हैं कि किस प्रकार देवकी के गर्भ से भगवान श्रीकृष्ण का जन्म हुआ और ठीक उसी समय वृदावन में यशोदा और नंद के घर कन्या का जन्म हुआ। श्रीकृष्ण की लीला से कारागार के द्वार खुल गये और श्रीवस्तुदेव कृष्ण को लेकर नंद के यहां पहुंचे और वहां से नंद पुत्री को लेकर पुनः मथुरा में कारागार में पहुंचे। जब प्रातः कंस को मालूम हुआ कि देवकी के गर्भ से पुत्र नहीं, पुत्री हुई है तो उसे बड़ा आश्चर्य हुआ, क्योंकि नारद ऋषि ने कहा था कि देवकी के गर्भ से आठवीं संतान पुत्र होगा और वही तुम्हारा संहार करेगा, लेकिन कंस ने सोचा कि शंका को क्यों रखा जाए, अतः उसने उस कन्या को ही मार डालने का निश्चय किया, जैसे ही उसने उस कन्या को पकड़ा और पत्थर पर मारने के लिये फेंका उसी समय वह कन्या हाथ से छिटक कर आकाश मार्ग को चली गई। वह कन्या कोई साधारण कन्या नहीं थी, शक्तिरूपा योगमाया थी। योगमाया ने आकाशवाणी करते हुए कंस को कहा कि तुम्हारा वध तो निश्चित है और तुम्हें मारने वाला इस संसार में उत्पन्न हो गया है।

इसके आगे की कथा तो सभी जानते हैं। वास्तव में भगवान श्रीकृष्ण ने शक्ति के रूप में योगमाया को रूप आदान प्रदान करने को कहा क्योंकि वे संसार को शक्ति से परिचित कराना चाहते थे और उस समय के युग में शक्तिपूजा को लोग भूल गये थे। राक्षसीय प्रवृत्तियां अधिक हावी होने लगी थीं। ऐसे समय में शक्ति को प्रकट करना आवश्यक था। इस योगमाया

शक्ति को भगवान् श्रीकृष्ण ने वरदान दिया कि - है शक्ति! आपने इस जगत में जो महान् कार्य किया है उसके फलस्वरूप आपकी पूजा संसार में हर समय होगी और पर्वतों के राजा विंध्याचल पर आप लक्ष्मी शक्ति रूप में विराजमान होंगी और आपके साथ ही, गुह्यकाली तथा अष्टभुजा सरस्वती विराजमान होंगी। आपका आसन पर्वत पर उस स्थान पर होगा जहां विराजकर आप गंगा को निरन्तर देख सकेंगी तथा काशी में स्थित विश्वनाथ आपके सम्मुख सदैव रहेंगे।

विंध्यवासिनी मंदिर

विंध्यवासिनी मंदिर का पूरा समूह पर्वत पर स्थित है और इसके स्वरूप की ओर ध्यान दिया जाये तो यह स्वरूप श्रीयंत्र के रूप में है उसी रूप में द्वार बने हुए है, उसी रूप में श्रीयंत्र में जहां मध्य रूप में जहां बिन्दु स्वरूप शक्ति स्थित है, उसी स्थान पर विंध्यवासिनी शक्तिपीठ है।

मैंने अपने जीवन में कई प्राचीन मंदिरों की यात्रा की है, लेकिन विंध्यवासिनी मंदिर क्षेत्र में प्रवेश करते ही रोम-रोम में चेतना जाग्रत हो जाती है। ऐसा लगता है कि शक्ति अपने साकार रूप में विराजमान है। कुछ वर्षों पहले तक बलि प्रथा विद्यमान थी लेकिन अब इस प्रथा को बन्द कर दिया है। आज भी यह मान्यता है कि नव-विवाहित विवाह के पश्चात् आशीर्वाद प्राप्त करने जाते हैं तो उन्हें अक्षुण्ण सौभाग्य प्राप्त होता है।

एक ही देवी जिसके तीनों रूप साक्षात् हों जो क्रिया, ज्ञान और इच्छा रूप में साधक का कल्याण कर सकती हैं, वह देवी विंध्यवासिनी है।

आज के इस कलियुग में जीना कोई आसान बात नहीं होती, हर व्यक्ति एक-दूसरे पर हावी होने की कोशिश करता है, और अपने को शक्तिमान घोषित करने का प्रयास करता रहता है। आये दिन की परेशानियां, आपदाएं, जो गृहस्थ जीवन से सम्बन्धित होती हैं, प्रत्येक मनुष्य को झेलनी पड़ती हैं, और ऐसे में उसे आवश्यकता पड़ती है एक ऐसी शक्ति की जिससे वह अपने जीवन को भली-भांति विभिन्न विपदाओं और बाधाओं से सुरक्षित रख सके, किन्तु मां के आशीर्वाद से बढ़कर उसके लिए कोई शक्ति नहीं होती, और एक मां ही हर पल हर क्षण अपने पुत्र की देखभाल कर सकती है, उसकी सुरक्षागमीनी हो सकती है, इसलिए उसे अपने इस भौतिक जीवन का ध्येय होता है।



जीवन को सुरक्षित एवं श्रेष्ठ बनाने के लिए 'मां' की अर्थात् उस 'देवी शक्ति' की पूजा-आराधना करनी ही चाहिए।

अपने भौतिक जीवन को श्रेष्ठता पूर्ण बनाने के साथ-साथ उसे अपने आध्यात्मिक जीवन को भी श्रेष्ठ बनाना चाहिए, क्योंकि मात्र भौतिक जीवन में पूर्णता प्राप्त करना ही सब कुछ नहीं होता, एक मनुष्य के लिए उसका श्रेष्ठ जीवन तो गृहस्थ के उत्तरि पथ पर बढ़ते हुए आध्यात्मिक स्तर की ऊँचाई को प्राप्त कर लेना और उस ब्रह्म में लीन हो जाना है, जिसका वह अंश है।

गृहस्थ जीवन को पूर्णता के साथ जीते हुए अध्यात्म की ओर बढ़ना तो तलवार की धार पर चलने के समान ही होता है, जिस पर चलकर पैर लहूलुहान हो जाते हैं, किन्तु विंध्यवासिनी, जो कि अपने दिव्य स्वरूप से सुशोभित पूर्ण शक्तिमान स्वरूप है, साधक या व्यक्ति को उस पथ की ओर गतिशील होने के लिए ऐसा वृहद् अस्त्र प्रदान करती है, जिससे वह जीवन की सर्वोच्चता को (जहां पहुंचना मानव-प्राप्त कर लेता है) प्राप्त कर लेता है।

‘विंध्यवासिनी’ अत्यन्त गोपनीय साधनाओं में से एक है, से मुक्ति पा लेता है।

यह अपने-आप में इतनी पूर्ण है, कि महाविद्याओं की साधना से साधक को जो शक्ति प्राप्त होती है, वैसी ही शक्ति इस साधना को सिद्ध करके प्राप्त की जा सकती है।

विश्वामित्र ने अपने प्रसिद्ध ग्रंथ ‘विश्वामित्र संहिता’ में बताया है कि ‘विंध्यवासिनी जीवन की श्रेष्ठ साधनाओं में से एक है।’

‘त्रिजटा अघोरी’ के शब्दों में, ‘यह सिद्धाश्रम से सीधा सम्बन्ध स्थापित करने की सर्वश्रेष्ठ साधना है।’

आद्यशंकराचार्य जैसे योगी और गोरखनाथ आदि उच्चकोटि के साधकों ने इस साधना को गोपनीय एवं अद्वितीय बताया है, और इस साधना को सम्पन्न कर विशेष प्रकार की शक्ति को प्राप्त किया है।

‘विंध्यवासिनी’ मां दुर्गा का ही रक्षा स्वरूप है, जो अपने साधक की हर क्षण रक्षा करती है, उसको जीवन की विभिन्न उलझनों से, परेशानियों से मुक्ति दिलाती है, और यदि साधक इस सिद्धि को प्राप्त कर ले तो उस पर किसी प्रकार की बाधा का प्रकोप-प्रभाव नहीं पड़ सकता, यहां तक कि कोई तांत्रिक ‘कृत्यावार’ (जो एक प्रकार का तीव्र तांत्रिक प्रयोग होता है, जिसका वार कभी खाली नहीं जाता, उस वार को निष्फल करना कोई आसान बात नहीं होता वह तांत्रिक वार भी इस साधना से निष्फल हो जाता है।)

यह एक तांत्रोक्त साधना है, और प्रत्येक तांत्रिक उसकी महत्ता अवश्य ही समझता होगा, क्योंकि यह तंत्र का बेजोड़ एवं अचूक सफलतादायक तीव्र प्रयोग है, जिसे सम्पन्न करने पर वह साधक, जिसने इस विद्या को सिद्ध कर लिया हो, विशिष्ट शक्तिशाली बन जाता है, क्योंकि ‘विंध्यवासिनी यंत्र’ के द्वारा पूजन सम्पन्न करने पर, उस साधक को एक विशेष प्रकार की तेजस्विता, ऊर्जा-शक्ति प्राप्त होने लगती है, जो एक कवच की भाँति ही उसके चारों ओर रक्षक के रूप में हर क्षण कार्य करती रहती है।

विंध्यवासिनी तीव्र से तीव्र प्रहारों को भी निष्फल करने की अचूक साधना है, जो बड़े-बड़े ऋषियों-मुनियों के लिए भी दुर्लभ है, इस विद्या को सिद्ध कर लेने के बाद, अन्य साधनाओं में स्वयं ही शीघ्र सफलता मिलने लग जाती है। व्यक्ति या साधक इस विद्या में सिद्धहस्त हो जाने से अपनी सभी मनेच्छाओं को मन ही मन स्मरण कर के, विंध्यवासिनी देवी का ध्यान कर लेने मात्र से ही पूर्ण कर लेता है, इस प्रकार वह

शत्रु बाधा, राज्य बाधा, व्यापार बाधा आदि विभिन्न आपदाओं

यह साधना सूर्य सिद्धान्त की आधारभूत साधना है, इससे सूर्य की किरणों द्वारा पदार्थ परिवर्तन किया स्वतः ही सिद्ध हो जाती है, इसके द्वारा साधक अपनी इच्छानुसार आयु प्राप्त कर सकता है, और सबसे महत्वपूर्ण बात तो यह है, कि इसके द्वारा सिद्धाश्रम में भी प्रवेश पाया जा सकता है।

साधना विधान

सामग्री : विंध्यवासिनी यंत्र, विजय माला, चार लघु नारियल।

29 मई 2009 को अरण्य घट्ठी एवं विंध्यवासिनी सिद्धि दिवस है। साधक इस दिन साधना को प्रारम्भ कर सकते हैं। इसके अतिरिक्त किसी शुक्ल पक्ष की घट्ठी अथवा शुक्रवार को यह साधना प्रारम्भ की जा सकती है।

साधना वाले दिन साधक प्रातः स्नान कर लाल धोती पहन कर गुरु चादर ओढ़ लें तथा लाल आसन पर दक्षिण दिशा की ओर मुंह करके बैठ जाएं, अपने सामने लकड़ी की चौकी पर लाल वस्त्र बिछायें तथा तांबे की प्लेट में कुंकुम से ‘कर्ली’ मंत्र लिखें, ‘विंध्यवासिनी यंत्र’ को दूसरे पात्र में स्नान करवाकर, तांबे के प्लेट में लिखें ‘कर्ली’ मंत्र के ऊपर स्थापित करें। ‘लघु नारियलों’ को यंत्र की चारों दिशाओं में धर्म, अर्थ, काम और मोक्ष के प्राप्ति स्वरूप स्थापित कर दें।

इसके पश्चात् यंत्र व नारियलों पर कुंकुम से तिलक करें तथा अक्षत, पुष्प एवं धूप व दीप से पूजन कर ‘विजय माला’ से निम्न मंत्र का 11 माला जप करें -

मंत्र

॥ उँ ह्रीं कर्ली विंध्यवासिन्यै फट् ॥

जप समाप्ति के पश्चात् सारी सामग्री माला सहित एक लाल कपड़े में बांध कर किसी नदी या तालाब में विसर्जित कर दें। साधना प्रारम्भ करने से पूर्व गुरु पूजन एवं गुरु मंत्र अवश्य ही जप लेना चाहिए और इसकी समाप्ति के पश्चात् गुरु आरती अवश्य करें।

यह एक दिन की साधना है, साधना के समय में साधक को कई प्रकार के अनुभव होंगे, इससे विचलित होने व घबराने की आवश्यकता नहीं है। प्रत्येक साधक को इसे अपने उपरोक्त दोषों तथा निश्चित मनोकामना सिद्धि हेतु अवश्य ही सम्पन्न करना चाहिए, क्योंकि यह साधना समस्त रोग शोक से हमारी रक्षा करती है।

साधना सामग्री - 410/-

‘इच्छा विहीनः पशुः’ जिस मनुष्य की कोई इच्छा न हो, आकांक्षा न हो उसका जीवन पशुतुल्य ही है। जीवन का सौभाग्य तो तब है, जब व्यक्ति इच्छा करे और वह पूरी हो जाए। आपा-धारी के इस युग में, मनुष्य की इच्छाएं तो बढ़ गई हैं, परन्तु प्रयास के बाद भी जब वह इन इच्छाओं को साकार नहीं कर पाता है, तब उसका निराश हताश हो जाना स्वाभाविक है।

आपकी अनेक आकांक्षाओं व समस्याओं को देखते हुए पत्रिका कार्यालय द्वारा समय-समय पर विशिष्ट प्रभावकारी दिव्य ऊर्जा से पूरित सामग्री उपलब्ध कराई गई है -

हिरण्यगर्भ गुटिका - भगवान् सूर्य के तेजस्वी मंत्रों से चैतन्य इस गुटिका को धारण करने से आपमें वही तेजस्विता, प्रखरता आ जाएगी जो भगवान् कृष्ण के पुत्र साम्ब ने सूर्य साधना से प्राप्त की थी।

क्रीं चक्र - शक्ति तत्व को प्राप्त कर लेने के लिए यह चक्र अद्वितीय है, जिसको धारण करने के पश्चात् जीवन की सभी विसंगतियां समाप्त होने लगती हैं।

कामदेव चंत्र - जिसे प्राप्त कर आपका व्यक्तित्व आकर्षक व सम्मोहक हो जाएगा, कि आप स्वयं भी आश्चर्यचित रह जाएंगे।

सर्वकार्य सिद्धि गुटिका - जिसके प्रभाव से आपके वांछित कार्य सम्पन्न होने लगते हैं तथा मार्ग में आ रही बाधाएं समाप्त हो जाती हैं।

बगलामुखी गुटिका - जिसके प्रभाव से शत्रु पक्ष निर्स्तेज हो जाता है, और जीवन पर यदि कोई संकट आ गया हो, तो वह टल जाता है।

जीवन का सर्वश्रेष्ठदान - ‘ज्ञानदान’

ज्ञान दान को जीवन का सर्वश्रेष्ठ दान बताया गया है। 20 पूर्व प्रकाशित पत्रिकाएं प्राप्त कर मंदिरों में, अस्पतालों में, समारोहों में, मंगल कार्यों में, अपने मित्रों को, धार्मिक परिवारों को दान कर सकते हैं और इस प्रकार उनके जीवन को भी इस श्रेष्ठ ज्ञान के प्रकाश से आलोकित कर सकते हैं, जो अभी तक इससे वंचित हैं। इस क्रिया के माध्यम से अनेक मनुष्यों को साधनात्मक ज्ञान की शीतलता प्राप्त होगी और उनका जीवन एक श्रेष्ठ पथ पर अग्रसर हो सकेगा।

क्या करें आप?

आप केवल एक पत्र (संलग्न पोस्टकार्ड क्रमांक 3) भेज दें, कि “मैं यह अद्वितीय उपहार प्राप्त करना चाहता हूं एवं 20 पूर्व प्रकाशित पत्रिकाएं मंगाना चाहता हूं। आप निःशुल्क मंत्र सिद्ध प्राण प्रतिष्ठित ‘हिरण्यगर्भ गुटिका, क्रीं चक्र, कामदेव यंत्र, सर्वकाय सिद्धि गुटिका एवं बगलामुखी गुटिका’ 492/- (20 पूर्व प्रकाशित पत्रिकाओं का शुल्क 402/- + डाक व्यय 90/-) को वी. पी. पी. से भिजवा दें, वी. पी. पी. आने पर मैं पोस्टमैन को धन राशि देकर छुड़ा लूंगा। वी. पी. पी. छूटने के बाद मुझे 20 पत्रिकाएं रजिस्टर्ड डाक द्वारा भेज दें”, आपका पत्र आने पर हम 402/- + डाक व्यय 90/- = 492/- की वी. पी. पी. से मंत्र सिद्ध प्राण प्रतिष्ठित ‘हिरण्यगर्भ गुटिका, क्रीं चक्र, कामदेव यंत्र, सर्वकाय सिद्धि गुटिका एवं बगलामुखी गुटिका’ भिजवा देंगे, जिससे कि आपको यह दुर्लभ उपहार सुरक्षित रूप से प्राप्त हो सके।

सम्पर्क :- अपना पत्र जोधपुर के पते पर भेजें।

मंत्र-तंत्र-यंत्र विज्ञान, डॉ. श्रीमाली मार्ग, हाईकोर्ट कॉलोनी, जोधपुर - 342031, (राजस्थान)

फोन - 0291 - 2432209, 2433623 टेलीफैक्स - 0291 - 2432010

गुरुद्धाम जोधपुर

जिस भूमि पर सैकड़ों प्रयोग और असंख्य दीक्षाएं
सम्पन्न हो चुकी हैं, उस सिद्धि चैतन्य दिव्य भूमि

पर ये दिव्य साधनात्मक प्रयोग

समस्त साधकों एवं शिष्यों के
लिए यह योजना प्रारंभ हुई है।
इसके अन्तर्गत विशेष दिवसों
पर जोधपुर 'सिद्धाश्रम' में पूज्य
गुरुदेव के निर्देशन में ये
साधनाएं पूर्ण विधि-विधान के
साथ सम्पन्न कराई जाती हैं, जो
कि उस दिन शाम 6 से 8 बजे
के बीच सम्पन्न होती हैं। यदि
श्रद्धा व विश्वास हो, तो उसी
दिन से साधनाओं में सिद्धि का
अनुभव भी होने लगता है।

शुक्रवार, 01-05-09

इतने प्रयासों के बाद भी आज तंत्र के नाम से लोग भय खाते हैं, तो उसके पीछे कारण यही है कि लोगों ने इसका उपयोग हित की बजाय निजी स्वार्थ और लालच के लिए अधिक किया है। आज कल गांवों और शहरों में ऐसे अनेक दुष्ट एवं स्वार्थी तांत्रिक अपने ग्राहकों से कुछ रुपये लेकर किसी के ऊपर घटिया स्तर के टोने टोटके कर देते हैं, जिससे एक सीधे सावे व्यक्ति का हंसता-खेलता जीवन विनाश के कगार पर आ जाता है। व्यक्ति समझ नहीं पाता, कि क्यों अचानक उसके परिवार में लोग बीमार पड़ रहे हैं, क्यों उसके बच्चे कक्षा में पिछड़ रहे हैं, क्यों हर जगह असफलता ही मिल रही है? इन सबके पीछे प्रायः उससे ईर्ष्या करने वाले किसी शत्रु द्वारा कराये गये तंत्र प्रयोग होते हैं। ज्वालामालिनी प्रयोग ऐसे सभी प्रयोगों को समाप्त कर साधक के जीवन में आ रही सभी बाधाओं का नाश कर सौभाग्य पथ खोल देता है।

शनिवार, 02-05-09 तीव्र लक्ष्मी वशीकरण प्रयोग

लक्ष्मी को उसकी पूजा या आराधना कर, प्राप्त नहीं
किया जा सकता, लक्ष्मी तो पुरुषार्थ के द्वारा ही साधक
के पास आ सकती है। यदि लक्ष्मी का वशीकरण कर
लिया जाए तो वह साधक को सिद्धि होकर उसके भौतिक
जीवन को संवारने को बाध्य हो जाती है। यह ऐसा ही
सफल प्रयोग है जिसके द्वारा लक्ष्मी को पूर्ण आबद्ध
कर घर में स्थायित्व दिया जा सकता है। इस अद्भुत
प्रयोग को संपन्न कर जीवन में धन, यश, सम्मान प्राप्त
किया जा सकता है। यह एक अचूक प्रयोग है, जिसके
द्वारा शीघ्र-अतिशीघ्र धन प्राप्त कर, सम्पन्न हुआ जा
सकता है। जिस किसी भी साधक ने इस प्रयोग को
सम्पन्न किया, उसे सफलता अवश्य प्राप्त हुई। विश्वामित्र
प्रणीत यह साधना लक्ष्मी सिद्धि की श्रेष्ठतम साधना है।

रविवार, 03-05-09

कामारुद्या तंत्र प्रयोग
कामारुद्या तंत्र तो जीवन को पूर्णता देने का तंत्र है। जिस
प्रकार कामारुद्या देवी ही जीवन का सृजन करने वाली है और
जीवन की प्रत्येक स्थिति में उनका ही वर्चस्व है, उसी प्रकार
कामारुद्या तंत्र भी जीवन की प्रत्येक स्थिति से सम्बन्ध रखता
है। यह साधना वास्तव में तंत्र की एक सशक्त और प्रभावशाली
साधना है जिसके द्वारा साधक को एक के बाद एक धन के
स्रोत मिलने आरम्भ हो जाते हैं। यदि वह नौकरीपेशा है, तो
कोई सहयोगी मार्ग प्रकट हो जाता है या पैतृक धन आदि के
द्वारा धन प्राप्ति का नया मार्ग खुलता है। व्यापारी हैं, तो
व्यापार में लाभ की स्थिति या नये व्यापार में लाभ की स्थिति
बनती है या शेयर मार्केट में एकदम से लाभ मिल जाता है। कहने
का तात्पर्य है कि धन प्राप्ति के एकदम इतने अधिक मार्ग या तो खुल जाते
हैं या सूझने लगते हैं ... कि साधक आश्चर्य चकित हो जाता है।

इन तीनों दिवसों पर साधना में भाग लेने वाले साधकों के लिए निम्न नियम मान्य होंगे

1. आप अपने किन्हीं दो मित्रों अथवा स्वजनों को (जो पत्रिका के सदस्य नहीं हैं) मंत्र-तंत्र-यंत्र विज्ञान पत्रिका का वार्षिक सदस्य बनाकर जोधपुर, गुरुधाम में सम्पन्न होने वाले किसी एक प्रयोग में भाग ले सकते हैं। पत्रिका की एक सदस्यता का वार्षिक शुल्क रुपये 303/- है, जबकि आपको दो सदस्यों का शुल्क मात्र रुपये 570/- ही जमा करवाना है। प्रयोग से सम्बन्धित विशेष मंत्रसिद्ध, प्राण-प्रतिष्ठित सामग्री (यंत्र गुटिका, आदि) आपको निःशुल्क प्रदान की जाएगी।

2. यदि आप पत्रिका-सदस्य नहीं हैं, तो आप स्वयं तथा अपने किसी एक मित्र के लिए पत्रिका की वार्षिक सदस्यता प्राप्त कर उपरोक्त किसी साधना में भाग ले सकते हैं।

3. पत्रिका-सदस्य बनाकर आप किसी एक परिवार को क्रषि-परम्परा की इस पावन साधनात्मक ज्ञान-धारा से जोड़कर एक पुनीत एवं पुण्यदायी कार्य करते हैं। यदि आपके प्रयास से एक परिवार में अथवा कुछ प्राणियों में ईश्वरीय चिन्तन, साधनात्मक चिंतन आ पाता है तो यह आपके जीवन की सफलता का ही प्रतीक है। उपरोक्त प्रयोग तो निःशुल्क हैं और गुरु-कृपा द्वारा ही वरदान स्वरूप साधक को प्राप्त होते हैं। प्रयोगों की न्यौछावर-राशि को अर्थ के तराजू में नहीं तोल सकते।

गुरुधाम में दीक्षा व साधना का महत्व

शास्त्रों में वर्णन आता है कि मंदिर में मंत्र-जप किया जाए तो अति उनम होता है, उससे भी अधिक पुण्यदायी होता है; यदि नदी के किनारे करें, उससे भी अधिक समुद्र तट, और उससे भी अधिक पर्वत में करें तो, और पर्वत में भी यदि हिमालय में किया जाए तो और भी कई गुना श्रेष्ठ होता है। इन सबसे भी श्रेष्ठ होता है, यदि साधक गुरु चरणों में बैठकर साधना सम्पन्न करें; और यदि गुरुदेव अपने आश्रम; अर्थात् गुरुधाम में ही यह साधना प्रदान करें तो इससे बड़ा सौभाग्य तो और कुछ होता ही नहीं।

कुछ ऐसे स्थान होते हैं, जहां दिव्य शक्तियों का वास सदैव रहता ही है। जो सदगुरु होते हैं, वे सूक्ष्म रूप से अथवा सशरीर, प्रतिपल अपने धाम में अवस्थित रहते हुए प्रत्येक गतिविधि का सूक्ष्म रूप से संचालन करते ही रहते हैं। इसलिए यदि शिष्य गुरुधाम में पहुंच कर गुरु से साधना, मंत्र एवं दीक्षा प्राप्त करना है और गुरु-चरणों का स्पर्श कर उनकी आज्ञा ये साधना प्राप्तम् करता है तो उसके साथ भौभाग्य से देवगण भी ईर्ष्या करते हैं।

तीर्थ-स्थल पुण्यप्रद हैं, पर शिष्य अथवा साधक के लिए सभी तीर्थों से भी पावन तीर्थ गुरुधाम होता है। जिस धाम में सदगुरुदेव का निवास स्थान रहा हो, ऐसे दिव्य स्थान पर गुरु-चरणों में उपस्थित होकर गुरु-मुख से मंत्र प्राप्त करने की इच्छा ही साधक में तब उत्पन्न होती है, जब उसके सत्कर्म जाग्रत होते हैं। इर्षा तथ्य को ध्यान में रखने हुए साधकों के लाभार्थी गुरुदेव की व्यस्तता के बावजूद भी जोधपुर गुरुधाम में तीन दिवसों में तीन साधनात्मक प्रयोगों की श्रृंखला निर्धारित की गई है।

योजना के बारे में इन 3 दिनों के लिये 01-02-03 मई 2009

किन्हीं पांच व्यक्तियों को वार्षिक सदस्य बनाकर उनका सदस्यता शुल्क $300 \times 5 = \text{Rs. } 1500/-$ जमा करा के या उपरोक्त राशि का बैंक डाफ्ट मंत्र-तंत्र-यंत्र विज्ञान के नाम से बनाकर सदस्यों के डाक पते लिखवाकर उपराहर स्वरूप ये दीक्षा आप निःशुल्क प्राप्त कर सकते हैं।

यदि दीक्षा फोटो द्वारा प्राप्त करना चाहें तो निर्धारित तिथियों के पूर्व ही अपना फोटो एवं पांच सदस्यों की सदस्यता शुल्क की राशि का ड्राफ्ट मंत्र-तंत्र-यंत्र विज्ञान के नाम से बनाकर जोधपुर कार्यालय के पते पर भेजें। आपका फोटो, पांच सदस्यों के नाम, पते एवं ड्राफ्ट हमें उपरोक्त तिथि से पूर्व ही प्राप्त हो जाने चाहिए। एवं विलम्ब से मिलने पर दीक्षा संभव न हो मकेगी। यदि राशि मनीऑर्डर से भेजना चाहें तो फोटो एवं मनीऑर्डर जोधपुर कार्यालय भेजें।

* दीक्षा आज के युग में एक प्रामाणिक उपाय है सफलता की ऊँचाईयों को प्राप्त कर लेने का, जीवन के अभाव को, अधूरेपन को दूर कर देने का, जीवन में अतुलनीय बल, साहस, पौरुष एवं शौर्य प्राप्त कर लेने का, साधना में सिद्धि प्राप्त कर लेने का...।

* गुरु-प्रदत्त शक्तिपात्र द्वारा शिष्य जिस कार्य द्वेषु जो दीक्षा प्राप्त करता है, उसमें निषुणता प्राप्त कर लेता है, क्योंकि वह सफलता और श्रेष्ठता प्राप्त करने का एक लघु उपाय है...

* दीक्षा में भाग लेने वाले साधकों को जल से अमृत-अभिषेक करने के उपरान्त विशेष शक्तिपात्र प्रदान किया जाएगा। यह दीक्षा द्वान तीनों दिवसों में संयं ५ बजे प्रदान की जाएगी।

शक्तिपात्र युक्त दीक्षा

त्रिपुर सुन्दरी दीक्षा

त्रिपुर सुन्दरी दीक्षा प्राप्त होने के आद्याशक्ति त्रिपुरा शक्ति शक्तीक एकी तीन प्रमुख नाड़ियों - इडा, सुषुम्ना

और पिंगला जो मन छुड़ि और वित छो नियंत्रित अकरती हैं, वह शक्ति जाग्रत होती है। श्रू श्रुष्टि क्षयः ये तीनों इक्षी महाशक्ति के उक्तभूत हुए हैं, इक्षलिए इक्षे त्रिपुर सुन्दरी छहा जाता है। इक्ष दीक्षा छो माध्यम के जीवन में चाकों पुक्षबार्थों एकी प्राप्ति तो होती ही है, क्षाथ ही क्षाथ आद्यात्मिक जीवन में भी क्षम्पूर्णता प्राप्त होती है, ओर्ड भी क्षाथना हो, चाहे आप्केका क्षाथना हो, ढेवी क्षाथना हो, शैव क्षाथना हो, वैष्णव क्षाथना हो, यदि उक्तमें सफलता नहीं मिल कही हो, तो उक्तको पूर्णता के क्षाथ क्षिद्ध अकाने में यह महाविद्या क्षमर्थ है। यदि इक्ष दीक्षा छो पहले प्राप्त अक लिया जाये तो क्षाथना में श्रीघ्र क्षफलता मिलती है।

Sadhana of Parad Ganpati

Mercury is a divine metal and according to the ancient text Ras Ratna Samuchchaya if mercury is Samskarised (Sanctified) through it any wish can be fulfilled. Samskarised mercury or Parad is called elixir and nectar of life and through it even the impossible can be achieved.

If with this Samskarised mercury one prepares and idol of Lord Ganpati then through its worship a Sadhak can gain intelligence, divine powers, wealth, health and fulfillment of all desires and wishes.

In the Indian system of Sadhanas no ritual is complete without the worship of Lord Ganpati. Before the worship of every God and Goddess, Lord Ganpati is offered prayers because with His blessings no obstacle can come in one's way.

A Sadhana of Lord Ganpati is like the divine boon tree- Kalpvirksha which can fulfil any wish on being asked. Lord Ganpati is also a very kind deity who bestows comforts, wealth and favours on his devotees.

Just remembering the Lord removes obstacles and problems from one's life and enables one to make quick progress in one's field of work.

If then one uses a Parad idol of the Lord for the Sadhana the effect becomes hundred fold and success is quicker and more certain.

If you feel there are lots of tensions and problems in your life. If your business is not going well. If you are facing problems in stud-

ies. In fact if you are worried about anything just try this wonderful ritual and witness its amazing power for yourself.

This Sadhana should be tried on a **Wednesday** or a **Ganesh Chaturthi** early in the morning. Have a bath and wear fresh yellow clothes. Cover a wooden seat with yellow cloth.

Then sit on a yellow mat facing North. In a copper plate draw a Swastik with turmeric. On it place a **Parad Ganpati**. Offer vermillion, rice grains and yellow flowers.

Then take water in the right palm and speak out your wish. Let the water flow to the ground. Then join both palms and chant the following prayer meditating on the divine form of the Lord.

**Veenaam Kalp-lataam cha Paasham
Varadam Vidhatte Kare, Vaame Taamrasam
Cha Ratna-Kalasham Sanmanjareem
Chaabhayam. Shundaadand-
lasanmrigendra-vradah Shankhendu-
gourah Shubhoh, Deevyadratna-
nibhaanshuko Ganpatih Paayaad-paayaat Sa
Nah.**

Next smear a **Shree Phal** with vermillion and offer it to the Lord. Then with a **coral rosary** chant three round of the following Mantra.

OM GAM GANNPATAYE GAM NAMAH

Do this for three consecutive Wednesdays. After Sadhana place Parad Ganpati in your place of worship. Drop the shree Phal and rosary in a river or pond.

Sadhana Articles - 390/-

Be rich and debt free

Any Wednesday

AMAZING KAMALA YANTRA!

Goddess Kamala is another form of Lakshmi, the kind Goddess of wealth and prosperity. For the householders there is no better Sadhana than of Kamala for riddance from debts and poverty and gain of wealth and money.

A Sadhak who regularly worships Goddess Kamala makes quick and sure progress in life and new doors to success automatically open for him. What more the Sadhak not just gains wealth, riches, fame, prosperity rather he also advances in the spiritual spheres.

The world of Tantra is full of many rituals of Goddess Kamala. But the basis of all these is the Kamala Yantra prepared according to Tantra specifications. Kamala Yantra is in fact an amazing and very powerful instrument that draws wealth like a magnet pulls iron pieces.

The scriptures state that the Yantra must contain a hexagon with a lotus of eight petals inscribed in it. It must be made on copper and till it has been consecrated and energized by Tantric Mantras it cannot produce the desired results. It is very difficult to prepare such a Yantra as it involves a long procedure and intricate Mantras. But if one gets one already prepared from a Siddh Guru then there is nothing like it. To place a Siddh Kamala Yantra at home is the greatest fortune of one's life as well as for one's future generations. Having the Yantra and worshipping it briefly daily leads to mental peace, wealth and sudden unexpected monetary gains. For this one just need to chant the following twelve names of the Goddess daily-

**MAHAALAKSHMI, RINN-MUKTAA,
HIRANYAMAYEE, RAAJ-TANAYAA,
DAARIDRYA-HARINNI, KAANCHANAA,
PADAMAASANAA, RAAJ-RAAJESHWARI,
KANAKVARNAA, VARADAA, JAYAA AND
SARVA MAANGALYA YUKTAA.**

In the night of any **Wednesday** this Yantra can be placed at home. First bathe the **Kamala Yantra** with water and then with milk, ghee, sugar, curd and honey. Then again wash with water. Wipe the Yantra dry. On a wooden seat spread a yellow cloth. On a mound of rice grains place the Yantra. On the right side of the Yantra place the picture of revered Sadgurudev and on the left side make another mound of rice grain and on it place a betel-nut representing the nine astrological planets. Pray to the planets for financial stability in your life. Light ghee lamp.

Then make sixteen marks with vermillion on the Yantra representing the sixteen forms of Goddess Lakshmi. Then join your palms and chant thus.

**UDYANMAARTAND KAANTI VIGALIT
KAVAREEM KRISHNA VASTRAA-
VRITAANGEEM. DANDAM LINGAM
KARABJEIR-VARMATH BHUVANAM
SAND-DHATIM TRINETRAAM. NAANAA
RATNEIR-VIBHAANTIM SMIT MUKH
KAMALAAM SEVITAAM DEV DEV
SARVEIR BHAARYAA RAAGYIM NAMO
BHOOT SA RAVI KUL TANUMAASHRAYE
EESHWAREEM TVAAM.**

Then offer flowers and rice grains to the Goddess and pray to her to manifest and bless you. Chant one round of Guru Mantra and then with **Kamala Mahavidya rosary** chant sixteen rounds of the following Mantra.

**OM AYEIM EEM HREEM SHREEM
KLEEM HASOUH JAGATPRASOOTYEI
NAMAH.**

After this sing Aarti of Goddess Lakshmi. Let the rosary and Yantra remain in worship place. Whenever in the future you face financial problem chant one round of the Mantra.

Sadhana Articles - 330/-

12 अप्रैल 2009

नवग्रह शांति साधना शिविर, सूरत

शिविर स्थल: लेझआ पाटीदार पंच की वाडी, रामपुरा
पुलिस लाईन के पीछे, अशक्ताश्रम हॉस्पिटल के
सामने, सूरत (गुजरात)

आयोजक: शैलेष पटेल - 099256-60784 ○ नेहा पटेल - 099749-
17224 ○ राजूभाई श्रीवास्तव - 099798-80150 ○ पी.बी.शंकर -
098257-55806 ○ अल्पेश देसाई - 094268-75498 ○ रितेश पटेल
- 099254-79521 ○ शिल्पाबेन चौधरी - 098792-93448 ○ कल्पेश
पटेल - 099130-22868 ○ शशीकांत भाई - 093273-58472 ○ भरत
परमार - 098985-89554 ○ बकुल भाई - 098799-20432 ○ प्रभाबेन
- 092283-18183 ○ धीरुभाई - 099788-03194 ○ ताराबेन - 096011-
96113 ○ हार्दिक व्यास - 098256-58143 ○ देवेन्द्र पंचाल - 099988-
74612 ○ निरंजन पंचाल - 099792-79563 ○ हरेश जोशी - 098255-
23924 ○ अनुलभाई जानी - 098791-90523 ○

◆◆ ◆◆ ◆ ◆◆ ◆◆ ◆ ◆◆ ◆◆◆

20-21 अप्रैल 2009

निखिल जयंती महोत्सव

एवं साधना शिविर, लखनऊ

शिविर स्थल: कुड़ियाघाट (प्राचीन कौण्डिल्य ऋषि
आश्रम), बड़ा झामामबाड़ा के पास, चौक, लखनऊ (उ.प्र.)
आयोजक: अजय कुमार सिंह - 094159-35788 ○ राजवीर सिंह
- 098380-87024 ○ श्रीमती शांति देवी - 094150-07653 ○ अतुल
दीक्षित - 094150-23936 ○ हरिशचन्द्र पाण्डेय - 094154-71472
○ बी.पी. साहू - 094504-58633 ○ वरुणेन्द्र कुमार श्रीवास्तव -
099005-805462 ○ राजीव कुमार सिन्हा - 094155-16772 ○ प्रदीप
शुक्ला - 094152-66543 ○ एस.के. सिन्हा - 094157-66787
○ सतीश टण्डन - 093361-50802 ○ डी.के. सिंह - 094500-19934
○ उदय सिंह - 092351-71779 ○ जगदीश पाण्डेय - 093695-
20921 ○ संतोष नायक - 094503-62378 ○ ए.के. सिंह - 094150-
666250 ○ अवध श्रीवास्तव - 099194-89842 ○ गुलाब बाई -
093369-48999 ○ अनूप शुक्ला - 094154-64193 ○ समरजीत सिंह
- 094154-08469 ○ डॉ. दिलीप श्रीवास्तव 'निखिल' - 094503-
62470 ○ राकेश पाल - 092361-97526 ○ रामकुमार सोनी -
094506-46879 ○ राजेश वर्मा - 093357-16406 ○ अनिल कुमार
निगम - 099352-66984 ○ आशीष सिंह राठौर - 094151-03159
○ एस.के.वार्ष्णेय - 0522-6522386 ○ सिद्धनाथ महरोत्ता - 098891-
55241 ○ डॉ. आर.के. कपूर - 0522-2311492 ○ श्रीमती ऊषा
सिंह - 093355-30134 ○ श्रीमती नीतम सिंह - 094151-97318

○ श्रीमती सुलेखा सिंह - 099565-10987 ○ श्रीमती बुद्धवती
सिंह - 094157-92120 ○ श्रीमती लक्ष्मी श्रीवास्तव - 099005-
805576 ○ कु. निशा सिंह - 094507-78569 ○ डी.एल. टण्डन -
094520-62830 ○ आशुतोष कुमार श्रीवास्तव - 098391-97649
○ कर्णेश चन्द्र - 098380-85849 ○ विजय सिंह पिंकू - 094578-
23850 ○ हैदरगढ़ बाराबंकी: रामेश्वर गुप्ता - 094151-92922
○ रायबरेली: जगदम्बा सिंह - 098383-90535 ○ मोहन लाल
वर्मा - 094157-22805 ○ जी.एस. मिश्रा - 0535-2702927
○ राजबहादुर यादव ○ जगत नारायण श्रीवास्तव ○ ओम प्रकाश
वर्मा - 093550-96023 ○ ऊषा वर्मा - 0535-2565751 ○ पुतन लाल
- 094510-75250 ○ माधुरी शर्मा - 0535-2201731 ○ श्रीमती लीला
मिश्रा - 0535-220098761 ○ कानपुर: डॉ. प्रमोद सचान - 098396-
87351 ○ श्रीमती डॉ. नलिनी शुक्ला - 093361-07234 ○ विभा
मिश्रा ○ श्रीमती प्रमोद यादव - 099354-28640 ○ महेन्द्र सिंह
यादव - 094502-27356 ○ नवजीत शर्मा - 098398-08369
○ औरैया: गोकर्ण सिंह - 094127-05845 ○ श्याम सिंह अमराहट
- 091205-2389 ○ नरेन्द्र यादव - 094118-68089 ○ प्रतापगढ़:
रामआसरे मिश्रा - 098382-313557 ○ इलाहाबाद: महेन्द्र प्रसाद
शर्मा - 092365-66322 ○ घनश्याम दुबे - 099350-78481 ○ दिनेश
कुमार - 099352-29652 ○ ओम प्रकाश पाण्डेय - 090053-07769
○ फरुखाबाद: लक्ष्मण प्रसाद - 093354-65382 ○ कायमगंज:
प्रदीप कुमार भारद्वाज - 094118-48222 ○ सुधीर भारद्वाज
○ हरिओम भारद्वाज - 094519-70256 ○ शाहजहां: वी.के.भाई
जी - 093355-11908 ○ रामकृष्ण निखिल - 0584-2228381 ○ प्रमोद
मिश्रा - 094504-19586 ○ शक्ति प्रताद सिंह - 094127-36953
○ अजय बाबू सक्सेना - 0584-2230671 ○ अजय शुक्ला
○ लखीमपुर: राम कुमार रम्तोगी - 093353-58238 ○ अनिल
गुप्ता - 093369-47800 ○ प्रेम शंकर कश्यप - 098331-0548
○ सीतापुर: राम सिंह राठौर - 094517-67370 ○ के.के.निखिल
- 099356-59468 ○ मुरादाबाद: श्रीमती कुसुम लता यादव -
094123-91288 ○ आर.के.गुप्ता - 0591-2410240 ○ योगेश पाण्डेय
- 094122-48254 ○ मनोज विश्नोई - 092590-21177 ○ रामनगर:
कैलाश सिंह - 094505-88833 ○ अशोक शुक्ला - 094572-21880
○ अक्षय लाल यादव ○ फैजाबाद: अलख पाण्डेय - 097951-
00358 ○ अशीष मौर्य - 093367-05965 ○ ईश्वर प्रसाद सिंह -
097930-15185 ○ बाबूलाल ट्रेलर्स - 093364-69815 ○ अशोक
कुमार यादव - 094528-52111 ○ अंजनी सिंह ○ लालमणि
○ ए.टी.पी.सी. टाण्डा ○ दोहरी घाट: राजकुमार - 093360-
10419 ○ मोती चौहान - 099359-08437 ○ दया शंकर तिवारी -
093055-26860 ○ बस्ती: विद्यासागर - 098384-51433 ○ दिनेश

चन्द्र पाण्डे - 099185-04677 ○ प्रकाश - 099839-552852 ○ मनोज
प्रजापति - 099188-22625 ○ राम भवन चौधरी - 098382-6003
○ हरि शंकर मिश्रा - 098386-57887 ○ देवेन्द्र यादव - 098892-
72958 ○ बड़हल गंज गोरखपुर: रिंगू तिवारी - 099363-52661
○ सुपीत राय - 099567-63778 ○ वाराणसी: दीनानाथ यादव -
094541-61021 ○ मदन मोहन श्रीवास्तव - 094153-93636 ○ हरि
नारायण सिंह बिसेन - 098390-58363 ○ बरेली: एस.पी.सिंह -
094125-10771 ○ श्रीमती कमला मालिक - 097619-84527
○ दीपक पाठक - 094128-99568 ○ आजमगढ़: राजेन्द्र सिंह -
094500-28622 ○ सुदीप - 093051-67578 ○

◆◆◆◆◆◆◆◆◆◆◆
10-11 मई 2009
गुरुमय शिव शति साधना शिविर, पालमपुर
शिविर : शहीद कैप्टन विक्रम बत्रा मैदान,
पालमपुर, कांगड़ा (हि.प्र.)

गुरुमय शिव शति साधना शिविर, पालमपुर

शिविर : शहीद कैप्टन विक्रम बत्रा मैदान,
पालमपुर, कांगड़ा (हि.प्र.)

आयोजक: हिमाचल प्रदेश सिद्धाश्रम साधक परिवार

○**पालमपुर:** आर.एस.मिन्हास - 094181-61585 ○**संजय**
सूद - 098160-05757 ○**शशी संगराय** - 094180-32672

○**राजेश कुमार** - 094183-75385 ○**ओंकार राणा** ○**राजीव**
महाजन - 094180-30815 ○**सुरेन्द्र सूद** - 094180-32002

○**ओम प्रकाश** - 094181-86190 ○**सुभाष** ○**नगरोटा सूरियां**:
ओमप्रकाश शर्मा - 094182-50674 ○**जगजीत पठानिया** -
094180-22820 ○**कुशल गुलेरिया** - 01893-265184 ○**कांगड़ा:**
राजीव - 098161-17888 ○**अशोक कुमार** - 01892-267407

○**सुनील नाग** - 098053-56994 ○**नूरपुर:** **पीताम्बर** -
098164-01186 ○**नरेश शर्मा** - 094181-52967 ○**धर्मशाला:**
संध्या - 098161-84327 ○**चौंतड़ा:** **रोशनलाल** - 094182-
00521 ○**संजीव** - 098171-17954 ○**घुमारवी:** **जगरनाथ**
नड़ा - 094182-55835 ○**शिव कुमार** - 094181-14916

○**हेमलता कौण्डल** - 098053-48006 ○**शिमला:** **तुलसी राम**
कौण्डल - 0177-2623318 ○**सुरेन्द्र कंवर** - 094180-25976

○**चमन लाल** - 094180-40507 ○**मण्डी:** **के.डी.शर्मा** -
094180-65655 ○**शैलेन्द्र शैली-** 098166-11050 ○**महिन्द्र**
लाल गुप्ता - 094180-43420 ○**बंशी राम ठाकुर** - 01905-
242544 ○**बिलासपुर:** **शेखर अग्रवाल** - 094180-00234

○**जीवनलता** - 094180-46465 ○**ऊना:** **अमरजीत** - 01975-
225022 ○**नीतिन** - 093187-84840 ○**हमीरपुर:** **राजेन्द्र**
शर्मा - 094181-03439 ○**गगन** - 094184-25421 ○**चम्बा:**
अगोध्या - 094181-80707 ○

• • • • • • • • • • • • • • •

21-22 ਮਈ 2009

शिव शति महालक्ष्मी साधना शिविर, बैतूल

शिविर स्थल : न्यू बैतूल हायर सैकण्डरी ग्राउण्ड,
कोठी बाजार, थाने के पास, बैतूल (म.प्र.)

आयोजक: बैतूल (07141): प्रशांत गर्ग - 094250-03036

○आर.सी.मिश्रा - 232341 ○राजू खण्डेलवाल - 094250-02638 ○मनोज अग्रवाल - 096694-32694 ○जनकलाल मवासे

- 094253-61761 ○ आई.डी.कुमारे - 094250-04226
○प्पा.एल.धर्में - 099931-55686 ○बी.प्पा.संकट - 098935-

75765 ○ बलदेव दवन्डे - 099267-98495 ○ पी.आर.सोनारे -
099267-98495 ○ अंतर्राष्ट्रीय नं. 099267-98495

291900 ○ जनक प्रसाद ठक्कर - 232291 ○ संजय माटाया -
094256-57090 ○ कैलाश सोनी - ○ राकेश कोकाश - 099264-

53756 ○राजू झरबड़ - 098939-19302 ○रता धुव ○दवा
प्रसाद राठौड़ - 099933-70496 ○अनिल राठौड़ - 291025

○सोनूलाल वरकडे - 098937-92926 ○राजश्री मरकाम -
099931-55462 ○आई.एल.डोगरे ○गुलाब कोडोपे ठेकेदार -

093295-19159 ○ शिवपाल सिंह राजपूत - 094250-03292
○ शैलेन्द्र भावसार - 094065-24324 ○ एम एल मालवीय -

099939-69453 ○ निश्चल कमाविसदार - 090982-88938
○ अंतर्राज ग्रन्ति-दाता ○ आपान्तः संतोष कृतदाता - 098933

અંગે રાખ પણ્ઠાં અંગેલાં. સત્તાં કન્દિકાર - 096955-
45081 O ઉદ્યમાલવિય - 094256-58497 O અશોક નાવંગે -

093296-59556 ○ रुक्षा धाट - 098266-45404 ○ रमेश दागर
- 093291-53201 ○ भैंसदेही (07143): निखिल बामते - 099263-

28193 ओराजू वठी - 093021-01535 ओखड़गले बाबूजा - 283264
ओसंतोष मालवीय - 094218-28233 ओमीमसेन भलावी - 293397

○ बिहारी लाल सूर्यवंशी - 223174 ○ अमरसिंह परते
 ○ एस.आर.उडके - 231473 ○ अनुप डोंगरे - 094244-22684

○ गणेश जावलकर - 243069 ○ सूरजलाल जावलकर
○ सहेबताल कास्के ○ प्याल लिखितकर - 094244-31447

○चिचौली: राकेश राठौर - 099933-94761 ○इमरतलाल कास्दे
○त्रिपुरा बाबू: ○अशोक अर्पण पात्रानन्द शर्मा ○पात्रानन्द

अखडे ०मिलापसिंह वटके ०ललित शर्मा - 099939-55906

०नाता शमा ०मूलताइ (07147): यू.आर.उइक - 094243-
56471 ०सी.एल.मरकाम - 297565 ०सरदार निर्मलसिंह -

224333 ○मनीष परमार - 224577 ○विक्रम सिंह सिसोदिया
- 094244-03521 ○संजय इवनाते - 094243-56471 ○भीमपूरः

सुनिता उडके - 07142-247539 ○ सुखदेव बामने - 094244-
90694 ○ अमरसा डरपांचे ○ सोमलाल वरकडे ○ घोडा डोंगरी:

नरेन्द्र मेहतो - 07146-290944 ○ आर.डी.मरकम ○ श्यामराव
तंत्र-यंत्र विज्ञान '85' *

वाघमारे - 094244-22542 ○ सारनी (07146): शिवकुमार धाडसे कुमार कर्ण - 98030-52159 ○ अनिल अयल - 98510-37109
 - 099771-44027 ○ एस.आर.पड़लक - 094244-30737 ○ राजेश ○ शालिकराम पोखरेल - 97411-35055 ○ जयन्ती लामा - 1-
 रजने - 094256-70702 ○ जयदेव साहू ○ एम.एस.धूर्वे - 094254-5523767 ○ विष्णु प्रसाद न्यौपाने - 00-977-98510-6187/98038-
 83810 ○ जयराम झरबडे - 098269-40810 ○ एस.आर.कवड़कर 64264 ○ ध्रुवलाल राजबंशी - 98020-20088 ○ रामकृष्ण कायस्थ
 - 099933-36850 ○ कार्तिक जगदेव - 093090-02670 - 1-4242468 ○ कुल बहादुर श्रेष्ठ - 1-5522537 ○ अनिल
 ○ विजयलाल परते - 099263-71429 ○ भिऊ भादे - 251305 अधिकारी - 98510-77948 ○ शम्भू ज्ञावाली - 98417-62120
 ○ सुन्दरसिंह ठाकुर - 271791 ○ घनश्याम मालवीय - 270879 ○ चैतन्य प्रधान - 98418-86212 ○ केदार प्रधान तथा आश्रम
 ○ अर्जुनसिंह उड़िके - 251317 ○ प्रभातपट्टन: उदयराम - 98413-86504 ○ वैकुण्ठ मुल्मी - 98510-40339 ○ नारायण
 लॉजीवार ○ ठाकुर नागवंशी ○ शंकरलाल मालवीय सिंह कार्की - 98416-66449 ○ भ्रमण श्रेष्ठ - 98510-57097
 ○ डॉ.एस.के. सोनी ○ डागा नागवंशी ○ शाहपूर (07146): धन्नूसिंह धूर्वे ○ रतन वरकडे ○ शंकरलाल जीतपुरे - 099261-
 37344 ○ महेन्द्र मवासे - 094250-02564 ○ संजय खरे - 098275-44085 ○ आठनेर (07144): नैकराम राठौर - 099930-22098
 ○ रमेश पाटनकर - 286758 ○ कमलाकर धाडसे - 286685 ○ अमित जीतपुरे - 286453 ○ फी.एन. दवडे - 286307 ○ प्रदीप
 झोड - 094244-16189 ○ चन्द्रु बारस्कर - 097537-66340 ○ होशंगाबाद (07574): सरनाम सिंह ठाकुर - 200271 ○ सुरेश
 धूर्वे - 255278 ○ बही.के.झारीया - 07791-255789 ○ भोपाल (0755): आर. एन.वर्मा - 093031-08299 ○ राजेश पंवार -
 2752538 ○ आई. एम.पदाम - 99939-52682 ○ विदिशा: एन.के.श्रीवास्तव - 094251-49852 ○ वी.पी.दुबे - 0759-236052
 ○ खण्डवा: रणजीतसिंह यादव ○ परतवाडा: गणेश मवासे - 098904-13245 ○ केवलराम काडे - 094221-28340 ○ राजेन्द्र
 चाणक्य ○ इन्दौर: प्रेम सूर्यवंशी - 098260-37244 ○ कुलदीप सिंह - 094250-57411 ○ बी.के. सिंह - 094246-76326
 ○ शिवचरण - 092295-73185 ○ नागपुर: निशांत पाटिल - 094221-19917 ○ डॉ. संजय मालवीय - 098224-30326 ○ कट्टनी:
 सुशील विश्वकर्मा - 096276-28085 ○ राकेश श्रीवास्तव - 093295-11849 ○ रामसिया गुप्ता - 093013-12793 ○ विष्णु बालक
 कुशवाहा - 098266-73662 ○ छिन्दवाडा: आर.एन. गडवाल (इंजी.) - 093009-57618 ○ परासिया: प्रदीप राय - 099770-
 44744 ○ नरसिंहपुर: रतनेश शर्मा - 094244-31513 ○

♦♦ ♦♦ ♦ ♦♦ ♦♦♦ ♦♦ ♦ ♦♦♦

30-31 मई 2009

तिथिगिल साधना शिविर, काठमाण्डू, नेपाल

शिविर : बानकली धर्मशाला, पशुपति छेत्रा,
गौशाल, काठमाण्डू, नेपाल

आयोजक: काठमाण्डू (00-977): गोविन्द प्रसाद - 98414-
 23022/1-4009502 ○ छत्र खतिवडा - 98510-77082 ○ राम कुमार
 कोईराला - 98416-80784 ○ दामोदर सुवेदी - 1-4221170 ○ नरेश

कुमार कर्ण - 98030-52159 ○ अनिल अयल - 98510-37109
 ○ शालिकराम पोखरेल - 97411-35055 ○ जयन्ती लामा - 1-
 5523767 ○ विष्णु प्रसाद न्यौपाने - 00-977-98510-6187/98038-
 64264 ○ ध्रुवलाल राजबंशी - 98020-20088 ○ रामकृष्ण कायस्थ
 - 1-4242468 ○ कुल बहादुर श्रेष्ठ - 1-5522537 ○ अनिल
 अधिकारी - 98510-77948 ○ शम्भू ज्ञावाली - 98417-62120
 ○ चैतन्य प्रधान - 98418-86212 ○ केदार प्रधान तथा आश्रम
 - 98413-86504 ○ वैकुण्ठ मुल्मी - 98510-40339 ○ नारायण
 सिंह कार्की - 98416-66449 ○ भ्रमण श्रेष्ठ - 98510-57097
 ○ शान्ति श्रेष्ठ - 1-4416107 ○ भिष्म न्यौपाने ○ ज्ञानु बस्नेत
 ○ बासु गुरागाई ○ भरत भुर्तेल ○ बेद प्रकाश घिमिरे ○ श्यामा
 अडिगा ○ शिव ढकाल ○ गोपी कृष्ण कोईराला ○ शुकदेव
 न्यौपाने ○ प्रथम लाल चौधरी ○ वसुधा खतिवडा ○ माला
 न्यौपाने ○ मीना राई ○ गोमा पाण्डे ○ सालिक राम थापा क्षेत्री
 ○ सीमा अर्याल ○ विश्व कुमार गोखाली ○ ध्रुव लाल पकवान
 ○ सुशिला श्रेष्ठ ○ सुशिल ढकाल ○ राजेन्द्र गिरी
 ○ डी.आर.खनाल ○ वसन्त वाङ्ले ○ विश्वराज सुवेदी ○ पूर्ण
 बहादुर थापा ○ धन देवी महर्जन ○ श्याम लाल माझी ○ गंगा
 श्रेष्ठ ○ गोपाल प्रसाद आचार्य ○ चक्र राज तामाङ्ग ○ सुद्य
 पौड़याल ○ भास्कर गौतम ○ रञ्जु सुवेदी ○ किमत लाल
 बज्जाचार्य ○ राधाकृष्ण श्रेष्ठ ○ किशोर श्रेष्ठ ○ भगवती थापा
 ○ शिव हरी चक्रधर ○ अनिता श्रेष्ठ ○ विजया श्रेष्ठ ○ बाबू
 काजी ○ मैयां डंगोल ○ किरण देव आचार्य ○ गोविन्द केसी
 ○ मृगेन्द्र भुर्तेल ○ माधव बुढाथोकी ○ चुदामणि घिमिरे ○ संतोष
 दास ○ राम सेवक शाह ○ बिराटनगर: विशाल पाण्डे - 98540-
 23325 ○ शिला शर्मा ○ बाबुराजा निरौला ○ सारदा संग्रहालय
 ○ बीरगंज: दीपक राज उपाध्याय - 98450-30325 ○ जयन्ती
 मानन्धर ○ सप्तरी: रामलखन शर्मा - 98510-65709 ○ पाल्पा:
 फूलगेन नायक - 98470-29273 ○ जोग रत्न तुलाधर ○ ऋषि
 राम ज्ञावाली ○ हेम दहाल ○ यू.एस.ए: अच्यूत श्रेष्ठ - 98414-
 83848 ○ नारायणघाट: राजु दहाल ○ संजु नेवा ○ मुक्तिनाथ
 गौतम ○ पावर्ती गुरुङ ○ बिर्ख बहादुर थापा ○ लक्ष्मी दवाडी
 ○ ज्ञानकुमारी पत्न ○ देवेश कुमार श्रेष्ठ ○ तारा पिया ○ रूप
 श्रेष्ठ ○ बुटवल: माधुरी पौड़याल ○ संजिवना आचार्य ○ ठाकुर
 प्रसाद अयार्ल ○ ज्ञानेश्वर बजिमय ○ धनि राम चौधरी ○ डॉ.
 यस.के.धिताल ○ गोमान सिंह ○ निलम शाही ○ सर्लाही: मनोज
 ठाकुर ○ जनकपूर: कामेश्वर लाल दास ○ ब्रज किशोर दास
 ○ सुनचन यादव ○ चितवन: मिना आचार्य ○ रूपन्देहि: भुमा
 देवी पुन ○ ईटहरी: उमा गुरागाई ○ राजविराज: घनश्याम ○
 बजरंग ○ हेटीडा: सुभद्रा पवार ○ काम्भे: तिलक अधिकारी ○

पूज्य गुरुदेव डॉ. नारायण दत्त श्रीमाली जी की दिव्य वाणी में प्रवचनों का संकलन

विभिन्न साधनाएं/प्रयोग

लक्ष्मी आबद्ध प्रयोग (३ भागों में)

पाशुपतास्त्रेय प्रयोग (४ भाग में)

अणिमा सिद्धि

विशेष लामा मंत्र

ॐ मणि पद्मे हुं

महासरस्वती स्वरूप साधना

महाकाली स्वरूप साधना

महालक्ष्मी स्वरूप साधना

महालक्ष्मी साधना

विशेष दीपावली साधना

अक्षय पात्र साधना

स्वर्ण पात्र साधना

श्री लक्ष्मी साधना

लक्ष्मी सिद्धि (२ भाग)

वसंत पंचमी सरस्वती लक्ष्मी साधना

पारदेश्वरी लक्ष्मी प्रयोग

ऐं बीज साधना

लक्ष्मी मेरी चेरी

कुबेरपति शिवशक्ति साधना

षोडश अप्सरा साधना

स्वर्णदिहा अप्सरा साधना (२ भाग)

पुष्पदेहा अप्सरा साधना

गुरु प्राण स्थापन

गुरु प्रत्यक्ष सिद्धि

मां भगवती जगदम्बे शत् शत् वंदन

कायाकल्प साधना

चामुण्डा दीक्षा

सतोपंथी दीक्षा

राज्याभिषेक दीक्षा (५ भाग) दिल्ली

अमोघ साबर साधनाएं

विश्व की श्रेष्ठतम साधनाएं

मैं गर्भस्थ बालक को चेतना देता हूं (२ भाग)

राजयोग दीक्षा २ भाग

युद्ध देहि

महाकाल प्रयोग

काल ज्ञान प्रयोग

भूगर्भ सिद्धि प्रयोग

साबर धनदा प्रयोग

अनंग सिद्धि प्रयोग

साधनात्मकप्रयोग

दिल्ली गुरुद्याम

बगलामुखी प्रयोग

तारा महाविद्या प्रयोग

धूमावती प्रयोग

छि त्रमस्ता प्रयोग

महाकाली मातंगी प्रयोग

ऐश्वर्य महालक्ष्मी प्रयोग

स्वर्ण प्रिया लक्ष्मी प्रयोग

लक्ष्मी आबद्ध प्रयोग

सौभाग्य दायिनी लक्ष्मी प्रयोग

धनदा यक्षिणी प्रयोग

स्वर्ण देहा अप्सरा प्रयोग

नाभिर्दर्शना अप्सरा प्रयोग

षोडश योगिनी प्रयोग

सहस्र लोचनी महाविद्या प्रयोग

वीर वैताल प्रयोग

हनुमान साधना

विजय सिद्धि (आत्मबल सिद्धि)

काल भैरव प्रयोग

सम्मोहन एवं तृतीय नेत्र जागरण प्रयोग

गणपति एवं मनोकामना पूर्ति प्रयोग

गुरु हृदयस्थ धारण प्रयोग

रोग मुक्ति एवं प्रेमोत्सव अप्सरा प्रयोग

मनः शक्ति जागरण एवं भैरव भैरवी प्रयोग

रक्त कण-कण गुरु स्थापन प्रयोग

भजन संग्रह

गुरु गंगा

नारायण नारायण

भजन सौरभ

संगीत सरिता

प्रीत पायल

बाजे कण-कण में प्रेम बांसुरिया

जब उड़े प्रेम गुलाल

कान्हा

भजन प्रभात

भजन सागर

भजन कुछ कर ले

भजन मंच

गुरु महिमा

भजन दरबार

जब याद तुम्हारी आई

लाणी लगन दर्शन की

निखिलेश्वरम्

सदगुरुदेव

प्रेम नगर की बंजारन

उपनिषद्

दुर्लभोपनिषद्

कठोपनिषद्

शिष्योपनिषद्

आडियो कैसेट = 30/-
चैषावर प्रति

सम्पर्क :

, डॉ. श्रीमाली मार्ग, हाईकोर्ट कॉलोनी, जोधपुर - 342001, (राज.)



COLLECTION OF VARIOUS

- HINDUISM SCRIPTURES
- HINDU COMICS
- AYURVEDA
- MAGZINES

FIND ALL AT [HTTPS://DSC.GG/DHARMA](https://dsc.gg/dharma)

Made with



By

Avinash/Shashi

[creator of
hinduism
server]

माह : मई में दीक्षा के लिए निर्धारित विशेष दिवस

पूज्य गुरुदेव निम्न दिवसों पर साधकों से मिलेंगे
व दीक्षा प्रदान करेंगे। इच्छुक साधक निर्धारित दिवसों
पर पहुंच कर दीक्षा प्राप्त कर सकते हैं।
निर्धारित दिवसों पर यह दीक्षाएं प्रातः 11 से 1 बजे के
मध्य तथा सायं 5 बजे से 7.30 बजे के मध्य प्रदान की जाएंगी।

स्थान
गुरुधाम (जोधपुर)

दिनांक
01-02-03 मई

स्थान
गुरुधाम (जोधपुर)

दिनांक
14-15-16 मई

वर्ष - 29

अंक - 04

.. संपर्क ..

मंत्र-तंत्र-यंत्र विज्ञान डॉ. श्रीमालीमार्ग हाईकोर्ट कॉलोनी, जोधपुर-342031 राज. फोन : 0291-2432209, 2433623, टेलीफैक्स-0291-2432011
सिद्धाश्रम 306, कोहाट एन्कलेव पीतमपुरा, नई दिल्ली-34, फोन : 011-27352248, टेली फैक्स 11-27356700